लाइची

डॉ॰ उषा वर्मा

लाइची

(डॉ॰ श्रीमती) उषा वर्मा

लाइची

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

डॉ॰ उषा वर्मा

भोजपुरी संस्थान
मार्ग–3, इन्द्रपुरी, पटना–899924

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के तिहत्तरवाँ फूल
ग्रंथमाला-सम्पादक : पाण्डेय कपिल

लाइची

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

लेखक : (डॉ॰ श्रीमती) उषा वर्मा
प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800 024
प्राप्ति-स्थान : श्रीधरायण, मिशन रोड, दहियावाँ,
छपरा (बिहार) 841 301
सर्वाधिकार : (डॉ॰ श्रीमती) उषा वर्मा
संस्करण : प्रथम : 2002 ई॰
मूल्य : पचास रुपये मात्र ।
अक्षर-संयोजक : अनुकृति
एस. पी. सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड
पटना-800 001
मुद्रक : न्यू प्रिंटलाइन प्रेस
गाँधीनगर, पटना-800 001

LAICHI

A collection of short stories written in Bhojpuri

by

Dr. Mrs. Usha Verma

Price : Rs. 50/- only

www.bhojpurisahityangan.com

समर्पण

अपना पूज्य बाबूजी

स्व॰ श्रीधर शरण वर्मा

के कबहूँ ना बिसरे वाला इयाद के

सादर निवेदित

उषा वर्मा

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

आपन बात/9
आमुख : पाण्डेय कपिल/10
भूमिका : डॉ. शम्भुशरण/11

लाइची/33
दुलार/36
बखरा/39
रकत सेनुर/42
फगुआ/45
काकी के गहना/50
दवाई के पुरजा/55
अँजोर/58
राधा/62
धाम/69
काई/74

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ॰ उषा वर्मा

विश्वविद्यालय आचार्य एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा
राजेन्द्र कालेज परिसर

जन्म : 27 नवम्बर 1946, ग्राम: महमूदपुर, प्रखण्ड: बड़हरिया, जिला: सीवान

पिता : स्व॰ श्रीधर शरण वर्मा
पूर्व प्रधानाध्यापक, सारण एकडेमी, छपरा

माता : श्रीमती सूर्यमूखी देवी

पति : डॉ॰ हरेन्द्र कुमार वर्मा
विश्वविद्यालय आचार्य, स्नातकोत्तर वनस्पति विज्ञान विभाग
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (राजेन्द्र कालेज परिसर)

स्थायी पता : 'श्रीधरायण', प्रोफेसर कॉलोनी, मिशन रोड,
दहियाँवा, छपरा - 841301
फोन - 06152 - 22621
ई मेल : usha_haren@radiffmail.com

शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा गृहकुल में । माध्यमिक परीक्षा स्वतंत्र छात्रा के रूप में जिला स्कूल छपरा से । आई॰ ए॰ तथा बी॰ ए॰ (हिन्दी प्रतिष्ठा) जयप्रकाश महिला कालेज, छपरा से । एम॰ ए॰ (हिन्दी) 1965 तथा बी॰ एड॰ 1966 पटना विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में । पटना विश्वविद्यालय से ही 1974 में डॉ॰ कुमार विमल के निदेशन में 'पंत की काव्य चेतना का विकास' नामक शोध प्रबंध पर पी-एच॰ डी॰ की उपाधि प्राप्त ।

शिक्षण : मोतिहारी स्थित डॉ॰ श्रीकृष्ण सिन्हा महिला कालेज के हिन्दी विभाग में व्याख्याता के पद पर बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग की अनुशंसा पर 16 नवम्बर 1967 से फरवरी 1978 तक । स्वेच्छा से स्थानान्तरित होकर जगदम कॉलेज, छपरा के हिन्दी विभाग में 26 अगस्त 1997 तक । पुन: स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग (राजेन्द्र कॉलेज परिसर) में 27 अगस्त 1995 से । सम्प्रति विश्वविद्यालय आचार्य एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) के पद पर कार्यरत ।

www.bhojpurisahityangan.com

शोध : अनेक छात्र-छात्राओं को पी-एच॰ डी॰ की उपाधि के लिए शोध निदेशन । इनमें से कुछ को पी-एच॰ डी॰ की उपाधि प्राप्त ।

प्रकाशन : (क) हिन्दी :

1. आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा : समष्टिमय व्यक्तित्व (सम्पादन - डॉ॰ विद्या निवास मिश्र - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-1993) में सह लेखिका ।
2. डॉ॰ कुमारे : व्यक्तित्व और कर्तृत्व (सम्पादन : रंजना शशिप्रभा, डॉ॰ प्रतिभा प्रियदर्शिनी, सद्विचार प्रकाशन, गुड़गाँव - 2001) में सह-लेखिका ।
3. 27 लेखों का संग्रह - 'अंकुर' - प्रेसस्थ
4. रामकृष्ण मिशन आश्रम पटना की स्मारिका में प्रकाशित रचनाएँ -
   (क) कुंती : Mahabharat; Some of its characters-1988
   (ख) भारतीय संस्कृति और महाभारत : Mahabharat Its influences on Indian Life and culture -1989
5. इसके अतिरिक्त छपरा से प्रकाशित राम कृष्ण विवेकानन्द भावधारा की प्रमुख मासिकी 'विवेक शिक्षा' में अनेक रचनाएँ, रोटरी मंडल 3250 की स्मारिका 1995, प्रणेता परिवेश (मुजफ्फरपुर), नव भारत टाइम्स (पटना), आज हिन्दी दैनिक (पटना) आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर लेख प्रकाशित ।
6. सम्पादन : जगदम कॉलेज छपरा की पत्रिका 'मनीषा', राजेन्द्र कॉलेज छपरा की पत्रिका 'राका', सत्यम् वाणी (छपरा) तथा अनेक स्मारिकाओं का संपादन ।

(ख) भोजपुरी

1. 'एक पर एक' (सम्पादक डॉ॰ धीरेन्द्र बहादुर चाँद) भोजपुरी काव्य संकलन में सह-लेखिका ।
2. 'बगिया में बोले कोइलिया' (निबंध संग्रह) - भास्कर साहित्य भारती, सीवान - में सह-लेखिका ।
3. 'भोजपुरी के चुनिंदा हाइकु' - अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना (1995) में सह लेखिका ।
4. भोजपुरी फिल्म - 'सईयाँ हमार' नामक भोजपुरी फिल्म (मोहनजी कृत) में संवाद लेखन ।
5. 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' (पटना), 'भोजपुरी माटी' (कलकत्ता), पूर्व गंधा (आसाम), आदि पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख, समीक्षा और कविता समय-समय पर प्रकाशित ।
6. आकाशवाणी पटना के 'आरती' क्रार्यक्रम (भोजपुरी) और हिन्दी में अनेक कहानी, कविता और वार्ता प्रसारित ।

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

'लाइची' के नाँव से अपना एगारह गो कहानियन के ई संग्रह अपने के सामने परोसत में खुशी हो रहल बा ।

बिखरल पन्नन के किताब के बाना पहिरावे के पूरा श्रेय श्रद्धेय पाण्डेय कपिल जी के बा । हाथ में कलम धरा के लिखवा लेबे, लेखक के सूची में नाँव दर्ज करवा देबे आ पाठक के संस्कार से संस्कारित करे में इहाँ के गजब के महारथ हासिल बा । 'लाइची' इहाँ के ओही महारथ के नतीजा ह ।

संग्रह के पहिलका संस्मरणात्मक कहानी के महिला पात्र के नाँव लाइची बा । ओह लाइची क़े खुशबू आजो हमरा जेहन में ओसहीं बा, जइसे तीन दशक पहिले रहे । एही से संग्रह के नाँव 'लाइची' रखाइल बा । हमरा जेहन के खुशबू 'लाइची' कहानी में केतना उतरल बा आ ओकरा संघतिया रचनन के का दशा-दिशा बा, ई कहे के काम हमार ना ह । जेकर ह, से कहबे करी – एतना भरोसा बा । हम त अतने से निहाल बानी कि 'लाइची' रउरा घरे पहुँच गइल ।

श्रीधरायण, प्रोफेसर कॉलोनी
मिशन रोड, दहियावाँ
छपरा-841004

–उषा वर्मा

www.bhojpurisahityangan.com

आमुख

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के तिहत्तरवाँ ग्रंथ-पुष्प का रूप में उषा वर्मा के कहानी-संग्रह 'लाइची' के पिरोवत हमरा हार्दिक सुख के अनुभूति हो रहल बा । मध्य आ निम्नमध्य वर्ग के आर्थिक, सामाजिक आ पारिवारिक तनाव आउर ओकरा चलते अन्तरवैयक्तिक सम्बन्धन के उलझाव के कलात्मक, मनोवैज्ञानिक आ संवेदना से भरल मार्मिक प्रस्तुति उषा वर्मा के एह कहानियन के विशेषता रहल बा । आउर कहानियन से तनी अलगा हट के एह संग्रह में एगो ऐतिहासिक कहानी बा 'रकत सेनुर' जेकर भावनात्मक उत्कर्ष हृदय के हिला के रख देता । कथा-रचना के उनकर आपन भाषा, शिल्प आ शैली बा, जेकरा में मरम के छुए के असीम ताकत बा, आ जे उनका के अपना समसामयिक भोजपुरी कथाकारन से अलग करत बा ।

हम आभारी बानी डॉ. शम्भुशरण के जे विस्तृत भूमिका लिख के एह संग्रह के कहानियन के सम्यक् विवेचन प्रस्तुत कइले बाड़े ।

'लाइची' के प्रकाशन पर कथाकार उर्षा वर्मा के हार्दिक बधाई देत हम कामना करत बानी कि उनका कलम से भोजपुरी के कथा-साहित्य, गुण आ परिमाण दूनू दृष्टियन से, निरन्तर समृद्ध होत रहे ।

—पाण्डेय कपिल
सम्पादक, भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला
अध्यक्ष, भोजपुरी संस्थान

मार्ग-3, इन्द्रपुरी,
पटना-800024
दूरभाष : 0612-275017
31 जुलाई 2002

www.bhojpurisahityangan.com

भूमिका

भोजपुरी के बहुचर्चित आ लोकप्रिय कहानीकार उषा वर्मा के एगारह कहानियन के संग्रह ह 'लाइची' । कहानीकार 'आपन बात' में लिखले बाड़ी– "संग्रह के पहिलका संस्मरणात्मक कहानी के महिला पात्र के नाँव लाइची बा । ओह लाइची के खुशबू आजो हमरा जेहन में ओसहीं बा जइसे तीन दशक पहिले रहे । एही से एह संग्रह के नाँव 'लाइची' रखाइल बा ।" एह संग्रह के एगारहो कहानियन के वस्तु भोजपुरिया क्षेत्र के सारन आ चम्पारन के मध्यवर्ग से सम्बधित बा जवना के अनिवार्य अंग ओहिजा के निम्नवर्ग भी ह । एसे एह कहानियन में सारन आ चम्पारन के मध्य आ निम्नवर्ग के जीवन-शैली, चरित्र, संस्कृति, आर्थिक बदहाली आ तनाव, वर्गीय आ अंतरवर्गीय सम्बन्ध आ भारतीय स्वतंत्रता-संघर्ष का साथ-साथ हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के लड़ाई में छपरा जिला के योगदान के प्रामाणिक अलबम देखल जा सकऽता । अतने ना, आज के युवकन के बेकारी, खासकर के वित्तरहित कॉलेजन में नियुक्तियन में धाँधली आ भ्रष्टाचार, ओहिजा के लेक्चररन के शोषण आ ओह से उपजल पारिवारिक सम्बन्धन पर पड़त दुष्प्रभाव, दाइअन के समस्या, शहीद लोग के पत्नियन आ परिवारन के आज के सरकारन द्वारा उपेक्षा, पुलिसिया जुलुम आ भ्रष्टाचार, तथाकथित ब्राह्मण के प्रति विरोध, स्त्री अधिकार, नारी सशक्तीकरण आ भोजपुरिया जीवन में विज्ञान के प्रवेश के तस्वीर भी उषा वर्मा उरेहले बाड़ी । 'फगुआ' के प्रकाश के प्रकाश छपरा के लाँघ जाता आ 'दवाई के पुरजा' के फड़फड़ाहट गंगा-गंडक के आर-पार ले सुनाई पड़ऽता ।

'लाइची' में उषा वर्मा स्थायी भाव वात्सल्य के देश-काल-निरपेक्षता के चर्चा करत ओकर वर्ग-निरपेक्षता के ओर भी संकेत कर देले बाड़ी, बलुक एगो देखल बाकिर आज तलक अनदेखल कइल सत्य के भी रेखांकित करत बाड़ी– "कन्हाई जइसन पूत के जसोदा जइसन माई त केहू हो सकेला । बाकिर बड़का जइसन पूत के लाइची जइसन माई बने खातिर माई के खाँट करेज चाहीं ।" लाइची में माईवाला ई खाँट करेज दू जगह उभरल बा– पहिल बेर तब जब "छोटका एको साल के ना भइल रहे कि ओकर बाप गुजर गइलन । जे केहू दोसर बिआह के सलाह दिहलस, लाइची झाड़ू से ओकर बोखार झाड़े के तइयार हो गइली ।" दोसरका मोका तब आवऽता जब बड़का के नाँव थाना के रजिस्टर में

www.bhojpurisahityangan.com

स्थायी रूप से बी. सी. में आवो भा ना, ओकरा साथ थाना के सिपाहिअन के बेवहार ओइसने होखे लागत बा आ हर महीने लाइची के दस रुपया के जोगाड़ करके सिपाहिअन के थम्हावे परऽता । एक बेर जब उर्षा वर्मा उबिया के लाइची से कहऽतारी– "जाय द थाना । जब लात-जूता पड़ी त ओकर दिमाग ठीक हो जाई" तब रुपया खातिर घिघियात लाइची कहऽतारी– "दीदीजी, हम माई नू बानीं ।" उनकर ई कथन वात्सल्य भाव के ऊ रिहल ह जवना पर सूरसागर के हर पन्ना अपने आप खुले लागऽता । एही वात्सल्य के प्रसुप्त रूप के शक्ति 'काकी के गहना' में भी लउकऽता जब अपना नइहर में पड़ल काकी अपना जाउत के ओर से लिखल चिट्ठी पाके ओकरा 'काकी' पद पर धधा उठत बाड़ी आ सभका से ओह चिट्ठी के देखावत-पढ़ावत आ अपनहूँ बेर-बेर पढ़त कहत चलत बाड़ी कि जब जाउत बोलवले बाड़न अपना जनेव में त हम जरूर जाइब, जइबे करब ।

'दुलार' में निम्नमध्यवर्गीय एक लड़की के कहानी बा जवना के बिआह गलती से एगो अइसन लड़िका से हो जाता जवना के बिआह पहिलहीं हो चुकल बा । भौतिक जगत् खातिर ई देशकाल-निरपेक्ष सत्य बा कि औरतन खातिर सब कुछ सह्य हो सकेला बाकिर सउतिन ना । ओह लड़की (बड़की दीदी) के पक्का निर्णय पर कि ऊ अब ससुरा में नइखे रह सकत, कलकत्ता से ओकर बाप आके ओकरा के अपना घरे ले आवऽता । एह अप्रत्याशित घटना पर घर के सभे चकचिहा जाता बाकिर सचाई समझते सभे आपन-आपन सहानुभूति के बरखा ओकरा पर करे लागता । बिआह के एह दुर्घटना से ईया, बाबूजी, भाई आ बहिन के करेजा त टूटिए जाता, बड़की दीदी के बेवहार भी 'हिस्टेरिक' हो जाता । उनकर एह असामान्य बेवहार से एगो पचखी तब फूटऽता जब उनकर छोटकी बहिन शिवरानी के बिआह ठीक होखे लागऽता । पहिले त दीदी हर ठीक होत बिआह में कुछ ना कुछ खोट निकाल के खाली ओकर बिआहे काटे के काम करत बाड़ी बाकिर दूध के जरल मट्ठा फूँक-फूँक के पीएवाला उनकर बाप जब शिवरानी के बिआह तय कर देत बाड़न तब स्नेह से ईर्षा में परिवर्तित उनकर ईर्षा फेनु अपना स्नेह में बदल जाता आ शिवरानी के बिआह में ऊ 'फेंटा कस के' काम करत बाड़ी । बाकिर अपना छोट बहिन के बिआह सुखी घर में आ सफल भइला से उनकर ईर्षा अब डाढ़ हो जाता । बड़की दीदी के ईर्षा के धूल-धुक्कड़ भरल तूफान में ई डाढ़ तब झूमे लागता जब शिवरानी के दोंगा के मोका पर बिदाई करावत ओकर दुलहा सब बड़-जेठ के पवलगी करत चलऽता– "पाहुन के जाये

www.bhojpurisahityangan.com

के बेरा दीदी अपना कोठरी में समा गइली । बाबूजी के गोड़लगी के बाद पाहुन दीदी के गोड़लगी खातिर उनकर कोठरी में गइलन । ..... दीदी फुसफुसा के पाहुन से बतिअवली ..... चरख एह घर के खानदानी बेमारी ह । माइयो के रहे ।" आ अतना सुनते शिवरानी के दाम्पत्य के बसल संसार उजड़ जाता । एह कहानी में धोखा के शिकार बनल लड़की के बिआह के दुष्परिणाम आ ओह से जनमल तरह-तरह के फसादन के तस्वीर उरेहल गइल बा आ ईर्षा के गति के विचित्रता के रेखांकित करत कोढ़ के प्रति लोकधारणा के व्यक्त कइल गइल बा । जवन दीदी अपना छोट बहिन शिवरानी के बिआह में फेंटा कसके काम करऽतारी, ऊहे दीदी ओकर सोहाग के उजाड़ियो देतारी । एह से सिद्ध हो जाता कि प्रेम आ घृणा भा ईर्षा एक सरल रेखा के दू गो अलग-अलग भाव बिन्दु हवन स आ उहनी में परस्पर आवाजाही आ अतंरालाप होत रहेला । स्नेह कब ईर्षा में बदल के अपना प्रकर्ष पर पहुँच जाई, एह बात के नइखे सोचल भा जानल जा सकत ।

'बखरा' में दू बेटावाला एगो अइसन निम्नमध्यवर्गीय वकील के व्यथाकथा बा जेकर बुढ़ापा में ओकर दूनों बेटा अलगा हो जातारन स । कहल जाला कि जेकरा एगो बेटा रहेला ऊ एह खातिर झँखत रहेला कि कम से कम दुइयो गो ओकरा बेटा रहित त ओकर भविष्य जादे सुरक्षित रहित । बाकिर एह कहानी में उलटा नजर आवता । कहाउतो बा– एक बेटा के माई ठकुरी, सात बेटा के माई कुकुरी । दूनों बेटा लोग आपन-आपन फायदा सोचत बँटवारा के समय बापो मतारी के बँटवारा कर लेता । एह अप्रत्याशित घटना से "कचहरी में बड़हन-बड़हन के बोलती बंद करेवाला वकील साहब के बोलती बंद हो गइल । लइकाइयें से आपन हाजिरजबाबी आ सूझ-बूझ खातिर 'अकिला' कहायेवाली वकिलाइन के अकिल हेरा गइल ।" घर के पहिला तल्ला छोटका मुरारी के मिलऽता । ओकर मेहरारू पुष्पा के मन घर के कामकाज में ना लागे । ऊ गप्प लड़ावत चलेवाली आ एने के बात ओने आ ओने के बात एने करत चलेवाली, पक्का झुट्ठी बुझात बिया । ऊ अपना कथनी आ करनी में एक नइखे । घर में दीया ना जरा के मंदिर में दिया जरावे में ओकर मन लागऽता । एसे मुरारी के समस्या घर के झाड़ू-पोंछा आ चउका-बरतन कइला के साथ खाना बनवावे के बा ।

बड़का भाई बिहारी के हिस्सा में घर के ग्राउण्ड फ्लोर मिलऽता । उनकर समस्या बा कि उनका लड़िकन के बइठ के घरे के पढावो, उनका खातिर खटाल भा बूथ से दूध के ले आवो आ उनकर इस्कुलिया बच्चन के घर से इस्कूल आ

www.bhojpurisahityangan.com

इस्कूल से घर के ले जावो ले आवो । एसे मतारी बाप के बँटवारा के समय मुरारी अपना माई के आ विहारी अपना बाबूजी के अपना-अपना हिस्सा में रख लेता । एह बात के खूब ठीक से सभे समझऽता, मुरारी के बेटो समझत बाड़न स । एह से आजे से ऊ पुष्पा के अपना हिस्सा में रखे खातिर वाक्युद्ध करत लउकत बाड़न स । छोटकी पतोह त अपना सास के दाइए समझत बिया । झाड़ू-पोंछा, चउका-बरतन करत, खाना बनावत आ चीज-बतुस सरिआवत-सँभारत वकिलाइन के रोज दस बज जाता आ तब ऊ चलऽतारी दतुअन करे । वकीलो साहेब के कम गंजन नइखे । आपन सब काम कइलो पर घंटन ऊ नाश्ता-खाना खातिर कुत्ता नीहन विहारी के चउका का ओर मुँह कइले बइठल लउकतारन । वकिलाइन के त ईहो अधिकार नइखे कि ऊ अपनो हिस्सा के खाएक अपना दुलहा के खिआ सकस । एक बेर ऊ सवकर आँख बचाके अइसन कइले रही त पुष्पा देख लेले रहे आ मुरारी से लुत्ती जोड़ देले रहे । मुरारी आग बबूला हो गइल रहन आ अपना मतारी के चेतवले रहन– "माई तू कान खोल के सुन ले । हमरा घर में ई ना चली कि तें चोरी करके बाबूजी के खिअइबे । बाबूजी बिहारी भइया के बखरा में बाड़न । उनकर हाल ऊ जानस । ..... तोर बखरा रहे त तोरा खाये खातिर, ना कि बाँटे खातिर । पइसा त हमरे नू लागल रहे ? पेट में जे खा ले । एक दाना घर से बाहर ना जाये के चाहीं । फेरू अइसन ना होखे । होई त देख लीहे । हमरा से खराब केहू ना होई ।" बाकिर वकील साहब के दुर्दशा जब वकिलाइन से ना देखल गइल त ऊ फेनु एक बेर आपन खाएक निकाल के उनका के खिआवे चलली कि पुष्पा के नजर उनका पर पड़ गइल आ ऊ झुझुआ के बोलल– "फेरू रउरा ई धंधा शुरू कर दिहनी ? कहाँ जात बा ई खाएक ?" वकिलाइन फ्रिज से निकालल आपन हिस्सा के खाएक चुपचाप फ्रिजे में रख देली । 'बखरा' में बेटा-पतोह के के कहो बाबा-दादी खातिर पोता-पोतियन के बेवहारो में बदलाव आ जाता– "बाबा के एक आवाज पर दउड़त आवेवाली पोती अब बगले से बात अनसुना करके चल जाले । बाबा के साथे हमेशा घूमे के तइआर पोता अब बोलबलो पर अनठिआ के निकल जाला ।"

'रकत सेनुर' भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में काम आइल एगो शहीद आ उनका पत्नी से जुड़ल चरित्र प्रधान मार्मिक आ ऐतिहासिक कहानी बा । महाराजगंज के सिअहुता गाँव के एगो लड़की तारादेवी श्रीवास्तव (तारा दीदी) के बिआह फुलेना बाबू नाँव के एगो देशभक्त सुंदर नवयुवक से हो जाता । गाँधी जी के सत्याग्रह आंदोलन से प्रभावित फुलेना बाबू आपन इण्टर के पढ़ाई बीचे में छोड़

www.bhojpurisahityangan.com

के स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़त बाड़न । एकरा खातिर ऊ अपना पत्नी तारा के भी ई कहके तइयार कर लेत बाड़न कि "तारा रानी, तूँ नारी जरूर हउअऽ, अबला ना हउअऽ-सबला आ बहादुर बाड़ू । ..... जेल के कुछ साथी लोग एह जोड़ी के देवकी-वासुदेव आ अंगरेज सरकार के कंस कहके आपस में बतिया लेव लोग । सुराज के लड़ाई में तन-मन से लागे खातिर ई दूनों बेकत देह से ऊपर उठके मन के मीत बन गइल ।" सोलह अगस्त उन्नीस सौ बेयालिस के दिन महाराजगंज थाना पर तिरंगा फहरावे आ ओकरा पर कब्जा करे में फुलेना बाबू अंगरेजन के गोलियन के शिकार हो गइलन । तारा उनकर लाश के अपना कोरा में लेके घंटन बइठल रह गइली । फुलेना बाबू के देह से छूटत खून के फव्वारा से तारा दीदी के साड़ी आ माँग रँगा गइल । पचीस बरिस के तारा दीदी वे वाले बच्चा के रह गइली । आजादिये के आपन संतान मानके ऊ हर पंदरह अगस्त के बारह बजे रात में उठके जब खनक आवाज में सोहर गावे लागेली– अधेराति होरिला जनमले, महल उठे सोहर हो ..... त आस पास के लोग रो देला । "सोलह अगस्त के उनुका पर एगो दोसर जुनून सवार हो जाला । सवेरहीं से तइयारी में लाग जाली । अइसे त ऊ फुलेना बाबू के फोटो पर रोजे फूल चढ़ावेली बाकिर ओह दिन खातिर खास तइयारी होला । खूब जतन से फूल-अच्छत, चनन-रोरी सजा के रखेली । आरती सजावेली । अपना हाथे गेंदा-गुलाब के माला बनावेली । टीन के पुरान पेटी में से एगो पुरान लूगा निकालेली जवना पर जहाँ-तहाँ खून के पुरान दाग रहेला । फुलेना बाबू के फोटो के सोझा हाथ जोड़ के देर ले, पता ना, का बुदबुदाली बतिआवेली ..... देख लीं अपना खून से रँगाइल चुनरी । ई हे नू देले रहनी रउरा आखिरी दिने । तब से जोगा के धइले बानीं । एही परब के पेन्हीले ।"

'फगुआ' में वित्तरहित कॉलेज के एगो अइसन लेक्चरर– प्रकाश के करुण कहानी बा जेकरा एम. ए. कइला के बादो कवनो नोकरी नइखे मिल पावत । कॉलेज के नोकरी खाातिर खाली आपन एम. ए. पास भइला के अपर्याप्त मान के ऊ पी-एच-डी. भी करऽता । एमें जवन खरच बइठऽता ओकरा खातिर ऊ जी तोड़ परिश्रम करऽता, टयुशन करत चलऽता, कुछ किरानीगिरी से रिटायर्ड बापो मदद करत बाड़न । तबो लेक्चरर के नोकरी कहाँ मिलता । तब ऊ एकरा खातिर नेतन के कई साल तक झोला ढोवता । लेक्चरर के सम्मानपूर्ण पद पावते ओकर बिआह हो जाता, बच्चो हो जाता । बाकिर वित्त रहित कॉलेज में पइसा ना मिलला से ओकर मनोराज्य मनोराज्ये रह जाता । होली के मोको पर विकास के नाम पर

www.bhojpurisahityangan.com

टीचर फंड के रुपया के विकास फंड में ट्रांसफर कर देल जाता । प्रकाश के मनोराज्य के महल भहरा के गिर जाता । ई त वित्तरहित कॉलेजन के रोजमर्रा के शैली ह बाकिर प्रकाश आ उनका परिवार पर अब उनकर आर्थिक बदहाली के बहुते बुरा प्रभाव पड़ऽता– " होत परात प्रकाश घरे पहुँच गइलन । बाबूजी से दुआरे पर भेंट भइल । खाँसत-खाँसत खटिया में सट गइल रहनीं । कुछ दिन से बोखारो लाग-लाग जात रहे दुपहरिया के बाद । केंवाड़ी माई खोललली आ अपना काम-धंधा में लाग गइली । इनकर उतरल उदास चेहरा से इनका पाकेट के हाल मिल गइल । गठिया के दरद तेज हो गइल । बाबूजी के खाँसी रोकले ना रोकात रहे । केहू कुछ पूछल ना । माई के चेहरा पर कुछ आउर झुर्री पसर गइल । गुंजन के माई के चाल धीमा पड़ गइल । अनजान लेखान ताकत रहली । गुंजन पापा के खाली हाथ देख के भकुआइल रहे । ना लेमचूस ना पिचकारी, त का लेबे जाव पापा भिरी ?" ई त रहे घर भर के सदस्यन के उत्साह आ मनोबल भंग भइला आ उनका लोग के चिरसंचित आशा पर निराशा के पानी फिर गइला के तरह-तरह के क्रियात्मक प्रक्षेपण आ घर के असह्य आर्थिक तंगी के नि:शब्द बयान जवना पर रोगिअन के चिकित्सा करत उनका लोग के चिकित्सकन के ध्यान जाये के चाहीं । बाकिर प्रकाश खातिर सबसे खराब आ असह्य बात तब भइल जब प्रकाश अपना गुंजने के बहुते हिम्मत बटोर के गोदी उठावे चललन कि उनकर मेहरारू उनका के झटक के गुंजन के अपना गोदी में खींच लेली आ खीस भरल व्यग्य कइली– "चलऽ बाबू, चलऽ । एगो पेटी खाली करे के बा ..... तोहार पापा बहुते रोपेआ लेके आइल बाडन । ओही में धराई" । ई ऊ व्यंग्यवाण रहे जवना के मार हजार-हजार बिच्छियन के डंक बरोबर पीड़ादायक रहे, जवना से प्रकाश के माथा घिरनी नीहन घूमे लागल आ जवन असह्य पीड़ा से मुक्ति खातिर ऊ ओही फगुआ के साँझे घर से निकल पड़लन । अनायास ऊ ओही टीसन पर पहुँचलन जहाँ ऊ सुवहे उतरल रहन आ प्लेटफार्म के कोना के गाछ तरे थँउस गइलन । नाहियों चहला पर उनका कान में आसपास के गाँवन से उठत झाल ढोल के आवाज भरल फगुआ के ई गीत जोर से उनका के खँखोरे लागल– "राम के हाथे कनक पिचकारी सीता के हाथे अबीर..."

'काकी के गहना' अपना जमाना के नामी गरामी एगो उच्चमध्यवर्गीय मोख्तार के घर के कहानी ह । मोख्तार साहेब अपना तेंतर बेटी के बिआह बहुते उत्साह से अपना से कहीं बड़ औकात के एगो वकील के लड़िका से कर देत बाड़न । वकील साहेब विधुर रहन । उनका मेहरारू के अपना पतोह के खूब

www.bhojpurisahityangan.com

गहना चढावे आ बेटा के धूमधाम से बिआह रचावे के लालसा आ अरमान उनका साथही चल गइल । वोइसे वकीलो साहेब अपना पहिलउँठ बेटा के बिआह करे चलल रहन । एह से एह मोका पर ऊ आपन झोला खोल देले रहन । ऊ अपना पतोह के पाँच सेर सोना आ दस सेर चानी के तरह तरह के गहना चढवलन । बाकिर "अबहीं सालो ना लागल रहे कि एक घंटा के बेरामी में सब उलट-पुलट हो गइल आ मोख्तार साहेब के दामाद चल बसलन । अपना वकील समधी से आरजू मिन्नत करके मोख्तार साहेब अपना बेटी के ओकर सब सामान असवाव का साथ अपना घरे ले अइलन । नइहर के हर सदस्य उनका से बढ़िया से बढ़िया बेवहार करे आ उनका गहना के चर्चा करत गाँव के लोग ना अघात रहे । कवनो बात बेवहार से मोख्तार साहेब के ओह बेटी के भावना के ठेस ना लागो– एह दिसाईं लोग सजग आ सचेत रहे । बाकिर वकील साहेब के छोटकी पतोह अपना ननद से उनकर व्याजस्तुति करत उनकर गहनावाला बक्सा आ ओकर चाभी हथिया लेलक । मोख्तार साहेब के समधियाना से हर उत्सव आ तेवहार पर उनकर बेटी के बुलावा आवे बाकिर ऊ जाए के राजिए ना होत रही । एह से गहना के बक्सा के खुले के कवनो मोके ना आइल । बाकिर जब उनकर जाउत के जनेव के मोका आइल आ जाउत खुदे लिखलक कि काकी तूँ जरूर अइह त काकी अप्रत्याशित ढंग से उछाह में भर के अपना ससुरा जाये खातिर मचल उठली । घूम-घूम के सभका से चिठ्ठी देखावत, पढ़ावत आ पढ के सुनावत फिरस आ कहस कि लिखल बा "काकी के मालूम कि तू जरूर अइह ।" एह मोका पर ऊ अपना छोटकी भउजाई से अपना गहनावाला बक्सा के चाभी मँगली आ खोल के देखली त गहना सब के सब गायब रहे । काकी गुह के गोहार ना कइली । ऊ चुपचाप भीतर से खाली बाकिर ऊपर से तालाबंद गहना वाला बक्सा का साथ अपना ससुरा चल अइली । जाउतो अपना काकी के कवनो श्रद्धा आ प्रेमवश ना बोलवले रहन । ई सब गहना हड़पे खातिर काकी के देवर आ देवरानी के चाल रहे । एह बात के भंडाफोड़ उनकर जाउते कर देता ।

'दवाई के पुरजा' चरित्र प्रधान कहानी बा । प्राय:हर गाँव में कुछ लोग होला जे अपना बात-बेवहार से भर गाँव के गुलजार कके धइले रहेला । जगमोहन आ एकबाल के जोड़ी अइसने बा । दूनोजना के जनम एके गाँव में, एके साल, एके परब में भइल रहे । फगुआ आ चइत गावे में दूनों जना बेजोड़ रहे लोग । बाकिर संयोग अइसन कि दूनोजना बेमारो साथहीं परलन, दूनों के एके डाक्टर से देखावलो गइल, दवाई के पुरजो बनल, डाक्टर के गुनगानो दूनोंजना लोग कइल,

www.bhojpurisahityangan.com

पुरजा के दवाइयन के नामो लोग के कहत-कहत इयाद हो गइल बाकिर दवाई ना त एकवाल किनलन आ ना जगमोहने । पियक्कड़ी दूनों जना के ना छूटल । दूनोंजना के बाँचे के उमेद नइखे, अब-तब लागल बा ।

'अँजोर' में छपरा जिला के बथुई गाँव के बिशुनी राय पाकिस्तानी घुसपैठियन से लोहा लेत शहीद हो जातारन बाकिर ओही गाँव के एगो मोहनो बा जे रेल डकैती करके भागऽता आ पुलिस के गोली के शिकार हो जाता । कहानीकार उषा वर्मा अपना एह कहानी से एह बात के पुष्टि कइले बाड़ी कि 'एगो मरनी होला कि हजारो हजार हाथ अपने आप उठ जाला गोड़ लागे खातिर । जिनगी अपना औकात पर लजा के ओइसने मरनी के दुआ माँगे लागेले आ एगो मरनी अइसनो होला कि मुएवाला के लास तक के चीन्हें से ओकर परिवारोवाला इनकार कर देला । बिशुनीराय के उदात्त वीर चरित्र के बहाने उषा वर्मा उनकर मतारी आ मेहरारू के भी वीर चरित्र के उजागर कइले बाड़ी– "रोअत महतारियो रहली । मेहरारुओ । बाकिर रोआई में अभागिनवाली बेचारगी ना रहे । ..... दान के दर्प बिछोह के पीड़ा पर भारी पड़त रहे ।"

'राधा' कहानी के राधा कहानीकार उषा वर्मा के घरेलू दाई के बेटी ह जवना के बिआह अशोक नाँव के एगो छरमताह आ पियक्कड़ बिजली मिस्त्री से हो जाता । ओकरा पियक्कड़ी आ छरमताही से ओकर घरवाला आजिज आके ओकरा के अलगा कर देत बाड़न स । तब ऊ अपना परिवार के लेके कलकत्ता चल जाता जहाँ ओकर बहिनो बहनोई काम करऽता । अशोक के चाल कलकत्तो में नइखे छूटत । अपना बाल-बच्चन के पाले में राधा के जवने गहना-गुरिया रहे, बिका जाता । कुपोषण आ दवाई के अभाव में बड़की बेटियो मर जातिया बाकिर अशोक पर एकर कवनो प्रभाव नइखे पड़त । छठ के बहाने राधा सपरिवार गाँवे लवट आवत बिया । अशोक कसहूँ सुधर जाव एकरा खातिर ऊ सबका से कहवावत-सुनवावत बिया । अशोक के ऊ अपना नइहरो ले आवत बिया कि कहीं ऊ 'सास-ससुर' के बात मान ले । बाकिर सब बेकार । ऊ रोज-रोज के कुकुराह से उबिया के अकेले कलकत्ता भाग आवऽता आ बहिन-बहनोई के डेरा पर कस के बेमार पड़ऽता । ननद ननदोसी के चिट्ठी पा के राधा के जवन गति होता ओह संदर्भ में उषा वर्मा लिखले बाड़ी– "दुलहा के लेके एतना चिन्तित राधा के हम आज ले कबो देखलहीं ना रहनीं । उदासी हँसिओ से बेसी सक्रामक होला । राधा के उदासी हमरा के अपना घेरा में ले लिहलस ।..... राधा ओसहीं बइठल रहली । जइसे कहीं बहुत दूर देखत होखस ।" एहिजा के राधा महादेवी वर्मा के

www.bhojpurisahityangan.com

बेमार सोना के मानवी प्रतिरूप मालूम पड़ऽतिया । जब ओकर ध्यान टूटऽता त ऊ अपना अकेले कलकत्ता जाए के बात कहानीकार से कहऽतिया काहे कि ओकर सास साफे कह देले बिया कि एहिजा हाथ त खाली बड़ले बा, केहू के कलकत्ता जाए खातिर फुरसतो नइखे । तबो अपना दुलहा के देखे कलकत्ता जाए खातिर राधा के बेचैनी आ हठ देख के उषा वर्मा ओकरा से कुछ अनसाइले बोललीं– "तोहरे हाथ भरल बा ? का करेलन तोहरा खातिर ? हाथगोड़ चला के खालू आ तीनगो लइकन के पोसेलू । तू कलकत्ता जा के का करबू ? कहाँ से ले अइबू बहुत पइसा इलाज खातिर ?" उनका से राधा साफे कह देत बिया– "हँ दीदी, पीअल त ना छूटी ..... हमरो पाले ओतना पइसा ना रहे ..... बाकिर एक बेर देख अइतीं ..... ऊ नाहियो रहिअन त एक दिन उनके दुआरी नू खड़ा होखे के बा । लइकन सेयान होइहन सन त कहाँ जइहन सन ?" कहानीकार तबो बोललीं कि दुलहा के जिनगी में ससुरा में जगहा ना मिलल त मरला में मिली ? तें काहे नइखिस अपना बाप से मकान में आपन हिस्सा माँग के नइहरे में रह जात ? आजकाल त बाप के सम्पत्ति में लड़िकन नीहन लड़किअनो के अधिकार के कानून बा । ए पर राधा कहलक कि ई सब बात फालतू बा । एक बेर ई सवाल ऊ अपना बाप के सामने दबले जबान जब उठवले रहे त ओकर बाप एकदमे आगबबूला होके बोलले रहन– "तेहीं आग देबे हमनी के ? तेहीं कान्हा लगइबे ? तोरे से तरे के बा ? दुन्ना बेटा ह ..... मुअला पर ऊहे तारी, भले जिनगी में कुछ करो भा ना करो ।" एह कहानी में समाज में दाइअन के असुरक्षा आ पैतृक सम्पत्ति में बेटी के अधिकार भइलो पर ना मिलला के समस्या पर प्रकाश डालल गइल बा ।

'धाम' कहानी में निम्नमध्यवर्ग के आर्थिक तनाव से भरल जिनगी आ ओह तनाव से उत्पन्न आउर-आउर फसादन के अभिव्यक्ति बा । भरोसा एगो स्कूल-टीचर बा । ओकर आपन कमाई से ओकर घर के खर्च नइखे चल सकत । ओकर बाप सरकारी नौकरी में टाइपिस्ट रहन । उनका आपन पिंसिन के पूरा एक हजार रुपया महीने-महीने भरोसा के दे-देबे के परेला जवना के एवज में उनका दूनों शाम के सिर्फ खाना मिलेला । चाय-पानी आ आपन दवा-दारू खातिर ऊ बहुते धरीछन धके दू पइसा कमाके आपन काम चलावेलन । गाँव के एक कट्टा जमीन बिकाइल ओसे इनका हिस्सा के कुल दू हजार मिलल । निम्नमध्यवर्गीय परिवार खातिर एक बेर दू हजार के राशि कवनो छोट बात ना होखे । एही से भरोसा बो आ भरोसो के नजर ओह रुपया पर गड़ गइल । दूनो बेकत चटपट

www.bhojpurisahityangan.com

आपन प्रोग्राम बाबाधाम के बना लेलक । अब भइल बाप से रुपया के माँग शुरू । पहिले त गरमा गरमी, फिर कड़का कड़की ओकरा बाद ठेला-ठेली आ अंतत: भरोसा अपना बाप के अइसन धँसोरऽता कि खटिया में टकरा के उनकर माथा फूट जाता आ उनकर तकिया के खोल में से छिपावल रुपया के पोटली हथिया के अपना मेहर का साथ बाबा धाम निकल जात बा ।

'काई' प्रतीकात्माक कहानी बा । वय:संधिकाल के पहिलका प्रेमांकुरण आ ओकर विचलन भा दमन के चलते जवन फसाद होलन स ओकरे प्रतीक काई के बनावल गइल बा । दस-बारह बरिस के उमिर वाली लड़की दीपा के ओकरा से उमिर में तनिके बड़ एगो लड़िका किसुन रोज घूरऽता आ पीछा करऽता । एक दिन ऊ एगो पुर्जी लिख के ओकरा के थम्हाइयो देता । पुर्जी में लिखल रहे– "काल्ह भोर के पहिलिकी किरिनिया जगाई/तोहरा जरूरे हमार इयाद आई ।" असल में ऊ लड़िका बहुते भावुक आ महत्त्वाकांक्षी रहे । पढ़े-लिखे के साढ़े बाईस आ डाक्टरे बने के मनोकामना! नतीजतन मैट्रिक के परीक्षा में दू बेर फेल कर के ऊ फ्रस्ट्रेटेड हो जाता । एने दीपा पर ओकर अनुरक्ति । ऊ अपना के कबनो योग्य ना पाके आत्महत्या कर लेता । आत्महत्या के निर्णय के पहिले ऊ जवन पुर्जी तइयार कइले रहे, ऊहे पुर्जी के ऊ दीपा के थम्हा के आपन मानसिक हलचल भरल मनोभाव के प्रगट कर देले रहे । एने दस साल बीत जाता । दीपा के बिआहो हो जाता । ससुरा में ऊ आपन कॉलेज के पढ़ाई करऽतारी बाकिर किशुन के इयाद के काई उनका के उद्भ्रांत करत रहल बा । उनका कपड़ा-लत्ता आ साज-सिंगार के कबनो शौक नइखे रह जात । ऊ गंभीर होत जात बाड़ी । एकर कारण बा कि बचपन में किशुन के प्रेम पुर्जी उनका जेहन में रसे रसे पेहम करत रहऽता । ई नइखे कहल जा सकत कि किशुन के प्रति उनकर प्रेम रहे आ इहो नइखे कहल जा सकत कि ना रहे काहे कि पिछला दस-बारह बरिस में उनका स्मृति-पटल पर बिशुन के दस-बारहगो चित्र बनल-बिगड़त आपस में गड्डमड्ड होत रहऽता । हरदम उनकर मन उड़ल-उड़ल रहऽता जवना खातिर बोटेनी के क्लास करत उनका अपना प्रोफेसर के भर्त्सना सुने के पड़ऽता ।

कुल मिला के देखल जाई त माने के पड़ी कि कहानीकार उषा वर्मा के लोकहृदय आ कथा के मार्मिक प्रसंगन के अच्छा पहचान बा । ऊ जानऽतारी कि निम्न आ निम्न मध्यवर्गीय परिवारन में आर्थिक तंगी अतना रहेला कि एह साँझ के बा त ओह साँझ के सोच लागल रहेला । अइसनका हालत में खाना

www.bhojpurisahityangan.com

बनला पर परिवार के सदस्यन के खाए खातिर 'फ्रीहैंड' के बात सोचले नइखे जा सकत । एसे कलह बचावे खातिर खाना भा रसोई बनला पर उमिर भा महत्त्व के हिसाब से बखरा लगा दियाला आ तब लोग खाला । ई मार्मिको कम नइखे । अइसनका परिवारन में वृद्ध बाप-मतारी के जिम्मेवारी भी बखरे के जरिए भाइअन में बाँट दियाला । नारी भइला के नाते नारी स्वभाव आ नारी-हृदय के अच्छा पहचान कहानीकार उषा वर्मा के बा । ऊ जानऽतारी कि जब कवनो लड़की के बिआह में गहना चढ़े लागेला त 'सराती मेहरारू लोग दूइएगो चीज देखे खातिर बेसी मडराला– दुअरा पर बर आ अँगना में गहना ।' सामान्यत: गहना रूपी गुड़ खातिर औरतन के हड्डा-बिरनी समझे के चाहीं । एकरा खातिर कवनो वर्ग के औरतन के मन बैमान हो जा सकऽता । आ उहनी के चोरी खातिर उत्साहित कर सकऽता । बाकिर गहना के महत्त्व बा । ई औरतन के आपतकाल के गारंटी आ स्त्रीधन ह । एही से 'काकी के गहना' में वकीलो साहब के बेटा के बिआह के बेरा "साल भर पहिलहीं से दूआर पर सोनार बइठा के गहना बनवावल गइल ।" कुछ गहना कटको से आइल । भोजपुर क्षेत्र में कम से कम फगुआ-दसहरा के परब पर नया लुगा-कपड़ा पहिने के प्रथा बा । अनदिना पइसा कहाँ से आई कि रोज-रोज बनत रही । कबो-कबो त अइसन फाका पड़ेला कि फगुओ-दसहरा जइसन पर्व पर नया लूगा के लाला पड़ जाला । एकरे खातिर भा नेवता-पेहान अपनो घर से करे खातिर घर के मेहरारू सब कतहीं से न्योता-पेहान वगैरह में आइल कपड़न के जोगा के संइँचले चलेली स । एकर बहुते अच्छा तस्वीर उषा वर्मा प्रकाश के मनोराज्य-व्यवस्था के संदर्भ में उतरले बाड़ी– "दू महीना पहिले घरे आइल रहलन । देखलन कि माई फाटल लुगा पेन्हले बाड़ी । मन कचोट गइल । सोचलन, अबकी फगुआ में आइब त माई खातिर एगो नीमन लुगा ले आयब । बाबूजी खातिर एगो गंजी भा कुरता ले लेब । नेवता-पेहान में आइल कवनो नया धोती पहिले के होखबे करी । बाबूजी के काम चल जाई । हाल में गुंजन के मामा के नया-नया नौकरी लागल ह त अपना बहिन खातिर एगो साड़ी ले आइल रहलन हँ । गुंजन के माई से कहब कि अबकी फगुआ ओही से निबाह ल । अलता, लहठी, बिन्दी ले लेब । खुश हो जइहन ।" एह तरे माने के परऽता कि भारतीय ग्रामीण अर्थशास्त्र पर लम्बा-चौड़ा व्याख्यान एक ओर आ दोसरा ओर उषा वर्मा के मध्यवर्गीय एह तनाव भरल कामचलाऊ आ निबाह -निर्भर अर्थव्यवस्था वाली जानकारी के राखल जाई त उषा वर्मा के पलड़ा भारी आ सत्य के समीप समझल जाई । गरीबी आ मजबूरी के सिक्कड़ में बँधल निम्नमध्यवर्गीय

www.bhojpurisahityangan.com

आ निम्नवर्गीय औरतन के सामान्य प्रवृत्ति अलता-बिंदी आ लहठी पर खुश हो जाये के रहेला । कहे के ना पड़ी कि ई प्रवृत्ति बहुत-सा सामाजिक अनर्थन के जड़ भी वा । लोग कहेला कि देहाती मूर्ख होलन । सचाई ई बा कि ऊ अनपढ़ होलन बाकिर मूर्ख ना; बलुक बहुत जादे विदग्ध । 'दवाई के पुरजा' से एह बात के पुष्टि हो जाता– "गाँव के एगो दूगो नवका लइका सन त जगमोहन-एकबाल से कबो-कबो मजाको कर लेले– "का हो काका, बेरामियों में यारी बा का ? ओकरा पता वा का कि तू लोग संघतिया हउव ?" अइसने हँसी मजाके के रसधार लोकजीवन के हरा-भरा बनवले राखेला । ध्यान रखे के होई कि गाँव के नवका लइकन के मजाक के ई योजना ओह शिल्पो के तहत बा जवना से उषा वर्मा जगमोहन आ एकबाल पर समान नक्षत्र आ ग्रहदशा के प्रभाव के उभारऽतारी ।

साधनरहित गँवई जीवन के एगो आपन शैली होला । अगर ई शैलियो ना रहित त भोजपुरी क्षेत्र के ग्राम व्यवस्था के भीत कबे भहरा गइल रहित । ई शैली ह परचर्चा रस । गाँव के लोग अपना उर्वर कल्पना शक्ति के बल पर कवनो मन पसंद आ महत्त्वपूर्ण घटना के तिलंगी नीहन अइसन खिला देला कि ओकर चर्चा इनार, पोखरा, आटाचक्की, कोल्हुआरी, बगइचा आ कउर-घूर लगे चलत रहेला । गाँव के कुछ लोग अइसन सत्य भा कल्पनामिश्रित सत्य के चलंत कोश भा स्वयंभू जनसम्पर्क कर्मचारी होला । चाहीं त सुन लीं इनका लोग से कि केकर केकर बेटी-पतोह के प्रेम केकरा केकरा साथे चल रहल बा, केकर केकर गर्भपात भइल, केकर बेटी घर से निकल गइल आ केकरा घर में सास पतोह में झोंटा-झोंटी भइल ।

गाँव के दाइअन के मन हरदम चंग पर चढ़ल रहेला, साँस लेबे के फुरसत ना होखे । अइसने तनाव के बिन्दु पर उषा वर्मा के साथे रहे के हठ पर राधा के मतारी ओकरा से कहऽतिया– "हमरा त नीमने बा । रह दीदी जोरे ।" गरीबन में अपना बच्चन के नाँव राखे के एगो गजबे तरीका बा; जे पहिले भइल ऊ बड़का आ जे बाद में भइल ऊ छोटका । ना कवनो नामानुसंधान ना पोथीपत्रा । जनमल लइकन के जनम से जुड़ल कवनो महत्त्वपूर्ण घटनो ओकरा नामकरण के आधार हो सकऽता । 'लाइची' में छोटका के नाम 'इंटर' एह से रखाइल कि ओकर जन्म तब भइल रहे जब इंटर के परीक्षा चलत रहे । जे ई बात आ नामकरण पद्धति के नइखे जानत ऊ कही कि इंटर इंद्र शब्द से व्युत्पन्न बा भा ऊ इंद्र के विकसित अपभ्रष्ट रूप ह! आदमियन के नाँवें उहनी के वर्ग आ वित्तीय स्थिति के पहचान

www.bhojpurisahityangan.com

होला । निम्वर्गीय पात्रन के नाँव शायदे कवो अपना तत्सम रूप मे मिली । जादेतर उहनी के अइँठ भा पीट के औकात में रहे के मजबूर कर देल जाला । शब्दन के एह दलित रूपन के अनिवार्य सम्वध वर्ण-व्यवस्था से बा । अँजोर के 'बिशुनी' भ 'मोहना' भा 'काई' के किशुन अइसनके अइँठल-ठेठावल नाम बाड़न स । गाँवनो के नाँव भी अइसने आ प्रामाणिक बाड़न स; चाहे ऊ 'रकत सेनुर' में सिअहुता बंगरा होखे भा 'अँजोर' के बथुई । पात्रन के आपसी बेवहार आ बातचीत से उहनी के सामाजिक स्थिति आ वर्ग के परिचय मिल जाता । उषा वर्मा लिखले बाड़ी– 'गरीबी से आदमी चोर ना होखे, लालच से होखेला । लाइची गरीब रहली, चोर ना ।' लाइची के एगो चित्र बा– "एगो अजीबे तरह के विदेहपन रहे उनका में जवन काफी आकर्षक रहे ।" बाकिर चरित्र वैचित्र्य के ऊ खारिज नइखी कर सकत, बलुक 'राधा' कहानी में टुन्ना के हथलपकी के संदर्भ में ऊ लिखले बाड़ी– " एकठो भाई बा जेठ भाई टुन्ना । छोट रहलन त माई के जोरे जेकरा घरे जास, कवनो-ना कवनो चीज– बीखो उठा लेस । महतारी के ई चोरी पसंद त ना रहे बाकिर एतना एतराजो ना रहे कि बेटा के कवनो सजाय दे सकस ।" बुढ़ापा के लकड़ी वाला तर्क त अर्द्धसत्य बा । बतावे के जरूरत नइखे कि पात्र कवना वर्ग के बा । अशोक आ राधा के बतकहिए कह देता– "भाषण मत दे । भाषण सुने खातिर तोरा के नइखीं ले आइल । चुपचाप रहे के बात रह ना तो जो इहाँ से । ..... जहाँ मन करे जो, हमार माथ खराब मत कर । बेसी बकबक करबे त सभनी के उठा के फेंक देब, मर जइबऽ सन ।" एमें 'भाषण' के 'ण' कहानीकार के मुँह से निकल के अशोक के मुँह में माइग्रेट कर गइल बा ! अइसन माइग्रेशन बहुत बाड़न स जवन स्वाभाविक बा । 'काकी के गहना' के काकी आ उनका छोटकी भउजाई के बतकही भा 'रकत सेनुर' के तारा दीदी के शहीद फुलेना बाबू के फोटो का साथ जवन बतकही बा ओह से उनका लोग के वर्गीय पहचान बनऽता । बिआह में धोखा अबूझ मानसिक फसादन के मूल हो सकऽता । बड़की दीदी कबो हिस्टेरिक आ असामान्य ना हो जइती अगर जो उनका बिआह में वोइसन दुर्घटना ना घटल रहित । आर्थिक तंगी के मार सहत निम्न आ निम्नमध्यवर्ग में बूढ़ बाप-मतारी प्राय: उपेक्षित हो जाला आ उनका लोग के जिनिगी अभिशाप हो जाला । 'बखरा' में वकील-वकिलाइन के उपेक्षा आ अपमान आर्थिक तंगी के चलते त होते बा, एमें जादे बिहारी-मुरारी के स्वार्थ भरल चाल आ खेल बा । बाकिर आर्थिक तनाव के सच्चा तस्वीर 'धाम' में लउकऽता । रुपया खातिर रोज कुकुराह आ खींचतान

www.bhojpurisahityangan.com

के पीछे भी भरोसा के आर्थिक तनाव से जादे ओकर आर्थिक असुरक्षा के भावना बा । ऊ अपना बाप से कहऽता– ....इस्कूल में जेतना मिलेला ओतना में तोहार खरचा हम ना उठा सकीं । ..... आज तोहरा पर सब लुटा दीं आ काल्ह कवनो जून लागे त हमरा के के दी ? देवऽ का तूँ ?" एह "देवऽ का तूँ" में अपना बाप के तरफ से रुपया मिले के खाली निराशा ही नइखे, ओ में कुछ आशा भी अवहीं ले बनल बा । लाइची के वत्सल भाव के चर्चा कइल जा चुकल बा जवना के दमित भा प्रसुप्त रूप के सहसा विस्फोट 'काकी के गहना' आ फुलझड़ी 'फगुआ' में देखल जा सकऽता । गरीबी में शृंगार का होई ? ऊ प्रकाश के अपना गुंजन के माई खातिर फुटपाथी लहठी आ अलता-बिंदी के भावनात्मक संसारे तक सीमित रह जाई; बाकिर एगो होला जवन धन-निरपेक्ष होला आ जवना के रस केहुए-केहुए जान के पान कर सकता– 'से रस केवो केवो जाने ।' उषा वर्मा 'राधा' में एह रस के चिन्हले बाड़ी आ दोसरो के चिन्हावे खातिर राधा के उकुसावत बाड़ी कि तोर मरद अशोक कलकत्ता में बेमार बा त बा बाकिर तें ओकरा के देखे मत जो । ऊ त पियक्कड़ बा । तोरा के त कुछ देवे ना । तें त आपन जांगर थूर के आपन आ आपन तीन-तीन गो लड़िकन के पोसत बाड़िस । ई बिंदु समीक्षा खातिर बहुत काई भरल बा । अगर जो केहू एकर माने ई लगावे कि कहानीकार के एह उकुसवला के पीछे उनकर स्वार्थ आ खाँटी मध्यवर्गीय काइँयापन बा, उनका डर बा कि राधा जब कलकत्ता चल जाई त उनका घर के झाड़ू-पोंछा, चउका-बरतन आ उनकर टहल-टिकोरा के करी– त ई समीक्षा के साथ विपरीत रति होई । ध्यान फट से राधा के एह कथन पर जाये के चाहीं– "हँ दीदी- पीयल त ना छूटी..... हमरो पाले ओतना पइसा नइखे बाकिर एक बेर देख अइतीं..... ऊ नाहियो रहिहन त एक दिन उनके दुआरी पर नू खड़ा होखे के बा ।" मतलब ई कि दोसर केहू त दोसर केहू, रउरो दुआरी के असरा हम नइखीं कइले । देखीं ओकर पातिव्रत्य के दर्प आ चीन्हीं पातिव्रत्य रस के साथे साथ एह रस के उजागर करे के कला के भी । एही पातिव्रत्य के गंगा में नहा के 'ऊ नाहियो रही' जइसन अपेक्षित वचन 'ऊ नाहियो रहिहन' जइसन भावनापूत मध्यवर्गीय भाषा स्तर तक उन्नीत हो जाता । ई ऊ रस ह जवना के गंगोत्री 'रकत सेनुर' ह जवना के सोता 'लाइची' आ 'अँजोर' में लउकता बाकिर ओकर एगो विशिष्ट सोता 'राधा' में बा– बहुते निर्मल ! अपना एही निर्मलता के कारण पातिव्रत्य रस के ई धारा धारा से 'राधा' हो जाता । बाकिर 'राधा' में एगो सवाल उठऽता कि कवनो पतिव्रता अपना पति के शिकायत कइसे सुन सकऽतिया

www.bhojpurisahityangan.com

आ ओकरा मरला के बात अपना जबान पर कइसे ला सकत बिया ? ई बात ठीक बा काहे कि अशोक के अनघा शिकायत राधा से उषा वर्मा करत बाड़ी आ ईहो समझावत बाड़ी कि "जिनगी में ससुरा में जगहा ना मिली त मरला पर मिली" आ ई सब राधा बर्दाश्त करत जात बिया । ई ए से कि अपना मलकीनी उषा वर्मा से आपन औकात देखत ऊ मुँह त लड़ा नइखे सकत । दोसर बात बा हितवचन । तबो उषा वर्मा के जवन ऊ जबाब देले बिया ओ में ओकर पातिव्रत्य से निकलल ऊ दर्प, बल, तेज आ हरद्वार वाला भागीरथी के धार बा कि ओ में मैगल से मैगल अभिमान के हाथी बह जाई ।

लोकहृदय के जइसन खाँटी पहचान उषा वर्मा के बा, ओइसने पोख्ता ज्ञान उनका पास लोकरीतियन आ लोकविश्वासन के बा । नया-नया दमाद अपना ससुरारी अपने ना आवे । ओकरा के बोलावे खातिर कन्या के भाई, बाप भा कन्यापक्ष के केहू महत्त्वपूर्ण आ प्रिय सदस्य के जाये के पड़ेला । 'दुलार' में शिवरानी आ उनका दुलहा के बोलावे झूलन जाता जवन शिवरानी के भाई ह । जब बिआह के बाद कनेया पहिल पहिल ससुरा में उतरेले तब ओकरा दउरा में पैर रख के चले के होला । एकरा पीछे, ओकरा ससुरावाला लोग के 'अवनि कठोरा' वाला पवित्र भाव आ 'पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा' वाला भाव बा कि बहू के पाँव कठोर धरती पर उहाँ कबो ना पड़ी– एह बात के पवित्र आश्वासन भी रहेला । ओह लड़की के माँग बहोरल जाला । 'रकत सेनुर' में ई सब मिली । अइसन लड़कियन से आवते खाना ना बनावे दियाय, चउका छुआवे परेला जवना में लड़की के खीर पूड़ी बना के परिवार, आस-पड़ोस आ सगा सम्बंधियन के खियावे के परेला । नया-नया ससुरा में आइल लड़कियन खातिर उहनी के पाकशास्त्रीय ज्ञान में निष्णात भइला के व्यावहारिक परीक्षा भा दीक्षांत समारोह एह चउका छुआवे वाला रसम के समझे के चाहीं । ढेर दिन ले जब कभी अइसन लड़कियन के दुलहा अपना ससुरार आवेला त लड़की के सहेली जुट के चउल चपट्टा के बहाने ओह लड़िका के काम-कौशल आ सहन शक्ति के परीक्षा ले ली सन । एह परीक्षा में दखिनहवा हवा में मस्त हास्य रस के कोका कोला आ फंटा के असंख्य बोतल देर-देर तक खुलत, लड़त आ लोंघड़ात-ढिमलात रहेले सन आ लोक जीवन के संगीत अपना परवान पर चढत लउकेला । लडकी कीहाँ विवाह के बाद कलेवा जाला, ओकर दोंगा होला । दामाद के अइला पर ओकर मान-दान खातिर ससुरो के तत्पर रहे परेला । 'दुलार' में ई बात पावल जाता बाकिर ससुरार में दामाद के जादे दिन रहहूँ के ना चाहीं, कवनो ना कवनो बहाना

www.bhojpurisahityangan.com

बना के जल्दीए अपना घरे आ जाए के चाहीं काहे कि कहल बा– ससुरार सुखन के सार, जब रहे दोइ दिन चार । शिवरानी के दुलहा ई बात जानऽता । खिसिआइल भा बेचाल दामाद के राह पर ले आवे खातिर सास-ससुर से समझवावल जाला । लोकज्ञान के आधार पर अमूमन अइसन समझल जाला कि लड़िका बाप-मतारी के बात मानो ना मानो, सास-ससुर के बात जरूर मानी । अइसने सोच के राधा अपना दुल्हा अशोक के अपना नइहर ले आइल बिया । भोजपुरी संस्कृति के पूर्ण प्रकाश 'अँजोर' में देखल जा सकऽता । मोहना के माई अपना भाई के अइला पर, घटना से अनजान, उनका के गोड़ धोवे के कहऽतिया आ खाए-पीए के पूछऽतिया, अपना स्टोब पर चाहो बनावे के आपन सरजाम के ऊ बात बता के चाह के दिसाईं आपन भाई के बेफिकिर कर देल चाहऽतिया ।

'लाइची' संग्रह के कहानियन में भोजपुर क्षेत्र के लोकविश्वासन के अच्छा आ कलात्मक संयोजन बा । कवनो शुभ काम शुरू करे के पहिले दिन देखा लेल इहाँ के सामान्य बात ह । 'दुलार' में दोंगा खातिर नीमन दिन देखा लेवे के बात उठऽता । 'काई' में भी ई लोकविश्वास मिलऽता– "माई पंडित-ब्राह्मण में तनी बेसिये विश्वास करस । जेकरा-सेकरा से टीपन देखावस" नजर-गुजर में विश्वास अबहीं ले चलल आ रहल बा जवन 'रकत सेनुर' के पंडिताइन काकी में पावल जाता । भोजपुर में एगो कहाउत बा– तेंतर बेटा भीख मँगावे, तेंतर बेटी राज रजावे । 'फगुआ' के प्रकाश तेंतरे हवन । लोक विश्वास बा कि तेंतर बेटन के जनम होते अगर काँसा के थरिया अइसन कसके पटकल जाय कि एक बेर में ओकर चित्री-चित्री उड़ जाय त तेंतर बेटा के भीख मँगावे वाला दोष कट जाला । ई टोटरम ह । प्रकाश के भइला पर उनकर दादी अपना डोली में मिलल कँसहा थरिया के पटक के फोर देतारी । ई एगो प्रतीकात्मक प्रक्रिया ह । लोग थारी ना फोरे, तीन तीन बेटियन के बाद कहीं चउठिओ बेटिए ना हो जाय, एकर चिरसंचित भय के फोड़फाड़ कर देला । कवनो औरत रूपवती आ सुलक्षण तबे तक समझल जाले जबले ऊ सधवा रहेले विधवा होते ऊ कुलच्छन समझल जाये लागेले । 'काकी के गहना' में काकी के ससुरारवाला जे लोग उनकर रूप गुण के गान करत अघात ना रहे, उनका के सुलच्छन कहत रहे, उहे ससुरार वाला लोग काकी के विधवा होते उनका के कुलच्छन कहल शुरू कर देलक । कोढ रोग के वंशगत भइला से सम्बंधित लोक विश्वास 'दुलार' में बा । अगर एके गाँव, एके बरिस, एके पख में दू गो लड़िकन के जनम होला त उहनी के मतारी

www.bhojpurisahityangan.com

परस्पर जँवाइन बाँट के 'दूध पूत बरावर' कहेली स ना त लोकविश्वास बा कि अइसन मतारियन के दूध सूख जाला । दवाई के पुरजा में ई लोकविश्वास अभिव्यक्त बा । भोजपुर क्षेत्र में एगो लोकदेवता मानल जालन– सोखा बाबा, जिनकर उल्लेख 'दवाई के पुरजा' में बा । भाग्य पर विश्वास त अंतरराष्ट्रीय विश्वास ह । 'दवाई के पुरजा' में एह भाग्यवादिता के प्रति विश्वास लउकऽता । एगो लोक विश्वास बा कि चिता के आग से अँजोर ना होला । 'अँजोर' में एकर उल्लेख बा । 'राधा' में अभी ई लोक विश्वास बरकरार बा कि मरला पर जीव बेटे से तरेला, बेटी से ना । नया कानून के मोताबिक नइहर में आपन हिस्सा के बात उठवला खातिर राधा के बाप आग बबूला होके कहता– "तेहीं आग देबे हमनी के ? तेहीं कान्हा लगइबे ? तोरे से तरे के बा ? टुन्ना बेटा ह ..... मुअला पर ऊहे तारी....." ।

कथा वस्तु आ पात्रन के चुनाव आ उहनी के विकास के दिसाईं उषा वर्मा जतना दक्ष बाड़ी ओतने पारंगत ऊ कथा-शिल्प के दिसाईं भी बाड़ी । ऊ खूब ठीक से जानेली कि कवनो कहानी के कइसे शुरू करके ओकरा के उठान पर ले जात कहाँ-कहाँ ओकरा में कथा-मज्जा आ कलात्मक रंजन करत ओकर कइसे अंत करे के चाहीं । एकरा खातिर उनका पास कवनो पूर्व निश्चित घिसल-पिटल मुहावरा नइखे । कहानियन के माँग आ दबाव के अनुसार उनकर कहानियन के कायायष्टि तइयार होत चलेला । 'बखरा' में उषा वर्मा के कहे के बा कि बुढ़ापा में वकील आ वकिलाइन के जिनिगी कुत्तो के जिनिगी से बदतर हो गइल बा । बाकिर उषा वर्मा एह बात के सीधे अइसे ना कहके तीस बरिस पहिले के एगो पोसुआ कुकुर के उपकथा उठावत बाड़ी जवना से उनकर अभिप्रेत के बिम्ब बनऽता । एसे खाली कुत्ते नीहन उनका लोग के चित्र बनऽता, बाकिर कुत्तो से बदतर जिनिगी हो जाता ई देखावे खातिर कटोरावाला प्रसंग के योजना बा । उषा वर्मा लिखऽतारी– "बाकिर आज घर में ना ओइसन कवनो कटोरा बा, ना ओइसन खायक जवना पर वकीलाइन के एतना हक होखे कि जेकरा आगे चाहस सरका देस ।" असहीं 'रकत सेनुर' में महाराजगंज थाना के कब्जिआवत फुलेना बाबू के लक्ष्य के अनन्यता आ उनकर एकाग्रता के बिम्ब ऊ द्रौपदी स्वयंवरवाला मिथकीय प्रसंग से तइयार कर देत बाड़ी । उषा वर्मा अपना पाठकन के विश्वास अर्जित करे खातिर कवनो घटना के आँकड़ा देली, दूरी, दिशा आ समय के निश्चित संकेत के साथ ऊ शब्द चित्रात्मक कौशल के भी सहारा ले ली । 'रकत सेनुर' में फुलेना बाबू के मारेवालन

www.bhojpurisahityangan.com

अस्त्र-शस्त्रन के ब्योरा बा । ओंसहीं 'काकी के गहना' में सोना चाँदी के वजन आ उहनी से बनल गहनन के कीमती नामावली बा जवन भोजपुर क्षेत्र के सांस्कृतिक अध्ययन करत शोधार्थी लोग के कामे आई । कबो उषा जी सटीक कहाउत से कहानी शुरू करके लगले ओकर तात्पर्यार्थ बतावत आपन कहानी चालू कर देली । 'अँजोर' में ई शिल्प देखल जा सकऽता । 'फगुआ' में प्रकाश के मनोव्यथा उरेहे खातिर उषा वर्मा उनकर मेहर के मुँह से असमर्थ पतियन से सम्बंधित एगो व्यंग्य भरल कहाउत कहावावत बाड़ी– "कमाये के ना धमाये के, माँग टीके धाये के" जवना के अपेक्षित आ अभिप्रेत असर प्रकाश पर अइसन पड़ऽता कि उनकर माथ घिरनी नीहन नाचे लागता आ सुन्न पड़ जाता । एह मनोव्यथा से मुक्ति परिवार के बीच नइखे हो सकत एसे अपना पर एह व्यंग्य के प्रभाव से उत्पन्न मोमेंटम में ऊ सीधे स्टेशन पहुँच के कोनावाला गाछ तर थउँस जात बाड़न । अतने पर उषा वर्मा नइखी छोड़त । ऊ फगुआ के दिन आउर लोग से प्रकाश के स्थिति के वैषम्य ढोल-झाल के लय-ताल पर वातावरण में 'गूँजत एह फगुआ गीत से परत-दर-परत उभारत बाड़ी– "राम के हाथे कनक पिचकारी सीता के हाथे अबीर.....ऽ ....." । एह फगुआ गीत के परवान चढ़त गूंज के योजना करके ऊ प्रकाश के ओह मनोव्यथा के भी परवान पर चढ़ा देत बाड़ी जवन उनकर करेजा के खँखोरत जाता । उषा वर्मा अपना एह कौशल से ऊपर-ऊपर से प्रकाश के प्रशांत रखके ओकर हृदय-सागर में उठत व्यथा के बड़वानल के सृजन करे में समर्थ भइल बाड़ी । एह संग्रह के कई कहानियन में नाटकीयता बा । 'काकी के गहना' में वकील साहेब के बेटा के असमय एक घंटा में मौत अप्रत्याशित आ नाटकीय बा । असहीं काकी के छोटकी भउजाई उनकर सब गहना हड़प लेत बाड़ी । भेद खुलला पर काकी के उनका पर गरमाये के चाहत रहे बाकिर अपना जिनिगी खातिर सस्पेंस के जरूरी समझत ठीक एकरा विपरीत ऊ अपना गरमाइल भउजाई के मुँह पर हाथ धर देतारी आ कहतारी– "बस-बस भउजी, अब चुप हो जाई । ई बात हमरे रउरा ले रही । भइया किरिया जे रउरा केहू से कुछ कहीं ।" काकी के ई व्यवहार अप्रत्याशित आ नाटकीय बा । 'राधा' कहानी डॉ॰ नामवर सिंह के एह धारणा के खण्डित कर देता कि आज ऊहे कहानीकार आपन कहानियन के नाटकीय अंत करता जेकरा पास कहे के कुछ नइखे । बाकिर उषा वर्मा के पास सामाजिक आ अन्तरवैयक्तिक चेतना के अनघा ज्ञान बा । उषा वर्मा कबो आपन कहानी बहुते इतमिनान से कहेली आ कबो उनकर कहानी सरपट

www.bhojpurisahityangan.com

भागे लागेले । अइसन जगहा पर सरिता वुद्धू के कंठ से निकलल 'कलकत्ता से छूटल जहाज' इयाद आवे लागेला । एह बात के पुष्टि 'राधा' कहानी में तब होता जब बीस साल बाद उषा वर्मा के भेंट फेनु राधा से होता आ उनका पता चलऽता कि राधा के बिआह आज से बारह बरिस पहिलहीं अशोक नाँव के एगो निकम्मा आ छरमताह बिजली मिस्त्री से हो चुकल वा । कहानी खातिर एकर जादे उपयोग ना समझ के कहानीकार एकरा के चलता कर देताड़ी काहे कि राधा के जिनिगी के बारे में उनका एहू से जादे-जादे जरूरी आयामन पर प्रकाश फेंके के वा । कहल जाला कि कहानी के आधार कवनो क्षणिक घटना होला बाकिर एह कहानी के बीसो साल से ऊपर काल विस्तार के देखत 'उसने कहा था' के इयाद पड़े लागऽता जवना में भी लगभग अइसने काल के कलात्मक लंघन वा । 'धाम' में लफाड़िया आ स्वार्थी विवर्तकल्प में पड़ल, तपेसर जइसन तथाकथित ब्राह्मण के चरित्र उषा वर्मा के तनिको नइखे सोहात । एकर दवाई ऊ एगो कलात्मक फट्टा के प्रहार से करत बाड़ी । मनोरी से भर मउनी चूड़ा दियवा के उनका के ऊ ब्राह्मण से 'बाभन' में पदावनत कर देत बाड़ी जवना से उनकर लोभी आ पतित चरित्र उजागर हो जाता । जनम से अइसने ब्राह्मण कहायेवाला लोग खातिर ऊ 'काई' में 'तनी बेसीए' आ 'जेकरे-सेकरे' के प्रयोग करके इनका लोग के अज्ञान, अविश्वस्य आ पतित रूप के उजागर कर देले बाड़ी । इनकर कहानियन में गजब के चित्रात्मकता बा ।

एकाध कहानियन में ललित निबंध के अनुरूप कहानीकार के व्यक्तित्व के आस्फालन लउकऽता । ई बुद्धिजीविता ह जवना के कहानी के गुण ना माने के चाहीं ।

'लाइची' कहानी-संग्रह के भाषा सारण जिला में बोलल जाए वाली भोजपुरी बा जवना में 'रखलन' के 'रखेलन', आइब के 'आएब' आ भीरी के 'भिड़ी' बोलल जाला । कहानियन के भाषा मुहावरन आ कहावतन से अतना समृद्ध बा कि मुहावरन आ कहाउतन के कोशकार लोग एह से लाभ उठाई । भाषा के कतहीं भकचोन्हरपन नइखे बलुक अनुभव आ ज्ञानगर्भित सूक्तियन के ठाठ बा । भोजपुरी भाषा के बहुत गहिर आ गंभीर ज्ञान उषा वर्मा के बा । ऊ 'बान', 'आदत' आ 'धंधा' के अंतर खूब अच्छा से जानेली । 'बखरा' में पुष्पा के मुँह से निकलल 'धंधा' से जवन प्रयोजन सिद्ध होता ऊ बान भा आदत से नइखे सिद्ध हो सकत । 'लाइची' के 'केहू' आ 'राधा' के 'उहे' से निकलेवाला परिवारिक संवाद-रस के भी उहे चख सकऽता जे भोजपुर के संस्कृति के गंगा में गोता लगा

www.bhojpurisahityangan.com

चुकल बा । ऊ ईहो जानेली कि आर्थिक दबाव में पड़ल आ गरीबी के मार झेलत कवनो बाप कइसे बाप से देखते-देखत 'बपसी' हो जाला । माने के परी कि वक्रोक्ति के पूर्ण प्रभा चाहे त संस्कृत में छिटकेला ना त भोजपुरी में । वाग्व्यापार में सादृश्यमूलकता के अलावा अपह्नव आ लाट प्रचलित आलंकारिक शैली के भी सहारा लेल गइल बा । कवनो-कवनो वाक्य त बस एके शब्द के बा । संतुलित वाक्य-विधान के उदाहरण सगरो मिलिहें स जवना के सांगीतिक प्रभाव पड़ऽता– "देवर के बिआह में खबर आइल । ना गइली । जाउत के जनम में खबर आइल । ना गइली ।"– 'ना गइलीं' तुक भा काफिया के काम करऽता ।

एह कहानियन में आधुनिक युग के बेकारी, स्वतंत्रता-वृक्ष के फल चाभेवाला आज के स्वसेवी राजनीतिज्ञन द्वारा स्वतंत्रता-संघर्ष के देशभक्त शहीदन के पत्नी लोग के उपेक्षा, नारी सशक्तीकरण-चेतना, पिता के सम्पत्ति में पुत्री के अधिकार के बावजूद ओकर प्रभावशून्यता, आज के आर्थिक तनाव आ ओह से उपजल फसादन आ बिगड़त अंतरवैयक्तिक आ पारिवारिक संम्बधन वगैरह के छाप बा बाकिर इहनी के उत्तर आधुनिकता एह बात में बा कि इहनी में आपन पुरान रीतिरेवाजन आ लोक विश्वासन के प्रति रुझान बा । लोक जीवन के सही आ सूक्ष्म पहचान के चलते 'लाइची' संग्रह के कहानी खाली पढ़ले ना जइहें स, लोकप्रिय भी होइहें स । सार्त्र कहले बा कि 'आइ हैव रीडर्स बट नो पब्लिक' बाकिर उषा वर्मा के ई कहानी सब शायद अइसन शिकायत के मोका उनका के ना दीहें स । एवमस्तु ।

—(डॉ.)शंभुशरण सिन्हा
एन/14 प्रोफेसर्स कॉलोनी
चित्रगुप्तनगर, पटना-20
दूरभाष : 0612-350484

ज्येष्ठ पूर्णिमा
24.06.2002

www.bhojpurisahityangan.com

लाइची

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

लाइची

आज फिनु मन लाइची के अगल-बगल घूमत वा । ई कवनो नया बात नइखे । जब-जब सूर के बाल-लीला भा जसोदा मइया के वात्सल्य-भाव पढ़ावे के पड़ेला लाइची के इयाद हरिअरा जाला । आजो क्लास में सूर पढ़ावे के पड़ल ह । भरसक हम चाहीं ना सूर पढ़ावे के । पता ना काहे मन उदास हो जाला । बहुत देर ले कवनो काम में मन ना लागे । पढ़ावे के बेरा त घुमा-फिरा के कहहीं के पड़ेला कि लइका के लीला आ महतारी के ममता के वर्णन के मामला में सूरदासजी बेजोड़ बानी । इहाँ तक ले कि अंग्रेजी साहित्य के लौंग फेलो, वर्ड्सवर्थ आ विलियम ब्लेको उनकर बराबरी ना कर सकस । माई-बेटा त पहिलहूँ रहलन । बाकिर सूरदास जी जवना बारीकी से ओह नाता के अपना भीतरी आँख से देखनी-देखवनी, पहिले केहू ना देखले-देखवले रहे । आगहूँ जे देखी-देखाई ऊ सूरदास जी के जूठे रही । बाकिर ई कहते मातर हमरे मन के एगो कोना हमरा विरोध में खड़ा हो जाला । अपने भीतर से आवाज आवेला– "लाइची के मामला में का खयाल बा? ऊहो सूरदास जी के जूठे बा का?" भीतरे-भीतर केहू कहेला– "कन्हाई जइसन पूत के जसोदा जइसन माई त केहू हो सकेला । बाकिर बड़का जइसन पूत के लाइची जइसन माई बने खातिर माई के खाँटी करेज चाहीं ।"

बात बीस साल पुरान ह । ई बात अलग बा कि हमरा बुझाला कि आजे के बात ह– एकदम ताजा-तरीन आ टटका । हम नया-नया कालेज के नोकरी में आइल रहनी । एक बेर घर से बे पूछले युनिवर्सिटी सर्विस कमीशन में एगो इन्टरभ्यू दे देहनी । ओही पहिलका इन्टरभ्यू पर मोतिहारी महिला कॉलेज में व्याख्याता पद पर नियुक्तियो हो गइल । ऊ जमाना दोसर रहे । बिना पैरबिओ के नोकरी मिलत रहे । ज्वाइन करे खातिर तार से खबर आइल त घर मे खलबली मच गइल । हमरा के घर से दूर नौकरी खातिर जाये देबे के केहू तइयार ना रहे । बाकिर हम ई मौका हाथ से निकले देबे के तइयार ना रहनी । आखिर माई-बाबूजी के हमरा जिद के आगे हारे के पड़ल । एक दिन हम मोतिहारी पहुँच गइनी । कॉलेज के हाता के एगो कोना पर प्रिंसिपल के क्वार्टर रहे आ दोसरका कोना पर होस्टल रहे । देहात के दस-बारह गो लइकी रहत रहली सन । एगो कोठरी हमरो मिल गइल । लाइची दाई प्रिंसिपल साहब के डेरा में काम करत

www.bhojpurisahityangan.com

रहली । हम गइनी त हमरो काम करे लगली । लम्बा, पातर आ मर्दानी चाल-ढाल के तीस-पैंतीस के औरत । दू गो बेटा रहलन सन – बड़का-छोटका । लाइची ओकनी के नाँव धरे के झंझट-झमेला में ना पड़ली । जवना के पहिले जनम भइल ऊ बड़का आ जवना के बाद में जनम भइल ऊ छोटका कहाये लागल । इंटर के कवनो इम्तहान चलत रहे तवे छोटका के जनम भइल । एही से छोटका के एगो नाँव 'इंटर' पड़ गइल । छोटका एको साल के ना भइल रहे कि ओकर बाप गुजर गइलन । जे केहू दोसर बिआह के सलाह दिहलस लाइची झाड़ू से ओकर बोखार झाड़े के तइयार हो गइली । प्रिंसिपल साहब के दया-माया से लाइची के खेवा-खर्चा चले लागल । प्रिंसिपल साहब रहवो कइली बहुते मयार । लाइची के कवो कवनो कपड़ा-लत्ता कीने के ना पड़ल । उनके घर के नया-पुरान से तोपाइल रहस । बड़को के कपड़ा-लत्ता मिलिये जात रहे उनका इहाँ के लइकन के देह के । छोटका त पाँच-छव साल ले जाड़ा-गर्मी-बरसात एगो धागा देह पर ना ध इलस । दिसम्बर के कटकटी जाड़ा में एकदम नंग-धड़ंग घूमत चले । ना कबहूँ नाक बहल ना छींक आइल । जर-बोखारो कवो ना सुनाइल ।

लाइची के संगे-संगे दूनो लइका आवऽसन । बड़का तनी बुझनउक रहे त होस्टल में कमे आवे । बाकिर छोटका के त होस्टले घर-दुआर रहे । भोरे-भोरे माई के साथे आवे त हमरा के छू के जगावे– "उठ्ठ! चाह ना देवे का?" सबेरे-सबेरे हम चाय पीं त ओकरो के पावरोटी के एगो-दूगो टुकड़ा आ चाय दे दीं । लाइची चाय ना पीअस । शुरू में हम चाय देहनी त खूबे हँस के कहली– "दीदी जी, हम एक बेर पीले रहनी त बेजोड़ ठोर जरल रहे । तब से ना पीं ।" खाये-पेन्हें खातिर लाइची के कवनो चाव हम कबहूँ ना देखनी । एगो अजीबे तरह के विदेहपन रहे उनका में । जवन खींचवो करे आ खीसो बरावे ।

एक दिन बड़का प्रिंसिपल साहब के हाथघड़ी उठा के मोहल्ला के एगो लइका के हाथे पाँच-छव रुपया में बेंच दिहलस । लाइची के एकर कवनो जानकारी ना रहे । लाइची खुद कवो केहू के कवनो चीज ना उठवली । हम आपन रुपया-पइसा कवो बक्सा-पेटी में ना रखनी । तकिये के नीचे रखाव आ ओहीजे से खरच होखे । लाइची अकेला कोठरी में जास । हम उनका के कोठरी के चाभी देके कवो बाजार चल जाईं, कवो क्लास करे । लाइची कवो लालच ना कइली । गरीबी से आदमी चोर ना होखे । लालच से होखेला । लाइची गरीब रहली । लालची ना रहली । बाकिर लइका के जात । गलती कर देहलस । लाइची कॉलेज के नजदीके दूनो लइकन के ले के एगो किराया के कोठरी में रहत रहली । मोहल्ला के बात घूमत-घूमत प्रिंसिपल साहब के कान में पड़ल । घड़ी मिल गइल । पाँच रुपया में बेंचल एच॰ एम॰ टी॰ घड़ी कॉलेज के एगो चपरासी दस

www.bhojpurisahityangan.com

रुपया दे के दोसरा लइका से कीन के ले ले अइलन । ओही खोज-बीन में पता चलल कि बड़का के जूओ के लत पड़ल बा । ओकरा के डेरआवे खातिर प्रिंसिपल साहब पुलिस इंस्पेक्टर के फोन कइली कि कवनो सिपाही के भेज के बड़का के डेरवा-धमकवा दीं । मंशा इहे रहे कि लाइची के बड़का बिगड़े से बाँच जाव । बाकिर उल्टा हो गइल । बड़का आउर बिगड़े लागल आ सिपाही के एगो रोजी मिल गइल । हर महीने दस गो रुपया अइँठ लेस लाइची से । ना दिआव त थाना में ले जा के मारस-पीटस बड़का के ।

ऊ छुट्टी के दिन रहे । एतवारे रहे साइत । जनवरी के महीना आ मोतिहारी के जाड़ । हम घाम में आराम कुर्सी पर बइठ के कवनो किताब पढ़त रहनी । लाइची आ के धम्म से बइठ गइली । मरुआइले कहली– "दीदी जी, दस गो रुपया दीं ।" हमरा मुँह से अनासो निकलल– "काहें खातिर?" पूछ के हम सकुचा गइनी । गरीब औरत से पइसा के इस्तेमाल ना पूछे के चाहीं । कम पइसा आ ढेरे काम रहेला । बेकार खर्च करे के कवनो गुंजाइसो ना रहे ओकरा । लाइची गँवे-गँवे कहली– "फिनु सिपाही जी आइल रहलन हँ । पइसा ना देब त थाना में ले जा के मरिहन-पिटिहन सन बड़का के ।"

हमरा बड़का के काल्ह के करतूत इयाद पड़ गइल । एड़ी के लहर कपार पर चढ़ल । तनी तेज आवाज में कहनी– "मारे द । काल्हे नू तोहरा के उहे बड़का कॉलेज के गेट पर मरले रहे घसीट-घसीट के – एतना मार कि तोहार साड़ी तार-तार हो गइल । तबो ओकरा ना लाज-लेहाज भइल ना दया-माया लागल । ऊ त कॉलेज के चपरासी लोग देख लेहलस त दउड़ के छोड़ावल ना त तोहार जान ले लीत । आज ओही बड़का खातिर पइसा माँगत बाड़ू । जाये द थाना । जब लात-जूता पड़ी तब ओकर दिमाग ठीक होई ।" एगो लम्बा-चौड़ा भाषण देके हम चुप भइनी त देखनी लाइची हमरा के टुकुर-टुकुर ताकत रहली । हमरा बुझाइल कि हमार भाषण असर कइले बा । अब सिपाही के हर महीना रुपया देबे के झंझट खतम हो जाई । हम निश्चिंत होके हाथ के किताब पर नजर डलनी कि लाइची के बोली सुनाइल– दीदी जी, हम माई नू बानी ।"

हम बे कहले छोटहन हो गइनी । हमार डिग्री, नौकरी भा माई के महिमा पर पढ़ल-सुनल सब साहित्य ओछ लागे लागल । चुपचाप कोठरी में गइनी । तकिया के नीचे से दस के एगो नोट उठवनी आ लाइची के हाथ में आके ध देहनी । लाइची उछाह से उठली आ गेट के तरफ चल दिहली । हम उनका के जात देखत रह गइनी । लाइची के परिछाईं बड़हन होत चल गइल ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

दुलार

दीदी के दुलार से शिवरानी अकुता जाली । चालीस बरिस बीत गइल इनका साथे रहत । शिवरानी के अपना माई के इयाद नइखे । गाँव-घर के लोग कहेला कि बरिस भर के रहनी त माई मर गइली । बाबूजी कलकत्ता रहत रहनी । साल भर छव महीना पर घरे आईं । महीने-महीने डाक पिउन कुछ रुपिया दे जास । बाबूजी भेजीं । कुछ खेती-बाड़ी रहबे कइल । काम चले । खाये पेन्हें के कवनो दुख ना रहे । घर में पुरनिया इया रहली आ दीदी । माई के मरते दस बरिस के दीदी रातो-रात सेआन हो गइली । माई के जिनगी में शिवरानी के गोदी में लेके घुमावे में आनाकानी करेवाली दीदी, अब दिन भर शिवरानी के टँगले रहस । उनके नीनी सुतस-उठस । इया के रहला के बहुते बल रहे । बाकिर लइका पोसल उनका बस के बात ना रहे । ऊ त आपनो लइका ना पोसले रहली । एकेगो त लइके भइल । उहो उनकर सासे पोसली ।

शिवरानी के इयाद बा दीदी के बिआह । नगदे आठ बरिस के रहली । बरियात, बाजा-गाजा देख-सुन के खूबे खुश रहली । बाकिर बिदाई के बेरा एतना रोअली कि लोग के इनका माई के मरल इयाद पड़ गइल । रोअे के दीदीओ कम ना रोअली । उनकर रोआई नइहर छुटत बेटी के रोआई रहे । शिवरानी के त दुनिया अन्हार होत रहे दीदी बिनु । अइसन पछाड़ खा के गिरली जे सभकर आँख लोरा गइल ।

एको महीना ठीक से ना बीतल होई कि दीदी चल अइली । एकदमें गुमसुम आ मुरझाइल । बिआह के सात दिन के बाद बाबूजी आ चचेरा भाई भूलन कलेवा लेके गइल रहे लोग । लौटला पर भूलन त ठीके रहलन । बाकिर बाबूजी उदास रहनी । शिवरानी के समझ में कुछ ना आइल । बाबूजी के उदासी से चिन्ता में पड़ गइली । अब सेआन होखे के बारी उनके रहे । अपना औकात से बढ़ के बाबूजी के सेवा-टहल करस । बाबूजी के उदासी में कवनो फरक ना पड़ल । उदासे-उदास पनरह दिन के बाद कलकत्ता चल गइनी ।

एक दिन साँझ के दीआ-बाती के बेरा दीदी गँवें-गँवें आ के अँगना में ठाढ़ हो गइली । पाछे-पाछे बाबूजी अइनी । पहिले से आवे के कवनो सान-गुमान ना रहे । इया एकदमे भकुआ गइली । भकुअइली त शिवरानीओ । बाकिर इनका

www.bhojpurisahityangan.com

खुशीओ भइल दीदी के देख के । इया खुश ना भइली । बाबूजी इया से फुसफुसा के कुछ बतिअवनी । इया थहरा के भुइयाँ बइठ गइली । शिवरानी के त बहुते बाद में पता चलल कि दीदी के दुल्हा के पहिलहूँ एगो बिआह भइल रहे आ दीदी कवनो हाल से सौतिन पर रहे के तइयार ना रहली । कलेवा बेरी बाबूजी समझा-बुझा के आइल रहनी । लोक-लाज के फिकिर ना रहीत त साथे लिअवले अइतीं । धोखा के सदमा से उहाँ के मन टूट गइल रहे । एही से जब कलकत्ता में दीदी के रोअत-कानत चिट्ठी मिलल त बाहरे-बाहर जा के बोला ले अइनी । फेरु दीदी के ससुरा जाये के कवनो बात ना उठल । ना उहाँ से केहू आइल, ना इहाँ से केहू गइल । दीदी नइहरे में रह गइली ।

दीदी अब पहिलकी दीदी ना रहली । कुछ दिन ले त एकदमे गुमसुम रहस– उदास-उदास । फेरू बोले के शुरू कइली त एतना बोलस चीखस-चिचिआस कि मन अउँजिआ जाव । शिवरानी के बुझाव कि हमार दीदी बदल गइली । पता ना कहाँ हेरा गइली हमार दीदी ।

आठ-नव बरिस बीत गइल । बाबूजी रिटायर होके आ गइनी । इया गुजर गइली । घर में दीदी के मलिकाँव रहे । शिवरानी के बिआह बेरी बड़ा छिल्लन भइल । दूध के जरल माठा फूँक के पीयेला । दीदी माठा के पँजरे जाये के तइयार ना होखस । जहाँ-जहाँ बिआह के बात चले कवनो-ना-कवनो पय निकाल के छाँट देस । उनका ना कवनो घर पसन पड़े, ना कवनो वर । बाबूजी अनसा गइनी । गोतिया-देआद समझा-बुझा के थाक गइलन । दीदी कवनो घर-वर खातिर हामी ना भरली । बाबूजी एकदमे थाक गइल रहनी । पिछला-पछात लगन में एक जगह बात चलवनी आ दीदी के नाहिंओ चाहला पर बिआह के दिन रोप देहनी । दीदी फेंटा कस के काम कइली । शिवरानी के घर-वर अच्छा मिलल । बड़ा नीमन दुल्हा रहलन । गाँव-घर के लोग बड़ा गुनगान कइलस । मोहन त मोहने बाड़न । सबके मोह लेहलन । बस, दीदी के मुँह ना खुलल । ना नीमन कहली, ना बेजाँय । शिवरानी विदा होके ससुरा चल गइली ।

कलेवा लेके भूलन के साथे बाबूजी गइनी । जाये लायक रहनी ना । बोखार रहे । बाकिर बेटी के दाह आ दूध के जरल । गइनी । शिवरानी के सुख-सुविधा आ मान-सम्मान देख के बाबूजी के तबिअत हरिअरा गइल । बोखारो उतर गइल । साइत हदास के बोखार रहे । तीसरा दिने दूनो चचा-भतीजा अपना गाँवे लवट गइलन ।

चार महीना के बाद चचेरी बहिन के बिआह पड़ल रहे । बोलावा आइल । भूलन के छोटका भाई झूलन बोला के ले गइलन शिवरानी आ उनका

www.bhojpurisahityangan.com

पाहुन के ।

नइहर के अँगना में गोड़ राखते शिवरानी के बुझा गइल कि अबकी फेरू हमार दीदी बदल गइली । एकदमे उखड़ल-उखड़ल बात-बेहवार रहल दीदी के । ना सेनुर लगवली ना दही-चीनी खिअवली । अइसन ताकस कि भीतरी ले काँप-काँप जास शिवरानी । बुझइबे ना करे कि कवना कसूर खातिर दीदी गभुआइल बाड़ी । खाना-पीना त भूलने के घरे होत रहे । मौका पा के शिवरानी के सखी-सहेली उनका दुल्हा के घेर लेस । खूब हँसी-ठिठोली होखे । भउजाई लोग खूबे चुटकी लेवे । शिवरानी बहाल रहली । खूबे खुश नीमने-नीमने बिआह बीत गइल । पाहुन अपना घरे जाये के तइयार भइलन । दोंगा के दिन ना पड़त रहे । इहे तय भइल कि अगिला महीना में कवनो नीमन दिन देखा के शिवरानी के दोंगा क दिआई । पाहुन अइहन आ अपना बेकत के ले जइहन । बाबूजी त पाहुनो के दस दिन रहे के कहनी । बाकिर गृहस्थी के दिन रहे । पचास बीघा जोत जमीन के मालिक के एतना फुरसत कहाँ कि दस दिन ससुरारी में काटस । ऊ त शिवरानीओं के इहाँ छोड़े के ना चाहत रहलन । दोंगा के साइत के चलते छोड़े के पड़त रहे ।

पाहुन के जाये के बेरा दीदी अपना कोठरी में समा गइली । बाबूजी के गोड़लगी के बाद पाहुन दीदी के गोड़लगी खातिर उनका कोठरी में गइलन । संगे-संगे चलत शिवरानी चउकठे लगे खाड़ हो गइली । हिम्मते ना पड़ल दुल्हा साथे दीदी भीरी जाये के । दीदी फुसफुसा के पाहुन से बतिअवली । दुआरी पर शिवरानी के एतने सुनाइल– ".....चरख एह घर के खानदानी बेमारी ह । माईओ के रहे .....।" शिवरानी भक्क ! पाहुन कोठरी से निकललन त चेहरा तमतमाइल रहे । ना दाँये देखलन, ना बाँये । अटैची उठा के चल देहलन । केंवाड़ी के पल्ला धइले शिवरानी उनकर गइल देखते रह गइली ।

महीना पर महीना बीतत चल गइल । शिवरानी के ससुरा से ना कवनो बोलावा आइल ना कवनो चिट्ठी, ना पत्री । ना पाहुने अइलन । बाबूजी गुजर गइनी । शिवरानी नइहरे बाड़ी । दीदी खूबे दुलार देखावेली । एतना कि मन अकुता जाला शिवरानी के ।

www.bhojpurisahityangan.com

बखरा

अव जा के वकीलाइन के तनी सँवास मिलल ह । पाँच बजे भोर से जो भाग-दउड़ शुरू होला त दस बजे दिन ले मुँह धोये के सँवास ना मिले । मुरारी खा-पी के बैंक चल गइलन । पुष्पा उनका साथहीं खा के टी॰ वी॰ पर कवनो प्रोग्राम देखे लगली । दूनो लइको खा-पी के इस्कूल चल गइलन सन । वकीलाइन लोटा-दतुअन उठा के मुँह धोये चललीं त जूठ बरतन पर नजर पड़ गइल । लोटा-दतुअन एगो कोना में रख दिहली । सब जूठ बरतन बटोर के नल के नीचे रखली आ नल खोल के पानी से लबालब भर दिहली । फूलल रहेला त माँजे में दिक्कत ना होखे । जेठ बइसाख त हइले ह झुराठी के दिन । खरकटल बरतन माँजे में पसीना छूट जाला । काल्हे पुष्पा टोकले रहली– "देखीं, रउरे चलते हमरा जूठकठार निकल गइल बा ।" रोटी बेलत रहली । हाथ थथमाइल । क्षण भर खातिर बेलना ठहर गइल । बाकिर कवनो जवाब ना दिहली । पुष्पा ओर भर नजर देखहूँ के हिम्मत ना पड़ल । ना कवनो सफाइये देवे के मन कइल । कवन ठेकान । बुढ़ारी के आँख आ झुराठी के दिन । हो सकत बा कि कवनो बरतन के कवनो कोना-कोनी में कहीं तनी जूठ लागल रह गइल होखे । मने-मन सोच लिहली कि अब माँजे के पहिलहीं जूठ बरतन भरपूर पानी में फूला देब । ना जूठ के डर रही आ ना जूठकठार के ।

नहा-धो के ऊपर के खुलल कोना में सूरज भगवान के जल ढारे गइली त नीचे बिहारी के ओसारा में ताके लगली । इहे इनकर रोज के नियम हो गइल बा । दिन भर त कामे में अझुराइल रहेली । बस, पूजा के बेरा तनी देख लेली वकील साहब के । जहिया उहाँ के मनगर लउकीले तहिया इनकरो मन हरियरा जाला । जहिया उदास रहीले इनका अनासो रह-रह के रोआई छूटे लागेला ।

वकील साहब अपना खटिया पर मन मरले चुपचाप चउका के दुआरी ओर मुँह कइले बइठल रहनी । इनका बूझत देर ना लागल कि अबहीं ले उहाँ के जलपान नइखे मिलल । कहाँ सात बजे सबेरे जलपान के आदत! कहाँ दुपहरिया ले मुँह में कुछुओ ना गइल । करेजा खँखोरे लागल । तीस बरिस पहिले के एगो पोसुआ कुकुर के इयाद पड़ गइल । तब बिहारी आ मुरारी के जिद्द पर एगो कुकुर पोसाइल रहे । बड़ा नीमन, एकदम सुधा । कहियो कवनो बरतन में मुँह ना डललस । ना चउका में गइल । जब भूखाव, चउका के दुआरी पर बइठ के

www.bhojpurisahityangan.com

टुकुर-टुकुर ताके लागे । वकीलाइन देखते बूझ जास कि भूखाइल बा । ओकरा कटोरा में खायक डाल के सरका देस । बाकिर आज घर में ना ओइसन कवनो कटोरा बा, ना ओइसन खायक जवना पर वकीलाइन के एतना हक होखे कि जेकरा आगे चाहस सरका देस । वकीलाइन के आँख लोरा गइल ।

जब से वकील साहब के कचहरी आइल गइल छूटल, दूनो बेटा लोग बँटवारा पर तूल गइल । घर-दुआर आ चीज-बतुस त बटाहीं के रहे । बँटाइल । साथे-साथे माइओ-बाबूजी बँटा गइलन । बड़का बेटा बिहारी मकान के निचलका हिस्सा में रहे लगलन । छोटका बेटा मुरारी के ऊपर वाला मकान मिलल । बाबूजी बिहारी के बखरा में पड़नी । माई के मुरारी अपना बखरा में राख लिहलन । कचहरी मे बड़हन-बड़हन लोग के बोलती बंद करेवाला वकील साहब के बोलती बंद हो गइल । लइकाइयें से अपना हाजिर जवाबी आ सूझ-बूझ खातिर 'अकिला' कहायेवाली वकीलाइन के अकिल हेरा गइल । दूनो बेकत एक दोसरा के मुँह ताकते रह गइल लोग । ठीके कहल गइल बा कि जे केहू से ना हारे ऊ अपना औलाद से हारेला । निचलका खंड के ओसारा में वकील साहब के खटिया डाल दिआइल । सामने इस्टूल पर उनकर सूटकेस रखा गइल । ऊपर रसोई घर के कोना में वकीलाइन के चउकी पड़ गइल । बरतन-बासन, अँचार-मसाला के बीच में जगह बना के वकीलाइन आपन एगो पेटिओ अँटा लिहली । बेटा-पतोह के गृहस्थी में जोता गइली । झाड़ू-बुहाड़ू, बरतन-बासन करस, बनावस, खिआवस, खास । बाबूजी के बिहारी किहाँ सवेरे पहर दूध आ साँझिया पहर तरकारी ले आवे के जिम्मा मिलल । बिहारी के त अपना ऑफिसे से फुरसत ना मिले । लइकन के घरेलू मास्टर के छुट्टी दे दिआइल । वकील साहब पोता-पोती के पढ़ावे लगलन । बाकिर बाबा अब बाबा नीयर ना लागस पोता-पोती के । अब ना चाकलेट ले आवस, ना मिठाई, ना खेलवना । बिना कुछ लिहले ना लइका परचेला ना सेआन चीन्हेला । बाबा के एक आवाज पर दउड़ल आवे वाली पोती अब बगले से बात के अनसुना करके चल जाले । बाबा के साथे हमेशा घूमे के तइयार पोता अब बोलवलो पर अनठिआ के निकल जाला ।

छत पर सूरुज भगवान के जल के लोटा लिहले वकीलाइन एकटक वकील साहब ओर ताकत रहली– "हमरा में एतना सत रहित, हम अइसन पतिव्रता रहितीं कि लोटा के जल दूध बन जाइत त .....।"

आगे कुछ सोचल ना गइल उनका से । लोरे से सूरुज भगवान के अरघ दिआ गइल । लोटा के जल लिहले चउका में घुस गइली । सभे त खाइये लेले रहे । अपना बखरा के खायक थरिया में परोसली । एक हाथ में खायक दोसरका

www.bhojpurisahityangan.com

हाथ में पानी ले के जइसे उठत बाड़ी कि का जाने कहाँ से, कइसे पुष्पा सामने आ के खाड़ हो गइली । कान में उनकर झनझनात आवाज पड़ल– "फेरू रउरा ई धंधा शुरू कर दिहनी ? कहाँ जात बा ई खायक ?" वकीलाइन के काटऽ त खून ना । एकदम सन्न । चारे दिन पहिले के बात ह । वकील साहब के मुँह सूखल देख के छते पर से इशारा से पूछले रहली– "खइनी की ना ?" वकील साहब मुड़ी हिला के इनकार कइलन । वकीलाइन अपना बखरा के खायक परोस के ले गइली । वकील साहब खात ना रहलन– "तोहार घट जाई ।" कह दिहली– "हम त खा लिहले बानी । एतना बाँचल रहल ह । खा लीं ।" वकील साहब भुखाइल त रहले रहलन । चुपचाप खा लिहलन । बिहारी के कनिया कहीं पूजा में गइल रहली । बाकिर पुष्पा अपना जंगला से ई सब देख लिहली । खिआ-पिआ के अइली त पुष्पा के गभुआइल देख के इनका शंका भइल बाकिर ई ना सोचली कि एके बेर अइसन हो जाई । रात के मुरारी एकदम आग बबूला हो गइलन– "माई! तू कान खोल के सुन ले । हमरा घर में ई ना चली कि तें चोरी करके बाबूजी के खिअइबे । बाबूजी बिहारी भइया के बखरा में बाड़न । उनकर हाल ऊ जानस ।" बहुत हिम्मत जुटा के एतने कहे पवली– " बाबू! चोरा के कहाँ दिहनी ? ऊ त हमार बखरा रहे.....।" मुरारी चिल्लइलन– "तोर बखरा रहे त तोरा खाये खातिर, ना कि बाँटे खातिर । पइसा त हमरे नू लागल रहे ? पेट में जे खा ले । एक दाना घर से बाहर ना जाये के चाहीं । फेरू अइसन ना होखे । होई तब देख लीहे । हमरा से खराब केहू ना होई ।" आज के बात सुन के त मुरारी पता ना का कर दींहन । हाथ के थरिया कब फ्रिज में राख दिहली पते ना चलल । पुष्पा झमाक से मुड़ के लवट गइली ।

साँझ के छत पर एगो कोना में बइठ के पुष्पा अपना सहेली से बतिआवत रहली– "हमनी दूनो बेरा हरमेसा एके थरिया में सँगहीं खाइले । अलगे-अलगे खाये के बात त हमनी के सोचिए ना सकीं चाहे आपस में बातावाती काहे ना भइल होखे ।"

छत के दोसरका कोना में उनकर दूनो लइका आपस में बाजी लगावत रहलन सन । बड़का कहे– "तू देख लीहऽ । बाजी लगा ल । हम डॉक्टर बनब त माँ हमरा बखरा में आ पापा तोहरा बखरा में रहीअन ।" ओने छोटका कहे– "तू देख लीहऽ । लगावऽ बाजी । हम इंजिनियर बनब । माँ हमरा बखरा में आ पापा तोहरा बखरा में रहीअन ।"

वकीलाइन चउका के दुआरी पर बइठ के तरकारी काटत में आपन अँगुरी काट लिहली ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

रकत सेनुर

अगस्त के महीना सुराज प्रेमियन खातिर रमजान के महीना ह । ओतने अमनिया । ओतने खास । अंगरेजी में अगस्त के बड़ा नीमन मानी होला – पूजनीय – माने पूजा के लायक । पुराणन के मोताबिक हमनी किहाँ अगस्त नाँव के एगो संत रहनी जे एक बेर विन्ध्याचल पहाड़ के ओठँगा देले रहनी आ एक बेर समुन्दर के चिरुआ में भर के पी गइल रहनी । मतलब ई कि अगस्त एगो खास नाँव ह । कुछ लमहर, कुछ विचित्र, कुछ महान – कुछ अजूबा कर गुजरेवाला नाँव । साइत एही से सैकड़ों बरिस के पुरान गुलामी के जुआ हमनी के कान्ह पर से अगस्ते में उतरल । साइत एही से बहुते नीमन-नीमन जुझारू वीर बहादुरन के शहादत के टीका लगावे के सुतार अगस्ते में भेंटाइल ।

तारा दीदी के त बाते कुछ दीगर बा । उनका खातिर त इहे एगो महीने बा साल भर में । एकरे पेंड़ा जोहत-जोहत उनकर बाकी दिन सिरा जाला । अगस्त में अजीबे हो जाली । कबो एतना खुश कि जानु दुनिया भर के सुख उनका अँगना में बरिसत बा । कबो एतना उदास कि जानु खालिस उदासिये के माटी से बनल बाड़ी । कबहूँ कबहूँ उनका आँख में गजब के चमक समा जाला । एकदम जोन्ही लेखा बरे लागेला । बुझाला जइसे कवनो देवी-देवता के आँख ह । कबहूँ आँख एतना लोराला कि भादो झूठ हो जाला । 15 अगस्त के बारह बजे रात के उठ के जब खनक आवाज में गावे लागेली सोहर कि– "अधे राति होरिला जनमले, महल उठे सोहर हो" त आस-पास के सब लोग रो देला । सोरह अगस्त के उनका पर एगो दोसर जुनून सवार हो जाला । सबेरहीं से तइयारी में लाग जाली । अइसे त फुलेना बाबू के फोटो पर रोजे फूल चढ़ावेली । बाकिर ओह दिन खातिर खास तइयारी होला । खूब जतन से फूल-अच्छत, चनन, रोरी सजा के रखेली । आरती सजावेली । अपने हाथे गेन्दा-गुलाब के फूल के माला बनावेली । टीन के पुरान पेटी में से एगो पुरान लुगा निकालेली जवना पर जहाँ-तहाँ खून के पुरान दाग रहेला । उहे ओढ़ के पूजा के आसनी पर बइठ जाली । भरपूर लगन से पूजा करेली । फुलेना बाबू के फोटो के सोझा हाथ जोड़ के देर ले पता ना का बुदबुदाली-बतिआवेली । कबो-कबो कुछ बात दोसरो के कान में पड़ जाला– "..... देख लीं अपना खून से रँगाइल चुनरी । इहे नू देले रहनी रउरा

www.bhojpurisahityangan.com

आखिरी दिने । तब से जोगा के धइले बानी । एही परब के पेन्हीले । आज हमनी के आजादी के उमिर में एक बरिस आउर जोड़ा गइल । इहे नू हमनी के औलाद ह । आसीस दीं कि दूधो नहाव, सपूतो फलो । राज सुराज बनो ....."

गाँव के पुरनिया लोग कहेला कि तारा दीदी के ई नइहर ह । एही महाराजगंज के सिहउता बंगरा गाँव में इनकर जनम भइल । बाप-महतारी के दुलारी एकलौती संतान रहली । नइहरे में रह गइली । नाँव त ह तारा रानी श्रीवास्तव बाकिर गाँव के लइका-सेयान सभे तारा दीदी कहेला । 1933 में जब इनकर बिआह बाबू फुलेना प्रसाद जी से भइल त गाँव-जवार में ढेर दिन ले पाहुन के रूप के चर्चा रहल । उनकर ऊँचा कद, चौड़ा छाती आ रोबीला चेहरा जे देखे से कुछ देर ले देखते रह जाव । पंडिताइन काकी त कहेली कि एह सुन्नर जोड़ी के केहू के नजर लाग गइल । अच्छा भला तीस साल के तगड़ा जवान पाहुन जालिम अंगरेजन के गोली के शिकार हो गइलन । पंडित काका के ई बात ना सोहाला । कहेलन, "उनका के मारेवाला के जनमल बा? अंगरेजन के गोली गइल । पाहुन त अमर हो गइलन ।

हाई इस्कूल पास कइला के बाद फुलेना बाबू पटना में एफ० ए० में एक साल पढ़नी कि गाँधी बाबा के अहिंसक आन्दोलन के बिगुल कान में पड़ल । फेनु के पढ़ता कालेज में । घरहीं में आपन पढ़ाई-लिखाई करे लगनी आ गाँधी बाबा के चेला बन गइनी । बिआह भइये गइल रहे । अपना माई-बाबूजी के समझा-बुझा के तारा दीदी के पढ़ावे के बन्दोबस्त कर देहनी । कान मे गँवें-गँवें ई मन्तर देबे लगनी कि "तारा रानी, तू नारी जरूर हउअऽ बाकिर अबला ना हउअऽ – सबला आ बहादुर बाड़ू ।" मन्तर के असर होखे लागल । तारा रानी बहादुर सबला बने लगली । बिआह के बेदी पर बइठ के सप्तपदी त सभे सुनेला बाकिर गुने के काम केहुए-केहुए करेला । फुलेना बाबू गुननी । सुराज के जऽग (यज्ञ) में अपना साथे तारा रानी के ले के कूदनी । भाषण, आन्दोलन, जेल – सब साथे-साथे चले लागल । साथी-संघाती लोग चुहलो करे कि अब त सरकार गँठ-बन्धन करके दुल्हा-दुलहिन के 'कृष्ण मंदिर' में बोलावे लागल बा । जेल के कुछ साथी लोग एह जोड़ी के 'देवकी-वासुदेव' आ अंगरेज सरकार के कंस कह के आपस में बतिया लेव लोग । सुराज के लड़ाई में तन-मन से लागे खातिर ई दूनो बेकत देह से ऊपर उठ के मन के मीत बन गइल । अपनापन आउर गहिरात गइल । सुराज लेवे के संकल्प आउर मजबूत होत गइल ।

ऊ 1942 के सोरह अगस्त रहे । महाराजगंज थाना पर कब्जा करे खातिर अहिंसक आन्दोलनकारियन के भारी भीड़ जमा होखे लागल । लोग चलत

www.bhojpurisahityangan.com

जाव । भीड़ वढ़त जाव । जे ओह राह से निकले जुलूस के साथे लाग जाव । इस्कुलिया लइका सन इस्कूल से बाहर निकल अइलन सन । भीड़ उमड़त गइल । अजीबे समा बन्हा गइल रहे । जुलूस में आगे-आगे फुलेना बाबू रहनी । महिला दल के अगुआई तारा रानी करत रहली । फुलेना बाबू आपन जोरदार टनक आवाज में सुराज के पियास जगावे वाला जोरदार भाषण देत जात रहनी । बुझात रहे जानु आजे जय-छय क लेबे के बा । जे होई से आजे होई । चाहे एह पार चाहे ओह पार । सुराज के पियास बढ़त गइल । एह हद तक बढ़िआइल कि जिनिगी के मोह छूट गइल । सामने 12 गो संगीन, 25 गो लाठी आ पाँचगो भाला तनल रहे । बाकिर सब बेकार । सब बेमानी । सब बेअसर । द्रोपदी स्वयंवर में अर्जुन के सामने सब बिला गइल रहे – राजा द्रुपद के दरबार, देश-विदेश के सजल-सँवरल वीर राजकुमार, पोखरा, जाट, नाचत मछरी सब । बस, मछरी के आँख के पुतरी भर लउकत रह गइल । फुलेना बाबू के उहे हाल रहे । सब अलोत हो गइल रहे । सोझा लउकत रहे खाली महाराजगंज थाना पर कब्जा – हाथ के तिरंगा उहाँ फहरावे के जोश । अंगरेजन के लाठी औरत-मर्द पर बहुत बेदर्दी से बरसत रहे । सिर पर कफन बाँध के चलेवाला के बल कई गुना बढ़िया जाला । फुलेना बाबू लाठी आ भाला से आज रुके वाला ना रहनी । आठ गो गोली आ-आ के लागत चल गल । देह छलनी हो गइल । बाकिर तिरंगा फहरा के मननी । नउआँ गोली लागे के पहिले तारा रानी पुलिस के लाठी के मार झेलत ढहत-ढिमिलात अपना मन के मीत आ सुराज जऽग (यज्ञ) के साथी लगे पहुँच गइली । अबहीं अपना गोदी में अपना सुहाग के सहेजते रहली कि नउआँ गोली सनसनात आइल आ फुलेना बाबू के कपार के आर-पार हो गइल । खून के फव्वारा छूटल । तारा रानी के माँग रकत सेनुर से भर गइल । 'अमर शहीद', आ 'सती तारा रानी' के जयजयकार से आसमान थर्रा उठल ।

देर रात तक लोग ओ जोड़ी के गोड़ लागे आवत रह गइल । पच्चीस बरिस के तारा रानी शहीद शौहर के रकत से भरल माँग आ रँगाइल चुनरी में बइठल रहली । इनका आँख में लोर ना रहे । लुत्ती बरसत रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

फगुआ

टीसन पहुँच के प्रकाश चारो ओर तकलन । प्लेटफारम एकदम खाली रहे । ना जात्री, ना कुली, ना टी॰ टी॰ बाबू । खाली टीसन मास्टर के ऑफिस में एगो लैंप टिमटिमात रहे । चैनपुर टीसन पर त अनदिना में असहूँ कवनो भीड़-भाड़ ना रहेला । फेनु आज त फगुआ ह । ऐन फगुआ के दिने भीड़ कहाँ से आई? आ ऊहो रात के? दूर-दराज से आवे वाला एक-दू दिन पहिलहीं आ गइल होई । बाँचल खुचल लोग आज सबेरे ले अपना-अपना घरे पहुँच गइल होई । आज घर से के जाई कि टीसन पर लउको! जाये के त प्रकाशो के कहीं नइखे । जास कहाँ आज? ऊ त जइसे बाई के झोंक में छव किलो मीटर पैदल चल के टीसन तक आ गइलन हँ । घर से चले बेरा एतना होसे कहाँ रहल ह कि कहाँ जात बानी आ काहे जात बानी । जेने डेग बढ़त गइल, ओने चलत गइलन ।

आजे नु भोरे अइलन हँ प्रकाश एही टीसन से पैदल चल के । आवहूँ बेरा कवनो उछाह ना रहे । काल्ह बहुते रात ले एड़ी-चोटी के पसीना एक कइलन । केतना जगहा बउअइलन कि कवनो तरह से पाँच-छव सौ रुपया के जोगाड़ हो जाव तब घरे जाईं । बाकिर कुछुओ ना हो सकल । कॉलेज से मिलबे ना कइल आ उधार के दीत प्राइवेट कॉलेज के शिक्षक के ? खास करके एह हालत में जब सधान के कवनो दुआ-ठेकान नइखे । एक मन भइल कि ना जाईं । बाद में बेमारी के बहाना बना देब । बाकिर मन ना मानल । बेर-बेर माई के कहल बात कान में सुनाव– "परब तेवहार बाले-बच्चा से नु सोभेला ।" गुंजन के चेहरा रह-रह के आँख के आगे झलमलाये लागे । केतना रोईं केतना खोजी हमरा के ना जायब त । गुंजन के माईओ मन पड़स । एक बेर दशहरा में घरे ना रहनी । छोटकी बहिन के बिदाई करावे खातिर ओकरा ससुरा जाये के पड़ल रहे त गुंजन के माई कहले रहली– "अबकी के दसहरा तनिको ना सोहाइल ह ।" पाले टिकट भर के पइसा रहे । टिकट ले के प्रकाश ट्रेन में बइठ गइलन ।

दू महीना पहिले घरे आइल रहलन । देखलन कि माई फाटल लुगा पेन्हले बाड़ी । मन कचोट गइल । सोचलन, अबकी फगुआ में आइब त माई खातिर एगो नीमन लुगा ले आयब । बाबूजी खातिर एगो गंजी भा कुरता ले लेब । नेवता-पेहान में आइल कवनो नया धोती पहिले के होखबे करी घर में । बाबूजी के काम चल

www.bhojpurisahityangan.com

जाई । हाल में गुंजन के मामा के नया-नया नौकरी लागल ह त अपना बहिन खातिर एगो साड़ी ले आइल रहलन हँ । गुंजन के माई से कहब कि अबकी फगुआ ओही से निवाह ल । अलता, लहठी, बिन्दी ले लेब । खुश हो जइहन । हँ, गुंजन खातिर अवकी धोती कुरता जरूर लेब । बड़ा नीमन लागेला छोटहन छोटहन लइकन के देह पर धोती कुरता । चार बरिस हो गइल अबहीं गुंजन के जनमो ना भइल रहे– होनहारी रहे तवे फगुआ में बाजार के दोकानन पर छोटहन-छोटहन धोती कुरता टाँगल देख के प्रकाश के मन के आँख के सोझा एगो लइका के नन्हीं-नन्हीं हाथ-गोड़ मुँह-कान लउके लागल । मन करे आजुए कीन लीं । जब घर में लइका होई त पेन्ही । बाकिर संकोच घेर लेवे । पता ना का होई का ना । गाछे कटहर ओठे तेल । आज गुंजन तीन बरिस से ऊपर के हो गइलन । अवहीं ले धोती-कुरता पेन्हावे के साध ना पूरल ।

बाबूजी त किरानी होके नौकरी शुरू कइनीं आ किरानीगिरिए करत-करत रिटायर हो गइनी । एह महँगाई आ तिलक-दहेज के जमाना में तीन गो बेटी के बिआहल कवनो हँसी ठट्ठा नइखे । जानेली चीलम जेपर चढ़ेला अँगारी । बाकिर बाबूजी तीनों के बिआह नीमने-नीमने निवाह लेहनी । तीनों के घर-वर अच्छा मिलल । प्रकाश के एम० ए० तक पढ़इबो कइनी । तीन गो बेटी पर के एकलौता बेटा रहलन । औकात से बढ़ चढ़ के मान-दान भइल रहे लइकाईं में । इनका जनम से घर भर के मन में अँजोर हो गइल रहे । ओही अँजोर के चलते नाँव रखाइल प्रकाश । कहाउत ह कि तेंतर बेटी राज करावे, तेंतर बेटा भीख मँगावे । बाकिर एकर एगो टोटको बा । तेंतर बेटा के जनमते एगो काँसहा थरिया फोड़ देला पर तेंतर के भेद खतम हो जाला– भीख मँगवावे के नउबत ना आवे । पोता के मुँह देखते दादी उछाह में उठली आ अपना नइहर से डोली में मिलल काँसहा थरिया पटक के फोड़ देहली । बाद में प्रकाश के खेलावत में भा तेल लगावत में हरमेसा कहस कि हमार प्रकाश नौकरी में लाग जाई त काँसहा थरिया के बदला में चानी के थरिया कीन दी अपना दादी खातिर । ई त भगवान इज्जत बचवलन कि प्रकाश अवहीं एम० ए० में पढ़ते रहलन कि दादी गुजर गइली । इतिहास में दूसरका श्रेणी में नीमन नम्बर से एम० ए० पास कइला के बादो रोजी-रोटी के कवनो जोगाड़ ना लागल त प्रकाश घर के कुछ आउरी आटा गील कइलन । कुछ बाबूजी से मदद आ कुछ ट्यूशन से कमा के पी-एच० डी० के डिग्री ले लेहलन । बड़हन बड़हन नेता लोग के झोला ढोअला के एवज में एगो प्राइवेट कॉलेज में लेक्चरर हो गइलन । कहे-सुने में अच्छा लागे लागल । जुरते बिआहो हो गइल । बाकिर पइसा के दिसाईं दिक्कते रह गइल । कॉलेज के प्रिंसिपल साहब के कहनाम रहे

www.bhojpurisahityangan.com

कि कुछ दिन ऑनररी- विना तनखाह के पढावऽ । तोहार पढ़ाई पसन पड़ी तव पइसा के वारे में सोचल जाई । ई सुविधा दोसर कवनो सउदा में नइखे कि चीज इस्तेमाल कर के देखल जाव । पसन पड़ी तव पइसा देवे के वारे में विचार कइल जाई । खाली पढ़ाइये में बा । आउर चीज त इस्तेमाल से खतम हो जाला भा पुरान हो जाला । बाकिर विद्या त ना खतमाय, ना पुरान होखे । एही से एकर ठीक-ठीक दाम लगावे में दिक्कत होला । विद्या लेवे वाला एह फेर में पड़ जाला कि इनका पाले से कुछ गइवे ना कइल, इनकर कुछ घटवे ना कइल त इनका के कुछ दिआव कवना वात के आ विद्या देवे वाला के कई तरह के संकोच घेर ले ला । 'विद्या दान महादान' के मंत्र लिकोप्लास्ट वन के मुँह वान्ह देला । गुरु के गरिमा के ख्याल गोड़ छान लेला । गुरु ना कुछ वोल पावस ना भाग पावस । एही चक्कर में शिक्षक दरिद्दर रह जालन ।

एक वेर त प्रिंसिपल साहव प्रकाश के गोड़ के नीचे से एकदमे जमीन सरका ले ले रहलन । जाड़ा के दिन रहे । कॉलेज के मैदाने प्रिंसिपल साहव के ऑफिस आ स्टाफ रूम के काम करे । एक ओर शिक्षक लोग कुर्सी लगा लेवे दोसरका ओर प्रिंसिपल साहव के आ किरानी लोग के टेवुल-कुर्सी लगा दिआव । ओह दिन नवे बजे से क्लास रहे । प्रकाश कॉलेज के कुर्सी पर अवहीं वइठते वाड़न कि प्रिंसिपल साहव आ के वगल में वइठ गइलन । प्रकाश हड़वड़ा के प्रणाम कइलन ।

"का हो प्रकाश, का हाल वा ?"

"जी, ठीके बा ।"

तनिक ठहर के प्रिंसिपल साहव कहलन– "कम-से-कम दस हजार रुपया के इन्तजाम करऽ । प्रकाश के कान खड़ा हो गइल । सुनात रहे "काल्हे एगो तगड़ा कंडिडेट दस हजार नगदी ले के आइल रहे एकदम हाथे-हाथ नियुक्ति-पत्र लेवे खातिर । बाकिर हम ओकरा के टरका देहनी । इहे सोच के कि तू दू बरिस से विद्या दान करत बाड़ऽ त तोहरा एकर फल मिले के चाहीं । तू ही दस हजार के इन्तजाम कर द, त तोहरे के रख लेव । एह कुर्सी पर पहिलका हक तोहरे वा ।" चारो ओर ताक के प्रिंसिपल साहव फेरू कहे लगलन– "देखऽ हम ओह कंडिडेट से साफे कह देहनी कि प्रकाश त बहुत पहिले दस हजार जमा कर चुकल वाड़न । एह से अब कुछ ना हो सके । बाकिर तू अब देर मत करऽ । ऊपर से दबाव आई तब हम लाचार हो जायव । जेतना जल्दी हो सके दस हजार जमा कर द ।

प्रकाश के आँख के आगे अन्हरिया छाप लेहलस । इहे होशियारी कइलन

www.bhojpurisahityangan.com

कि कुछ उल्टा-पुल्टा जवाव ना देहलन । बस, खाली टुकुर-टुकुर ताकत रह गइलन । तवे घंटी बाजल । कुछ शिक्षक लोग के आवत देख के प्रिंसिपल साहब उठ के चल गइलन । पूस के महीना में प्रकाश के कपार पर पसीना छलछला आइल । पाँच कट्ठा धनहर खेत बेंच के बाबूजी रुपया देहनी तब जा के नौकरी बाँचल । तव से परव-तेवहार के मौका पर परबी लेखान तीन-चार सौ रुपया मिले लागल । ओही परबी पर प्रिंसिपल साहब के धौंस आ सेक्रेटरी साहव के 'टरमिनेशन लेटर' के धमकी के दूधारी तलवार पर सरके लागल दिन-पर-दिन ।

अवकी त हद हो गइल । अचानक प्रिंसिपल साहब एगो 'अरजेंट मिटिंग' बोलवलन । ओही में सुनवलन कि अवकी 'टीचर फंड' वाला रुपया विकास में देखावे के बा । कॉलेज विकास खातिर जवन रुपया आइल रहे तवन शिक्षक लोग के दशहरा में बँटा गइल रहे । आगे विकास खातिर पइसा आवे ला, विकास देखावल एकदम जरूरी बा । एह से अवकी फगुआ में केहू के कुछुओ देवे के कवनो गुंजाइस नइखे । उनकर बात सुन के शिक्षक-कर्मचारी सभे उदास हो गइल । प्रकाश त जइसे सुन्न हो गइलन । माई के लुगा, बाबूजी के गंजी, गुंजन के धोती-कुरता आ गुंजन के माई के लहठी-आलता-बिन्दी सब गड्ड-मड्ड हो गइल । घरे जाये के उछाह पर सौ घइला पानी पड़ गइल । बाकिर, घर के मोह! आकाश से गिरल चिड़िया के आपन घोंसला इयाद पड़ेला । होत पराते प्रकाश घरे पहुँच गइलन । बाबूजी से दुआरे पर भेंट भइल । खाँसत-खाँसत खटिया में सट गइल रहनी । कुछ दिन से बोखारो लाग-लाग जात रहे दुपहरिया के बाद । केंवारी माई खोललली आ अपना काम-धंधा में लाग गइली । इनकर उतरल उदास चेहरा से इनका पाकिट के हाल मिल गइल । गठिया के दरद तेज हो गइल । बाबूजी के खाँसी रोकले ना रोकात रहे । केहू कुछ पूछल ना । माई के चेहरा पर कुछ अउरी झुर्री पसर गइल । गुंजन के माई के चाल धीम पड़ गइल । अनजान लेखान ताकत रहली । गुंजन पापा के खाली हाथ देख के भकुआइल रहे । ना लेमचूस, ना फिचकारी, त का लेबे जाव पापा भिरी? बहुते हिम्मत बटोर के चहलन कि गुंजन के कोरा उठा लीं । हाथ बढ़वलन कि गुंजन के माई झपट के गुंजन के अपना गोदी में उठा लेहली ।

"चलऽ बाबू चलऽ । एगो पेटी खाली करे के बा ।"

"ताहे खातिर माई?" गुंजन तोतरा के पुछलन ।

"तोहार पापा बहुते रुपया ले के आइल बाड़न । ओही में धराई ।"

गुंजन के माई गुंजन के गोदी में सटले सामने से बुदबुदात चल

www.bhojpurisahityangan.com

गइली ....." कमाये के ना धमाये के माँग टीके धाये के ।"

प्रकाश के जइसे छँइटी भर विच्छी मरले होखे । पूरा देह गिनगिना गइल । माथा सुन्न हो गल । कब कइसे घर से निकललन आ केने-केने चलत चल गइलन, कुछ पता ना चलल । टीसन पहुँचला पर कहीं दूर से ढोलक के थाप पर फगुआ के बोल सुनात रहे–

"राम के हाथे कनक फिचकारी
सीता के हाथे अबीर .....ऽ.....

प्रकाश के माथा चकरिया गइल । प्लेटफारम के कोना पर पीपर के एगो गाछ डाइन के जाटा लेखान पसरल रहे । थहरा के गाछ तर बइठ गइलन ।

www.bhojpurisahityangan.com

काकी के गहना

काकी के गहना के बड़ा सोर रहे । गाँव-त-गाँव ओह जवार में इनका अइसन पाँच सेर सोना आ दस सेर चानी के गहना केहू के ना रहे । बिआहो भइल रहे बहुते धूमधाम से । तीन भाई के पीठ पर के तेंतर दुलारी बहिन रहली । बाबूजी अपना जमाना के नामी-गिरामी मोख्तार रहनी । खूब नाँव, जस आ धन कमइले रहनी । अपनो से बड़हन घर में बेटी के बिआह कइनी । जेतने बड़हन घर ओतने सुन्नर बर । दुआर पर बरिआत लागल त बर देख के काकी के माई-त-माई गाँव भर के मन जुड़ा गइल । जे देखे ओकरे मुँह से अनासे निकल जाव– "वाह लइका त लइके बा– ।" लम्बा-चौड़ा, गोरा चिट्टा, बड़-बड़ आँख आ चमकत लिलार । जे देखे देखते रह जाव । लइकी के बिआह में सराती मेहरारू लोग दूइएगो चीज देखे खातिर बेसी मड़राला– दुअरा पर बर आ आँगना में गहना । काकी के गहना बेजोड़ चढ़ल रहे । गुरहेत्थी क के भसुर के अँगना से जाते-जात गाँव के मेहरारू गहना देखे खातिर झूक गइली । का बूढ़, का जवान, का बिअहल आ का कुँआर– सभकर आँख चौंधिया गइल । बुझाव, जइसे मड़वा में कवनो राजा-महराजा के खजाना खुलल बा । पीअर दग-दग सोना के भारी-भारी किसिम-किसिम के गहना देख के लोग दाँते अँगुरी काटे लागल । सोरह थान त अकेले हाथ के रहे । कँगना, पहुँची, बाला, ब्रेसलेट, बाजूबंद, हाथ-सिकड़ आ दसो अँगुरी के खानी बिखानी के अँगूठी । छह थान गला के रहे– कंठा, हँसुली, सीताहार, चीक, असरफी लागल पाँच लड़ी के सिकड़ी आ बड़हन लाकेट के चेन । कानो के उहे हाल रहे– इयरिंग, झुमका, कनफूल, बाली, तरकी । नाक के नथिया, छूँछी, झुलनी । माथ पर के टीका, टैरा, झपटा, बननी । ताग-पाट ढोलन में खूब सुन्दर बड़हन नक्कासीदार ढोलना लागल रहे । हलुक-पातर त कवनो रहबे ना कइल । किसिम-किसिम के, भारी-भारी आ खूबे नक्कासीदार । चानी के गहना त ओहू से भारी-भारी रहे । दू जोड़ी पावजेब, झाँझ, छाड़ा, गोड़ाई, चार जोड़ी पायल आ दस जोड़ी बिछिया । सात लर के भर डाँड़ के डाँड़ा । काकी के ससुर बहुते शौखीन आदमी रहलन । धनो-दौलत-अफरात रहे । वकालत के पइसा रहे । औलाद दू गो आ उहो बेटे । पहिलौंठी के बेटा के बिआह रहे । सब सरधा पुरा लेबे के रहे । बेटा के महतारी चार साल पहिलहीं गुजर गइल

www.bhojpurisahityangan.com

रहली । उनको अरमान के इयाद रहे । आपनो सुभाव साह खर्चे रहे । एह से खर्चा करे में कवनो तरह के कोताही ना भइल । असली बात रहे पइसा । कहल जाला– " दरबे से सरबे, जे चहबे से करबे ।" धन के बदौलत जे-जे चहलन से-से कइलन । साल भर पहिलहीं से दूआर पर सोनार बइठा के गहना बनवावल गइल । कुछ गहना कटक से आइल ।

जे हाल बर के देख के सराती लोग के भइल रहे, उहे हाल कनिया के देख के बेटहा किहाँ भइल । जे-जे सोहागिन डोली में कनिया के माँग बहोरे गइली, उनका रूप पर मोहा गइली आ बखान करत अइली ।

"एकदम मोम के गुड़िया बाड़ी ।"

"सीता त सीते बाड़ी । बड़ा सोच-समझ के इनकर महतारी बाप इनकर नाँव सीता धइले बा ।"

"भगवान खूबे जोड़ी मिलवले बाड़न ।"

बाकिर भगवान त कुछ दोसरे सोचले रहलन । अबहीं सालो ना लागल रहे कि अचानक एक घंटा के बेरामी में सब उलट-पुलट गइल । वकील साहब पर गाज गिरल । बड़ बेटा के शोक में खटिया ध लिहलन । काल्ह के कनियाँ, आज कुलच्छनी कहाये लगली । गाँव के सोहागिन मेहरारू लोग त उनका नाँवें से परहेज करे लागल । बाकिर, ऊ एकदम पथरा गइल रहली । केहू कुछो बोले, ऊ खाली टुकुर-टुकुर ताकत रहस । महीना भर बाद उनकर बाबूजी अइलन आ अपना बेटी के अपना साथे ले जाये के बात चलवलन । पटी-पटिदार भा गाँव-घर के लोग जे बोलले होखे, उनकर ससुर उनका के कबहूँ कवनो कुबोल ना बोललन । नइहर जाये लगली त अपना सामने उनकर सब बक्सा पेटी गाड़ी पर लदवा के समधी से एतने कहलन– " अबहीं त हम राउर बात मान लेत बानी । साइत, इहे ठीक बा एह घड़ी इनका खातिर । बाकिर, इनकर घर इहे बा । जब चाहस आवस, रहस ।" एतना कहत-कहत उनकर गला भर आइल । आँख से झर-झर लोर झरे लागल । दूनो समधी एक दोसरा के अँकवारी में भर के खूब रोअल लोग ।

नइहर में माई इनका के देख के एतना रोअली जेतना इनका बिदाइयो बेरा ना रोअले रहली । भउजाई लोग अपना आँचरा से इनकर लोर पोंछल । पहिले से अधिका दुलार होखे लागल । भाई लोग घर में घुसते पहिले बहिने के खोजे । परब-त्योहार में सबसे पहिले इनकरे कपड़ा किनाव । भतीजा-भतीजी इनके भिरी सटल रहऽ सन । छोटकी भउजी के इनका अइला के साल भीतरे बेटा भइल । केहू ना कहत रहे कि ऊ औलाद के मुँह देखिहन । बिआह के पाँच बरिस बीत

www.bhojpurisahityangan.com

गइल रहे । ससुरा के कुलच्छनी, नइहर में सुलच्छनी कहाये लगली । गाँव में केहू के बिआह होखे एक बेर इनका गहना के बात जरूर चले । असहीं गाँव के एगो बिआहे के बात चलत रहल कि छोटकी भउजी पूछ देहली– "बबुनी आपन सब गहना ले आइल बानी कि ओहिजे बा ?" "आइल बा" कह के ई दूअरा जाये लगली । जात-जात भउजी पर नजर पड़ गइल । उनकर आँख सीसा लेखान चमकत रहे ।

गँवे-गँवे नइहर के घर गिरहस्थी के भार इनके पर आ गइल । तीनो भउजाई अपना-अपना सिंगार-पटार आ बाल-बच्चन में अझुराइल रहे लोग । इहे छुट्टा देह लउकस । घर से ले के आदमी जन ले सभे कवनो काम खातिर इनहीं के खोजे । इहो दिन-भर अझुराइल रहस काम-धाम में । सभकर सुध राखस बाकिर आपने सुध ना रहे । ना खाये पिये के धेयान आ ना पेन्हें ओढ़े के चाव । इहाँ तक ले कि अपना बक्सा-पेटी के चाभिओ छोटकी भउजी के सऊँप देले रहली । सउँपली का, एक दिन छोटकी भउजिये कहली– "आदमी जन के घर बा आ रउरा अपना बक्सा पेटी के सुधे ना रहे । जानते बानी कि जवार-भर में राउर गहना के सोर बा । दीं आपन गहना वाला बक्सा के चाभी, हम अपना आलमारी में रख दीं । जब जरूरत होखे ले लेब । ओही दिने एगो पेटी में सब गहना सरिया के ताला बन्द कइली आ ओकर चाभी छोटकी भउजी के दे दिहली ।

ओह चाभी के छोटकी भउजी के आलमारी में जात भइल कि तीनों भाई-भउजाई में मन मोटाव शुरू हो गइल । बिन बातो के बात झगड़ा होखे लागल । बात एतना बढ़ल कि एक अँगना में तीन गो चूल्हा जरे लागल । माई-बाबूजी के धोबी के कुत्ता के हाल हो गइल– ना घर के ना घाट के । देखते-देखते दूनो जना कौड़ी-कौड़ी के मोहताज हो गइल लोग । दू जून के रोटी खातिर कबो बड़का के त कबो मझिला के त कबो छोटकू के दूआरी सेवे के पड़े लागल । बाकिर ई का करस ? कहाँ जास ? छोटकी भउजी के सेवा टहल में भर दिन लागल रहस । भाई-भउजाई के आँख त बदलिये गइल रहे । भर-भर दिन खटलो पर ओ लोग के आँख में ई बइठले लउकस आ इनकर नीमनो काम में उनका खोटे लउके । एकदम साँप-छुछुन्दर के गति हो गइल रहे । ना बुझाव कि का करस, कहाँ जास । रह-रह के ससुर के कहल बात मन पड़े ..... "इहे इनकर घर बा । जब चाहस, आवस, रहस ।" बाकिर, जास कइसे? कवन मुँह से? देवर के बिआह में खबर आइल । ना गइली । जाउत के जनम में खबर आइल । ना गइली । इहाँ तक ले कि ससुर गुजर गइलन । ना गइली ।

www.bhojpurisahityangan.com

बारह बरिस पर घूरो के दिन पलटेला । भगवान पासा पलटलन । देवर के बेटा के जनेव के नेवता आइल । देवर के चिट्ठी के साथे-साथे जाउतो के हाथ के लिखल एक लाइल के चिट्ठी रहल– "काकी के मालूम कि तू जरूर अइह ।" डूबत के तिनका के सहारा मिल गइल । का जाने 'काकी' सबद के कमाल रहे कि नइहर से अगुताइल मन के छटपटाहट – जाये खातिर तुरते तइयार हो गइली । सभका से कहत फिरस– "जाउत बोलवले बाड़न– "काकी के मालूम कि तू जरूर अइह ।" "जायब जरूर ।" सभे चकित । काकी निहाल । जाये के तइयारी में छोटकी भउजी से अपना गहना वाला पेटी के चाभी मँगली । भउजी उठली आ घुमा के फेंक देहली ।

"जाईं ।" बड़ा अगराइल बानी । ऊ लोग त जइसे पलंग पर बइठा के खिआई ।"

टूटल मन बेजुबान बना देला । चुपचाप चाभी उठा के आपन पेटी खोललली । एतना दिन के बाद जात बानी । देआदिन के मुँहों नइखीं देखले । ना जाउते के देखले बानी । ओतना गहना वा । ओही में से देआदिन के मुँह देखाई दे देव । जाउत के जनेव में नेग देव । बाकिर ई का ? पेटी में गहना के डिब्बा त सब बा बाकिर सब के सब खाली । छोटकी भउजी के चाभी देवे से पहिले सब गहना रहे फिर भइल का ? घबराइले गइली छोटकी भउजी लगे ।

"छोटकी भउजी! ई का भइल ?"

"काऽ ?" भउजी गभुआइले बोललली ।

"पेटी में गहना के सब डिब्बा खाली बा ।"

"त हम का जानी ?" चाभी सहेजला गुने अछरंग लगावत बानी ?"

"ना भउजी, अछरंग के बात नइखे । चाभी देबे के पहिले हम देखले रहनी । सब गहना रहे ।"

"त हम चोरा लेहनी का ?" भउजी चिल्ला के बोललली । का जाने का सोच के ई लपक के उनका मुँह पर हाथ ध दिहली । "बस-बस भउजी, अब चुप हो जाईं । ई बात हमरे रउरा ले रही । भइया किरिया, जे रउरा केहू से कुछ कहीं ।" भउजी हकबका के ताके लगली ।

दोसरा दिने भोरे-भोरे ससुरा जाये खातिर टायर गाड़ी पर आपन सब बक्सा पेटी लदवा के बइठ गइली । छोटका भाई चहुँपावे गइलन ।

ससुरा में देवर-देवरानी हाथो-हाथ लिहलस । "काकी-काकी" कह के दस बरिस के जाउत अइसन सटलन कि बुझाव, कहिया के जान पहिचान बा । देवरानी कहस– "इहे नू आपन खून कहाला । दीदी जी! तनिको बुझाता कि गुंजन

www.bhojpurisahityangan.com

रउरा के पहिले पहिल देखत बाड़न ?" 'काकी-काकी' सुन के काकी जुड़ा गइली । जइसे सब दुख सिरा गइल । जाउत में अइसन अझुरइली जइसे इनके लइका होखस । संगही खाइल । संगही सूतल । काकी से बे कथा कहानी सुनले गुंजन ना खास ना सूतस । देर रात ले बतकही होखे काकी-गुंजन में । ओह रात के कुकुर बड़ा बोलत रहे । बतकही करते-करते गुंजन काकी के गोदी में तनी आउरो समा के पूछ देहलन– "काकी! तोहरा पाले बहुते गहना बा का?" काकी के त जइसे बिच्छी मरले होखे । छपटा के पूछली– "के कहेला बाबू?" "माई-बाबूजी कहेला लोग । एही खातिर त तोहरा के बोलावल गइल ह । काल्हे माई, बाबूजी से कहत रहली कि बहुत दिन बाद पकड़ाइल बाड़ी । अबकी सब गहना गुंजन के द देस, तब नइहर जास । हमरा के देबू नू काकी सब गहना?" जवाब ना सुन के गुंजन छरिया गइलन । काकी के झोर-झोर के पूछे लगलन– "काकी! काकी! बोलऽ ना । देबू नू हमरा के सब गहना?" काकी जइसे इनार में से बोललीं– "हँ, देब! दे देब सब गहना ।" उनकर साँस फूले लागल । पूस के महीना में पसीना से नहा गइली । तबे से बेराम बाड़ी । जब-तब साँस फूले लागेला । खाँसते-खाँसते सुरसुरी चढ़ जाला । पसीना छूटे लागेला । खात में अकसरहाँ सरक जाला । बाकिर अपना बक्सा-पेटी के चाभी हरमेसा खूब गँठिया के अपना अँचरा के खूँटा में बन्हले रहेली ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

दवाई के पुरजा

जगमोहन के बीमारी आज ले नीमन ना भइल । अब त एकदमे खटिया में सट गइल बाड़न । एकबाल के उहे हाल बा । उहो बिछावन धइले बाड़न । लइकाइयें से दूनो जना में बहुते दोस्ती रहल । लंगोटिया यार रहल लोग । गाँव के पुरनिया लोग कहेला कि दूनो के जनम एके महीना में भइल रहे, बलुक एके पख में । दूनो के महतारी आपस में जवाइन बँटले रहली । पहिलका लोग के कहनाम रहे कि एक पख में जनमल लड़िकन के महतारी जब पहिले-पहिल एक दोसरा के देखे तब आपस में एक-एक मुट्ठी जवाइन बाँट के कह देवे के चाहीं– 'दूध-पूत बराबर' ना त महतारी के दूध सूख जाला आ लड़िका के पेट ना भर पावे । अब त ई सब केहू मानते नइखे । बाकिर तब के बात दोसर रहे । सास-ननद भा गाँव-घर के पुरनियाँ के बात केहू उठावत ना रहे ।

केकर जनम पहिले भइल आ केकर बाद में ई त ना केहू के इयादे बा आ ना केहू कबहीं एकरा फेर में पड़ल । जे देखल एह लोग के जउवाँ लेखान देखल । संगे-संगे खाइल-खेलल लोग आ संगहीं गाँव के मठिया पर वाला इस्कूल में गइल लोग पढ़ाई करे । शादियो-बिआह कुछे दिन के आगे-पीछे भइल । दूनो जना मिल के गाँव गुलजार कइले रहत रहे लोग । फगुआ आ चइता त एह जोड़ी के बिना होइये ना सकत रहे । गाँव-त-गाँव, जवार में नाँव रहे गावे-बजावे में एह जोड़ी के । जब ढोल-मजीरा लेके बइठ जात रहे लोग तब भोर हो जात रहे गावते-बजावत । आ भीड़ ओही लेखान– ना गवनिहार हारे ना सुननिहार अगुताव । ओइसन चइता-फगुआ गावेवाला गाँव में दोसर केहू नइखे । बाकिर अबकी के फगुआ एकदम ना सोहाइल जगमोहन-एकबाल बिनु । एकदम सून लागल । सबका मन पड़े । सभे इयाद करे एह जोड़ी के । बाकिर बीमारी अइसन बेदम कइले रहे कि ना ऊ लो आ सकत रहे आ ना केहू ओ लोग के बोला सकत रहे ।

परसाल दशहरा के बाद से का जाने का हो गइल कि दूनो जना दुबराये लगलन । तनिको काम से एकदम थाक जाव लोग । हँफनी उठ जाव । पेट में दरदो खूब होत रहे । गाँव के एगो-दूगो नवका लइका सन त जगमोहन-एकबाल से कबो-कबो मजाको कर लेबे– "का हो काका, बेरामियो में यारी बा का?

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा पता बा का कि तू लोग संघतिया हउअ?" दूनो जना मुसका के रह जात रहलन ।

तीन महीना पहिले दूना जना शहर के एगो बड़हन डाक्टर लगे गइल रहलन । ऊ लोग का गइल, गाँव के मुखिया जी पीछे पड़ के ले गइनी । उहाँ के जीप शहर जात रहे । वोही में ए लोग के बइठा के ले-ले गइनी । देखाइयो देहनी शहर के सबसे मसहूर बड़हन डॉक्टर- डॉ॰ संजय शर्मा से । डाक्टर साहब खूब ध्यान से देखनीं । उहाँ के पक्का भरोसा रहे कि ई लोग ठीक हो जाई । दवाई के पुरजा बना देहनी । हिदायतो दीहनीं कि दारू-शराब मत पीह । खइनी-तम्बाकू एकदम छोड़ दीह ।

शहर से लवटला पर दूना जना बहुते खुश रहलन । सबका से डॉक्टर साहब के गुणगान करत फिरे लोग । मुखिया जी के दुअरा पर पनरहियन इहे चर्चा होत रह गइल कि केतना नीमन आ लमहर डॉक्टर से एह लोग के देखावल गइल ह कि देखते बेरामी-त-बेरामी, बेरामी के लच्छनों अपने कहे लगनी डाक्टर साहब । दूनो जना के बोलती बंद हो गइल रहे अचरज से । एकदम भक्क हो गइल रहल लोग कि डॉक्टर साहब के कइसे बुझा गइल कि हमनी के दारू आ खइनी के अमल बा । एकबाल त कई बेर घुमा-फिरा के मुखिया जी से पूछलन- "डॉक्टर साहब ई सब बात कइसे जान गइनीं, मुखिया जी?" जगमोहन के बुझात रहे कि डॉक्टर साहब एकदम अगमजानी बानीं ।

"ओह दिन त हम पीअलहूँ ना रहीं । मिलले ना रहे । बाकिर डॉक्टर साहब के सब बुझा गइल । इहो अचम्भे के बात बा कि उनका से कहल के? कइसे जान गइनीं उहाँ के हमनी के बारे में सब बात?"

इनार, पोखरा, आटा-चक्की, कोल्हुआरी, बगइचा आ घूर लगे बड़ा बतकही होखे डॉक्टर साहब के बारे में । सगरे इहे सुनाव कि डाक्टर साहब बड़ा नीमन बानीं । एकदम देवता जइसन । तब से गाँव में जब केहू बेराम होखेला जगमोहन-एकबाल ओही डॉक्टर से देखावे के सलाह देबे ला लोग । ओह लोग के कहनाम ह कि संजय बाबू लेखान त कवनो डॉक्टरे नइखे दोसर । हमनी के देखते हमनीं के बेरामी पकड़ लेहनी । एकदम सोखा बाबा नीयर सब लच्छन अपने बके लगनी । हमनी के त कुछ कहहीं के ना पड़ल । बहुते धेयान से देखनीं । पीठ पर हाथ ध-ध के समझवनी- "दवाई जरूर खइह लोग । दारू, खइनी, तम्बाकू एकदम छोड़ दीह । सब ठीक हो जाई ।"

बाकिर ऊ लोग ठीक ना भइल । ओतना बड़हन डॉक्टर से देखवलो पर ना जगमोहने ठीक भइलन आ ना एकबाले खटिया से उठलन । पहिले नशा में

www.bhojpurisahityangan.com

कहिओ-कहिओ गाँव-जवार के लोग के कुछ जाँय-बेजाँय कह देत रहल लोग । बाकिर अब त बेहोशी में डॉक्टरे साहब के गुनगान करेला लोग । डॉक्टर साहब के लिखल दवाई के पुरजा बाँचत-बाँचत पूरा इयाद हो गइल बा दूनो जना के । केहू केहू वो लोग के देख के टोक देता कि कवनो नीमन डॉक्टर से देखाव लोग त एकदम खिसिया जात बा लोग । "संजय बाबू से नीमन डॉक्टर के बा जवार में ? जब उनका से ना ठीक भइनी सन त अब केकरा से ठीक होखब सन ? अपना अपना भाग के बात ह ।" एकबाल आसमान का ओर मूड़ी उठा के कहेलन– "अल्लाह के इहे मंजूर बा ।" जगमोहन खटिया पर पड़ल-पड़ल गँवें-गँवें गावेलन– "करम गति टारे नहिं टरिहै ।

परसों मुखिया जी अपना भतीजा के देखावे खातिर ओही डॉक्टर साहब लगे गइल रहनी । डॉक्टर साहब मुखिया जी से जगमोहन के हाल-चाल पूछनीं । हालत बिगड़ल सुन के तनिका अचकचाइयो गइनी । उहाँ के का मालूम कि दूनो जना कहियो दवाई ना खाइल आ ना कवनो परहेज कइल । दवाई त किनइबो ना कइल । दूनो जना के इहे विचार रहे कि पहिले अमल छूटो । ओकरा बाद दवाई किनाई आ जम के खाइल जाई । ना अमल छूटल, ना दवाई किनाइल ना जमके खाये के सुतार भइल । बाँचते-बाँचते नुस्खा इयाद हो गइल । परहेजो इयाद रहल । डॉक्टर साहब के गुनगान के तीन महीना बीत गइल । अब त उम्मीदो नइखे बुझात बाँचे के । अब-तब लागल बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

अँजोर

कहल जाला कि करनी देखीं मरनी में । मरनिओ मरनिओ में फरक होला । एगो मरनी होला कि लास के चिन्हनिहार केहू ना मिले । आपन महतारी बाप ले चीन्हे से इनकार कर देला । एगो मरनी होला कि हजारों-हजार हाथ अपने आप उठ जाला गोड़ लागे खातिर । जिनगी अपना औकात पर लजा के ओइसने मरनी के दुआ माँगे लागेले । सइ बरिस जीये के आसीस उहाँ ओछ पड़ जाला । 'दूधो नहाऽ, पूतो फलऽ' जइसन दुनियादारी के सुख से भरल-पूरल आसीसो ओकर बराबरी ना कर पावे ।

हाले के बात ह । छपरा जिला में एगो गाँव बा– बथुई । शहीद विशुनी राय के चलते आज ई गाँव लोग के जबान पर बा । रातो-रात एकर औकात बढ़िया गइल । भूगोल के जानकार लोग कहेला कि धरती डोलेला तब कबो-कबो अइसन करिश्मा हो जाला कि जहाँ पहिले पहाड़ रहेला उहाँ नदी बहे लागेला आ जहाँ नदी रहेला उहाँ रेत के पहाड़ खड़ा हो जाला । कबो-कबो अइसन करिश्मा आदमियो करेलन । नीमन-नीमन गाँव के नाँव डुबा देलन । भूलल बिसरल गाँव के नाँव उतराये लागेला । काश्मीर के कारगिल इलाका में पाकिस्तानी घुसपैठिअन से अपना देश के धरती आजाद करावे के कार्रवाई में विशुनी राय शहीद हो गइलन । आनन-फानन में ई खबर उनका बहादुरी के गुनगान करत दूरदर्शन, अखबार, रेडियो, वायरलेस, डाक आ फैक्स से उनका गाँवे पहुँच गइल । उनकर पार्थिव शरीर पहुँचे-पहुँचे कि गाँव में उनका के आखिरी प्रणाम करे खातिर लोगन के मेला लाग गइल । अइसन भीड़, अइसन जमवड़ा कि देह से देह छिलात रहे । आगवानी करे खातिर पहिलहीं से लमहर-लमहर सरकारी अधिकारी, विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री हाजिर हो गइल । दूरदर्शन आ पत्रकारन के दल त रहले रहे । करीब-करीब दस हजार के भारी भीड़ । हाथ जोड़ले । आँख के अरघा बनवले । लोर के अरघ ढारत । रोअत महतारिओ रहली । मेहरारुओ । बाकिर रोआई में अभागिन वाला बेचारगी ना रहे । ना भगवान से कवनो शिकवा शिकायत रहे, ना इंसान से । दान के दर्प विछोह के पीड़ा पर भारी पड़त रहे । महतारी रो-रो के कहत रहली– "....बबुआ हो, तू हमरा कोख के तार दिहलऽ ..... देसवा खातिर जान दे के हमरा दूध के लाज राखि लिहलऽ .... दाम देइ दिहलऽ .....।"

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरारू पछाड़ खात रहली– ".....रउरा हीरा रहनी ..... हम चिन्हनी ना ..... ।" संगहीं खड़ा भइल एगो बिअहल लइकी समुझावत रहली– "ऐ भउजी! सम्हारऽ अपना के । जेकरा खातिर एतना लोग रोअत बा ओकरा खातिर हम तू का रोअब ? तू त शहीद के मेहरारू बाड़ू । आपन सोहाग दान कइले बाड़ू देश खातिर । देश प्रणाम करी तोहरा के । रोअऽ मत । शान से जीअऽ ।"

ओही भीड़ में एगो मेहरारू सुसुक-सुसुक के खूबे रोअत रहली । पत्रकार लोगन के नजर पड़ल त लपकल चल आइल लोग । केहू कैमरा सम्भालल, केहू कागज-कलम ले के तइयार हो गइल– "रउरा के बानी विशुनी राय के ?" ऊ मेहरारू अँचरा से आपन मुँह लपेट के आउर जोर से रोये लगली । पीछे से केहू के आवाज आइल । "छोड़ दीं मत पूछीं । आज विशुनी राय केकर नइखन ? सभकर कुछ-ना-कुछ नाता बा उनका से । इनको से होई । जे देश के हो गइल ऊ सभकर हो गइल ।"

अवही एके महीना बीतल रहे । मोहना के माई मोहना के पेंड़ा ताकत-ताकत बेखइले-पीयले झपकी लेत रहली । चार दिन से मोहना घरे ना आइल रहे । रात के दस बजत होई । केहू धीरे से केंवाड़ी बजावल । धधा के उठली– 'मोहना आ गइल ।' ओकर इहे चाल रहे । पनरहिअन गायब हो जाव । घरे आवे त खूब सुते । जब आवे रात में आवे । माई पूछस "कहाँ रहेलऽ ? खरुआइले बोले– "काम पर, आउरी कहाँ ?" "कवन काम करेलऽ ?"

"तोरा कवन काम बुझाई कि बताईं ?"

माई सहमले कहस– "केहू-केहू पूछेला त का कहीं ?"

"के पूछेला ? कह दीहे कि कवनो मील में काम करेलन । रात के ड्यूटी पड़ेला । एह से रोज घरे ना आवस ।"

केंवाड़ी ले ई सोचते गइली कि आज मोहना से पूछ के रहब, कहाँ गायब हो जाला बे कुछ कहले सुनले । केंवाड़ी खोललली त सामने इनकर बड़का भाई खाड़ रहलन– एकदम सहमल आ सिआह चेहरा ले ले । इहो हकबका गइली– "तू हवऽ !" हम जननी हँ कि मोहना ह ।" भाई भीतरी आ के धीरे से केंवाड़ी बन्द कर दिहलन । पूछलन– "घर में आउर के बा ?"

"केहू नइखे ।"

"मोहना कहाँ बा ?"

"का जाने कहाँ गइल बा । चार दिन हो गइल ।"

"का करेला ?"

"हम का जानी, ए भइया । पूछीले त खखुआ के पड़ेला । कहेला कि तोरा

www.bhojpurisahityangan.com

आम खइला से काम बा कि गाछ गिनला से ? तोरा कवनो दुख बा ? बाबूजी नइखन तबो आराम से खात-पीयत बाड़े । तोरा कवन काम बा हमरा काम-धंधा के फेरा में पड़ला के ?"

भइया "हूँ" कह के सामने चउकी पर बइठ गइलन । अब ले मोहना के माई असथिर हो गइल रहली । धेयान गइल कि भइया के कुछ खाये पीये के जोगाड़ करे के चाहीं । उठ के (चुहानी) रसोई में गइली । चार गो रोटी आ तरकारी मने-मने मोहना खातिर तोप के रखले रहली । से ही उठा के ले अइली । एक लोटा पानी रखली ।

"भइया! गोड़-हाथ धो के खा लऽ । चाह पीअब त चाहो बना देब । इस्टोप रखले बानी ।"

भइया गुमसुम बइठल रहलन । ना खइले, ना सुगबुगइले । अब इनका मन में शंका होखे लागल– पता ना भउजी कइसन बाड़ी – भतीजा-भतीजी के का हाल समाचार बा – काहे भइया एतना गुमसुम बाड़न । पूछे में डरो लागत रहे । धीरे से पूछली– "भउजी ठीक बाड़ी नू?" भइया चुप ।

"हमार भतीजा-भतीजी के का हाल-चाल बा?"

भइया चुप । ई अपना धुन में बोलत जात रहली– "हम सोचते रहीं कि बहुत दिन हो गइल तोहरा सब से भेंट मुलाकात भइले । अबकी मोहना आई त ओकरा के ले के आयब दू-चार दिन खातिर ।

भइया के धीम वाकिर भारी आवाज कान में पड़ल– "अब मोहना ना आई ।"

ई चिहुँक के पूछली– "काहे? तू का कहत बाड़?"

"हम ठीके कहत बानी । मोहना अब कवहूँ ना आई ।"

मोहना के माई के जइसे सबकुछ लउक गइल होखे । छाती में मुक्का मार के जइसे पुक्का फाड़ के रोये खातिर मुँह खोलली कि भइया लपक के इनकर मुँह दबा दिहलन– "बस-बस । एकदम नइखे रोये के । मोहना रोअहूँ लायक नइखे छोड़ले । अबहीं हम छपरा से आवत बानी ।" भइया धीरे-धीरे कहे लगलन– ".....उहाँ थाना में एगो लावारिस लास रखल बा । परसों एगो ट्रेन डकैती भइल रहे । पाँच-सात गो डाकू-लूटेरा रहलन सन । आउर सब त भाग गइलन सन, बाकिर एगो सी. आर. पी. के गोली से मरा गइल । छपरा एगो जरूरी काम से गइल रहनी । थाना लगे भीड़ लागल रहे । लोग के बात सुननी त सोचनी तनी हमहूँ देखीं त कइसन डाकू बा । देखनी त देखते रह गइनी । काठ मार देहलस । मोहना रहे । दरोगा जी के कुछ शक हो गइल हमरा हाव-भाव से । पूछलन– "रउरा चीन्हत बानी का एकरा के?" हम त घबड़ा गइनी । चटकवाही

www.bhojpurisahityangan.com

कइनी कि झट दे कह देहनी– "ना, हम त चीन्हत नइखीं ।"

दरोगा जी पूछलन– "त उदास काहे हो गइनी हँ देख के?" हमार त माथा सुन्न हो गइल कि कहाँ फँसनी! इहे कह के जान छोड़वनी कि– "दरोगा जी! एकरा के देख के हमार मन साँचहूँ उदास उदास हो गइल ह । एतना कम उमिर के लइका आ ट्रेन डकैती! का जमाना आ गइल! एह उमिर में त हमनी के देश, जवार भा गाँव-घर खातिर तरह-तरह के त्याग करे के भावना से भरल रहत रहनी सन ।" दरोगा जी के चेहरा से तनाव कम भइल तब हम जान छोड़ा के भगनी । सीधे तोहरा लगे चलल आवत बानी । बाकिर, तू एकदम मत रोइहऽ, ना केहू से कुछ कहिअ कि मोहना कहाँ बा, का भइल भा का करत रहे । कुछ कहे के काम नइखे । खा-म-खा केहू पूछबे करे त कह दीह कि दिल्ली गइल बा कवनो मील में काम करे खातिर । अबहीं ओहिजा के पता नइखे भेजले ।" मोहना के माई मूर्ति लेखान बइठल रहली ।

भइया जइसे आइल रहलन ओसहीं धीरे से, गँवें-गँवें चल के निकल गइलन । जाते-जाते कहत गइलन– "हमरा अइला के बात केहू से मत कहिअ । करेजा पर पत्थर रख के पहिलहीं जइसे रहिअऽ ।" मोहना के माई पथरा के भोर ले ओहिजा बइठल रह गइली । तब से आज ले एक कतरा लोर ना चुअवली ह । भीतरे-भीतरे कुहुँकस । बाकिर खुल के रोअली ना । रोये के कवनो गुंजाइसे ना रहे । गाँवों में केहू ना मरल रहे कि रोअस । आज शहीद विशुनी रोआ दिहलन । इनका एतना मिलल – मान-सम्मान! मोहना के मरला पर ना आपन माटी भेंटाइल, ना चिता नसीब भइल । ओकर मुअलो मुँह देखे के ना मिलल .....। मोहना के माई के कंठ खुल गइल– "आ बबुआ हो बबुआ .....।"

भीड़ नारा लगावत रहे–

"वीर बाँकुड़े विशुनी राय"

"अमर रहीअन .....अमर रहीअन"

"देश के बेटा विशुनी राय"

"अमर रहीअन .....अमर रहीअन"

राजकीय सम्मान से आखिरी सलामी दिआइल । सात बरिस के बेटा बाबूजी के राह पर चले के कसम खा के चिता में आग लगा दिहलन । लहोक उठल । दूर-दूर ले अँजोर हो गइल । मोहना के माई बुदबुदइली– "लोग झूठे कहेला कि चिता के आग से अँजोर ना होला । होला खूबे होला । विशुनी जइसन सपूत के चिता के आग से अँजोर होला ।"

●

www.bhojpurisahityangan.com

राधा

राधा केंवाड़ी खोल के गँवें-गँवें हमरा पलंग तक अइली आ थहरा के बइठ गइली । हम अचकचा गइनी । अरे! इनका का हो गइल ? ई त इनकर सुभावे ना ह । बाहर से बोलते आवेली । घर-घर के 'आँखों देखा हाल' इनका दिमाग के कम्प्यूटर में 'लोड' रहेला । गेट में घुसली कि कम्प्यूटर के स्वीच ऑन भइल । फेरू त शुरू हो जाई बोले के आ लोटा-लोटा के हँसे के त धराने ना रही जब ले केहू टोकी ना कि राधा अब उठऽ चाय के बरतन द भा चाय बनाव । मोहल्ला में के धनिया के बुकुनी में गदहा के लीद पीस के मिलावेला, के गहूँ आ चना में अँकड़ी फेटेला, केकरा आटा चक्की पर नीमन गेहूँ निकाल के घुनल गेहूँ मिला दिआला, के मटिआ तेल में पानी फेट के बेंचेला । राधा सब जानेली । केकरा घरे झगड़ा भइल, केकर कपार फूटल, केकर दाँत टूटल, के साइकिल पर से गिर गइल, केकर गोड़ आज मोरी के पाँकी में सना गइल, राधा के जवान पर रहेला । केहू सुने भा ना सुने राधा के टेप चालू रहेला । एही से उनका आज के रंगढंग से हमरा चिन्ता भइल ।

"का ह राधा ? बेराम वाड़े का ?"

"हम ना दीदी । ऊहे बेराम वाड़न ।"

"आइल बाड़न का ?"

"ना सास आइल रहली ह । कलकता से चिट्ठी आइल वा– बेराम बाड़न । बोखार उतरते नइखे ..... एकदम कमजोर हो गइल बाड़न ।" दुलहा के ले के एतना चिन्तित राधा के हम आज ले कबो देखलहीं ना रहनी । उदासी हँसिओ से बेसी संक्रामक होला । राधा के उदासी हमरा के अपना घेरा में ले लिहलस । चुपचाप उठके चउका में गइनी– दू कप चाय बना के ले अइनी । राधा ओसहीं बइठल रहली । जइसे कहीं बहुत दूर देखत होखस । आँख में कवनो पहिचान ना रहे । हम सामने से गइनी, चाय बना के ले अइनी । राधा के जइसे कुछ लउकते ना रहे । कहे के पड़ल– "राधा! चाय पी अ ।" राधा जइसे दूर से लवटली– "बना लिहनी का दीदी ?" चाय ले के पीये लगली । आउर दिन रहित त ईहे राधा के हँसी के मसाला हो जाइत– कहती– "लऽ दीदी के चाहो बन गइल हमरा पतो– ना चलल ।" बाकिर आज के राधा त एकदमे दोसर राधा रहली अनचिन्हार

www.bhojpurisahityangan.com

राधा । कहे के त हम कह गइली– "राधा! चिन्ता मत कर । सब ठीक हो जाई । देह बा त बेरामी-सेरामी लागले रहेला ।" बाकिर कहते मातर ई साफ बुझा गइल कि राधा के उदासी के परत के मोटाई छेदे के ताकत एह बात में बा ना । अइसन कवनो धारदार बात सुझतो ना रहे कि उदासी तार-तार हो जाव । चुपचाप चाय पीये के सिवाय कवनो उपाय ना रहे । अनचिन्हार से बोलल भारी लागेला । चिन्हार अनचिन्हार बन जाला तब त आउरो भारी ।

राधा के हम बचपन से जानीले तब ऊ चार-पाँच बरिस के रहली । उनकर महतारी काम करस । ई उनके जोरे आवस– एकदम आन्ही तूफान लेखान दउड़त– चाँय-चाँय करत– हँसत-खिलखिलात । ओह घड़ी एह मकान में राजमिस्त्री के काम लागल रहे । तीन-तीन चार-चार गो मजदूर मिस्त्री खटत रहे लोग । राधा सभकर खेलवना रहली । केहू उठा के दीवाल पर बइठा देबे, केहू उठा के छज्जा पर चढ़ा देबे । ओहू से मन ना भरे त ई कह के डेरवा देबे लोग कि आज रात के राधा मुर्गा बन जाई हमनी के एगो मन्तर पढ़ देत बानी सन । राधा ड़ेरा जास– गोहार करे लागस– चिल्लाए लागस– "ना मत पढ़ीं मन्तर ..... मत पढ़ीं ।" बीच-बचाव खातिर कबो-कबो हमरा आवे के पड़े । राधा के शांत करे खातिर कहे के पड़े– "हमहूँ जादू जानीले । मिस्त्री के मन्तर बेकार-बेअसर हो जाई, हम मन्तर पढ़ देब त । राधा मुर्गा ना बनिहन ।" जहिया मिस्त्री लोग के कहला के असर गहिरा पड़ जाव ओह दिन रात के राधा अपना घरे ना जास । महतारी से कह देस– "आज हम घरे ना जायब । हम मुर्गा ना बनब । दीदी मन्तर पढ़ दीहें ।" माई हँस के चल जास– "हमरा त नीमने बा । रह दीदी जोरे ।"

एने रात शुरू होखे ओने राधा के चरखा चले लागे – "दीदी! हाली-हाली मन्तर पढ़ीं ना ..... । तनी ताकीं ना, हम राधा बानी नू ?" हम पढ़त-लिखत रहीं भा कवनो घरेलू काम करत रहीं, राधा हमरा से सटल रहस– पूछत रहस– "दीदी! हम मुर्गा नइखीं नू ?" हम श्री दुर्गासप्तशती के कवनो श्लोक पढ़ के उनका के छू दीं– एकाधगो फूँक मार दीं– "जा अब मुर्गा ना बनबू ।" राधा खिलखिला के हँसे लागस, "अब आवस मिस्त्री, देखस, हम राधा बानी, मुर्गा नइखीं ।" राधा के अइसन-अइसन बाल-लीला हमनी के रोजमर्रा के जिनगी के हिस्सा बन गइल रहे ।

फेरू पढ़ाई-लिखाई के सिलसिला में हम बाहर चल गइनी । राधा से सम्पर्क टूट गइल ।

करीब बीस साल बाद । ओह दिन छब्बीस जनवरी रहे । गणतन्त्र दिवस । राष्ट्रीय त्योहार । जगह-जगह झंडा-भाषण-सांस्कृतिक कार्यक्रम । घरे पहुँचनी त.

www.bhojpurisahityangan.com

हाता में दू गो औरत के बइठल देखनी । चिन्हे में एकाध मिनट लागिए गइल– "अरे राधा तूँ । कहाँ रहलू ह एतना दिन ?" राधा हँसत रहली– आँख में ऊहे चमक, चेहरा पर ऊहे भोलापन, कद-काठी में दूबर-पातर आ छोटहन, एकदम चउदह-पनरह बरिस के लइकी नीयर ।

ओही दिने राधा आ उनका माई के साझा बयान से पता चलल कि बारह बरिस पहिले एगो नीमन घर-बर देख-सुन के एही शहर के एगो कोना में राधा के बिआह कर दिआइल । आपन घर बा, सास-ससुर बा, दुल्हा के तीन गो भाई आ दू गो बहिन बा । चार-पाँच कट्ठा खेतिहर जमीनो बा । दुलहा के नाँव अशोक ह । कलकत्ता के कवनो फैक्ट्री में बिजली मिस्त्री के काम करेलन । पीये के आदत बा । घरे रुपया-पइसा ना भेजस । साल में एक-दू बेर आ जालन । बाप-महतारी अगुता के पिछला साल कह दिहलस– "आपन बेकत आ लइका-फइका अपना साथे राखऽ – हमनी से ई खर्चा ना चली । तोहार भाई लोग मर-मजदूरी करेला - खेतो में कमाला । तू का करेलऽ ? आज ले तोहार एक पइसा ना जननी सन । इहाँ खर्चा कम नइखे । हारी-बेरामी लागले रहेला । दू गो बिअहल लइकी बाड़ी सन, साल में एक-दू बेर आइये जाली सन । कपड़ा लत्ता करे के पड़ेला, नेवता-पेहान करनी-धरनी में लागेला । हमनी के बहुत दिन इंतजार कइनी । अब ले तोहरा में कवनो सुधार ना भइल । अबकी आपन परिवार अपना साथे ले जा ।" भाइयो-भउजाई इहे चाहत रहे । जब कवनो दोसर रास्ता ना लउकल त अशोक आपन चारो लइकन आ राधा के ले के कलकता चल गइलन । राधा के जान में जान आइल । बुझाइल– अन्हरिया बीत गइल । बाकिर अभी बड़हन अन्हरिया इंतजार करत रहे । अशोक रोज रात के पी के आवस ढहत-ढिमलात । जे होशे में नइखे ओकरा से का बोले के बा– सोच के राधा चुप लगा जास । सवेरे पहर कुछ बोलस-समझावस त डाँट देस– "भाषण मत दे । भाषण सुने खातिर तोरा के नइखीं ले आइल । चुपचाप रहे के बा त रह ना त जो इहाँ से ।

"कहवाँ जाई"– राधा पूछस ।

"जहाँ मन करे जो, हमार माथा खराब मत कर । बेसी बकबक करबे त सभनी के उठा के फेंक देब, मर जइबऽसन ।" राधा के जान साँसत में पड़ गइल । एही बीच में बड़की बेटी बेराम पड़ गइल । मोहल्ला के लोग भरसक मदद कइलस । डॉक्टरो बोला के देखा दिहलस । बाकिर कवनो फायदा ना भइल । तीच-चार दिन के बेरामी में बेटी गुजर गइली । राधा खूबे रोअली– कम मरल बेटी खातिर – बेसी जीअत लइकन खातिर । इहाँ त सब असहीं मर जइहन सन

www.bhojpurisahityangan.com

अन्न बिनू, दवाई बिनू । अशोक पर ना बेटी के मरला के कवनो असर रहे ना राधा के रोअला– समझावला के । घर में राशन बा कि ना एहू से बेखबर रहस । राधा टोकस त हाथ चला देस । नशेड़ी के आपन एगो अलग संसार रहेला । अशोको के रहे ।

लाचार होके राधा आपन गहना बेंचे लगली । एक बेर चानी के चेन बेंचली, एक बेर सोना के कान के फूल । डाँडा आ पायलो बिका गइल । गरजू जान के दामो कम मिले । मजबूरी से फायदा उठावल व्यापार के पहिलका शर्त ह । राधा मोहल्ला के एगो मेहरारू साथे जास आ गहना बेंच के खर्ची के सामान ले आवस । प्राण रक्षा त करहीं के रहे । अशोक इहो ना पूछस कि तोहनी के खात बाडऽ सन कि ना, पइसा कहाँ से आवत बा । बस रात में आवस नशा में डगमगात । सबेरे निकल जास ।

छठ निअराइल त राधा घरे चले खातिर दुलहा के मनावे लगली– छठ में घरे चलऽ । परब ओहीजा करब ।" आइल लोग । राधा के मन रहे छठ में कुछ आपन पइसा लगाईं । दुलहा से कहली त बिखिआ गइलन – "कहाँ से लगाईं ? रही तबे नू ? छोड़ दे छठ ।" राधा चुपा गइली– के परब-त्योहार के कुकुराह में पड़ो । इनका त ना आदमी से कवनो डर बा ना देवता-पितर से ।

घर में जवन इंतजाम भइल ओही में राधा के छठ निवह गइल । बाकिर इहो साफ हो गइल कि अब ससुरा में राधा के निबाह नइखे । पहिले खाली बेटा खराब रहलन । अब पतोहो खराब लउके लागल रहे । रुपया-पइसा चीजे अइसन ह । आदमी के लेबुल बदल जाला ।

राधा चाहत रहली ई अब कलकता मत जास, एही जा कमास, बिजली के काम जानते बाड़न, बहुत काम मिली । उनका के कलकत्ता जाये से रोके खातिर कवनो उपाय उठा ना धइली । बाकिर सब बेअसर । राधा के साँप-छुछुन्दर के गति हो गइल रहे– एक ओर कुँआ त एक ओर खाईं । कलकत्ता के हाल देखिये आइल रहली । ससुरा में बिना रुपया-पइसा देहले रहे के सवाले ना रहे । आखिरी उम्मीद रहे नइहर । साइत हमरा माई-बाबूजी के कहला के कुछ लिहाज करस । भेंट करे के बहाने नइहर के डेरा पर अइली । दामात त डाइनो के प्यारा होला । खूब खातिर भइल । दू-चार दिन रहे खातिर खुशामदो भइल । रह गइल लोग । राधा मौका देख के माई से सब हाल कहली । माई-बाबूजी के त काठ मार गइल । फेरू शुरू भइल समझावे के सिलसिला । माई अपना ढंग से, बाबूजी अपना ढंग से, भाई अपना ढंग से । एही सिलसिला में एक दिन राधा के भाई खीस में कह दिहलन– "हमरा पहिले पता रहित कि तोहार ई हाल बा त हम

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बहिन के बिआह तोहरा से ना करतीं । बात लाग गइल । खाये बइठल रहलन । ओही हाथे उठ के चल गइलन । रात के ना अइलन त चिन्ता भइल । भोरहीं राधा अपना महतारी जोरे ससुरा के डेरा पर गइली । पता चलल– ऊ त काल्हे साँझ के कलकत्ता चल गइलन । सभे गभुआइले रहे । राधा आवे लगली त केहू ना रहे के कहल, ना इहे पूछल कि कवले अइबू । राधा के बुझा गइल कि अब एह घर में जनम-मरण, शादी-बिआह भा परब-त्योहार के भले चल आईं, आ के रहे के सवाल नइखे । महतारी के साथे चुपचाप चल अइली ।

तब से नइहरे में बाड़ी । नइहरो अइसन नइखे कि तीन गो लइका लेके बइठ के खास । एके गो भाई बा– जेठ भाई टुन्ना । छोट रहलन त माई के जोरे जेकरा घरे जास कवनो-ना-कवनो चीज-बीखो जरूर उठा लेस । महतारी के ई चोरी पसन्द त ना रहे बाकिर एतना एतराजो ना रहे कि बेटा के कवनो सजाय दे सकस । बुढ़ापा के एगो लकड़ी बा– का कहीं– कइसे कहीं! धीरे-धीरे घर-घर से शिकाइत मिले लागल त महतारी बाहर के सब काम छोड़ दिहली । टुन्ना के बाबूजी पिंजड़ा बनावते रहलन । इहो बनावे लगली । बहुते कोशिश कइली कि टुन्ना के कवनो काम में लगा दीं । बाकिर टुन्ना के त बिना मेहनत के कमाई खाये के सवाद लाग गइल रहे । बड़हन भइलन त एक-दू बेर छोट-मोट हाथ लपाकी में जेल गइलन । कई गो कामो शुरू कइलन बाकिर दस दिन से बेसी कवनो काम में ना टिकस । कबो लॉटरी के टिकट बेंचस, कबो चिनिया बेदाम– कबो अंड़ा, कबो चाय । मन कहीं रमल ना । बिआह हो गइल । अब ओही अँगना में दू गो चूल्हा के चाव जागल । बाप-महतारी सोचलस– अच्छे बा । एहू बहाने त मन लगा के ठुआ से कवनो काम करिहन । महतारी एक-दू घर के हलुक काम ध लिहली । पिंजड़ा के बिक्रा कम हो गइल रहे ।

बाकिर टुन्ना के मिजाज ना बदलल । हर पखवाड़ा आपन काम बदलस । जब कुछ आमदनी होखे त अँइँठ के रहस, बात-महतारी से एकदम अलग-थलग । जब सूखा रहे त सट जास ।

राधा अपना तीनो लइकन के साथे नइहर रहे लगली त भाई-भउजाई लोग झगड़ा ले के उठ गइल– काहे रहिअन– कइसे रहिअन– खर्चा के चलाई ? राधा दू-तीन डेरा के काम पकड़ लिहली । छब्बीस जनवरी के कामे खोजत आइल रहे लोग महतारी-बेटी । राधा के माई कहली– "दीदी! राधा के मन बा रउरा इहाँ काम करे के । बाकिर इहाँ त एगो आदमी देखत बानी ।" राधा से पिछला लगाव आ अब के हाल से मन पसीज गइल रहे । कहनी– "बा त ऊहो रही ।"

राधा आवे लगली । नेह के पहिलका सोता खुल गइल । चउका में रीन्हल

www.bhojpurisahityangan.com

रसोई से ले के बाजार से आइल फल, मिठाई, टॉफी, बिस्कुट भा कतहूँ से आइल आयन-बायन परसादी सब पर राधा के हक हो गइल । उनकर बतकही-हँसी नीक लागे लागल । बाकिर आज के उदासी पचत ना रहे ।

हमहीं बात शुरू कइनी– "राधा! तोहरो लगे चिट्ठी आइल बा ?"

"ना दीदी! ..... सोचत बानी कि कुछ पइसा के जोगाड़ करके टुन्ना भइया जोरे कलकत्ता चल जाईं । का जाने का होई । जब बोखार उतरते नइखे त कवन ठेकान बा ! .....

हमरा सामने एड्स के मरीज के तस्वीर घूमे लागल । का पता ..... राधा पर नजर पड़ल त रोआँ-रोआँ काँप गइल । कइसे झोंक दिआव राधा के ? बाकिर रोकीं कइसे ? का कहीं ?

बहाना खोजनी– "पता मालूम बा ?"

"हँ दीदी, हमार छोटकी ननद कलकत्ते नू बाड़ी । उनहीं के डेरा पर बाड़न । ऊ चिट्ठी भेजले रहली ह त सास आ के कह गइली ह ।"

"तोहरा ससुरा से केहू जाई ?"

"ना दीदी, केहू ना । सास कहत रहली– हाथ खाली बा– केहू के फुरसतो नइखे ।"

हम त बहाना खोजत रहनी– " तोहरे हाथ भरल बा ? का करेलन तोहरा खातिर ? आपन हाथ-गोड़ चला के खालू आ तीन गो लइको पोसेलू । तू कलकत्ता जा के का करबू ? कहाँ से ले अइबू बहुत पइसा इलाज खातिर ? उनकर पीअल छुटबे ना करी– पता ना कवन बीमारी बा ..... ।

राधा मधिम बाकिर सधल आवाज में बोलत रहली– "हँ दीदी– पीअल त ना छूटी..... हमरो पाले ओतना पइसा नइखे..... बाकिर एक बेर देख अइतीं. ..... ऊ नाहिओं रहिअन त एक दिन उनके दुआरी पर नू खड़ा होखे के बा! लइका सेआन होइहन सन त कहाँ जइहन सन ?" हम रास्ता बतवनी– "काहे ? नइहरे रहिअ । बेटिओ के हक होला । तू त बेटा से बेसी करेलू । जब से आइल बाड़ू बाप-महतारी के सेवा में लागल बाड़ू । तोहरे कमाई पर ऊहो लोग चैन से दू गो रोटी खाता । टुन्ना का करेलन बाप-महतारी खातिर ? ना रुपया-पइसा, ना कपड़ा लता, ना अपना चुहानी के एगो रोटी । बाप-महतारी के कह के घर में से आधा अपना नाँव से लिखवा ल आ चैन से रहऽ ।" हम अन्तिम अस्त्र फेंकनी– "दुलहा के जिनगी में ससुरा में जगहा ना मिलल त मरला पर मिली !"

राधा के जबाब हाजिर रहे– "इहाँ घर में ना दी लोग दीदी । एक बेर कहले रहनी कि हमरा के एगो कोठरी दे द लोग । माई बोलहीं के रहे कि बाबूजी

www.bhojpurisahityangan.com

खिसिआ गइलन– तेंही आग देबे हमनी के ? तेंही कान्हा लगइबे ? तोरे से तरे के बा ? दुत्रा बेटा ह । घीव के लड्डू टेढो भला । मुअला पर ऊहे तारी । भले जिनगी में कुछ करो भा ना करो ।" "एह जबाब के बाद त दीदी, अब ओही दुआर के नू आस बा ।"

बाहर घंटी बाजल । केहू आइल रहे । राधा देखे गइली । लौट के एगो कार्ड हमरा हाथ में पकड़ा दिहली । नारी सशक्तिकरण वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित शहर के एगो नामी संस्था के भाषण प्रतियोगिता के कार्ड रहे । हम कबो कार्ड त कबो राधा के देखते रह गइनी ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

धाम

"धाम पर जाये खातिर भला केहू अइसन कुकरम करेला?" बाबूजी के आवाज तेज हो गइल । "ई कुकरम ह? धाम पर जाये खातिर तोहरा से रुपया माँगल कुकरम ह? ..... आ तू गठिया के पइसा धइले बाड़ ..... आ देवतो के नाँव पर चेंट खुलत नइखे .....ई कुकरम ना ह?" भरोसा के आवाज आउर तेज हो गइल – जइसे नहला पर दहला देत होखस ।

आज भोरहीं से बाप-बेटा में ठनल बा । बहसा-बहसी चलत बा । भरोसा अपना मेहरारू मनोरी के साथे बाबाधाम जाये के प्रोग्राम बनवले बाड़न । गाँव में मरद-मेहरारू मिला के बीस आदमी जात बा । सावन के महीना ह । हर साल गाँव से कुछ लोग बाबाधाम जाला । किराया पर आवती-जाती जीप ठीक कर लिआला । अभकियो इहे भइल बा । बीसो आदमी मिल के एगो जीप ठीक कइले बा । मनोरी रास्ता-पेंड़ा खातिर चिउड़ा कूट लेले बाड़ी । मीठा के पाँच गो भेलियो ध लेले बाड़ी । दू किलो के ठेकुआ बना लेले बाड़ी । गेरुआ कपड़ो-लत्ता के इंतजाम हो गइल बा । बाकिर नगदी खातिर ठकठेन लागल बा । भरोसा बाबूजी से दू हजार रुपया माँगत बाड़न । बाबूजी एक पइसा देवे के तइयार नइखन । दूनो जना के तरकस में आपन-आपन तीर बा ।

तीन दिन से बाबूजी के बोखार लागत बा । बाबूजी कई दफा चहलन कि अबकी बाबाधाम वाला प्रोग्राम छोड़ द बाकिर भरोसा आ पतोह के जोर-सोर से तइयारी करत देख के हिम्मत ना पड़ल । परसों साँझ के बोखार बहुते तेज हो गइल रहे । ओही बीच में तपेसर बाबा जजमनिका में घूमत-घामत दुअरा पर आ गइलीं । सुननी कि बेटा-पतोह बाबाधाम जात बा । देखनी कि बाबूजी बोखार में छटपटात बानी । भरोसा से कहे लगनी– "अरे भरोसा! बाबाधाम त जाये के चहबे करी । बाबा त बबे हईं – औढ़रदानी .....बम भोला । बाकिर बाप-महतारी जिन्दा देवता ह । पहिल पूजा इनके मिले के चाहीं । घर में दीया बार के मन्दिर में बारल जाला । बड़ा मेहनत आ त्याग से तोहरा के पोसले बाड़न । तोहर महतारी त तोहरा जनम के दू साल बादे शिवलोक चल गइली । तोहरे खातिर तोहर बपसी दोसर बिआह ना कइलन । बहुते अगुआ आइल लोग । सभके झरपेट देस । एके गो रट रहे– "मयभा महतारी के हाथ में आपन सोना जइसन बेटा के ना

www.bhojpurisahityangan.com

सँउपब । इनका खातिर अब दोसर के बा? कहीं तबियत आउर गड़बड़ाइल त तोहरा के लोग कहाँ खोजी? आ अबहीं त सावन में बा नू दस दिन । दू-चार दिन बादे जइह .....अबहीं बात होत रहे कि मनोरी एगो दउड़ी में चिउड़ा धइले दनदनात घर में से निकललो आ तपेसर बाबा के आगे राख के झनझनाते बोललो– "गोड़ लागत बानी बाबा! रउरा त बाभन हईं आ धाम पर जाये से मना करत बानी? ए बुढ़ऊ के का होई ? आ अब होइए जाई त का होई? गाँव में लोग बा कि ना? इनका खातिर आदमी आपन परलोक बिगाड़ी ? हम परेसाल से मन बनवले बानी जाये के । कवन ठेकान बा कि दू-चार दिन में ठीके हो जइहन । पुरान काठी के त कुछ-ना-कुछ होते रहेला । एकरा चलते केहू धरम-करम ना नू छोड़ी ....."

तपेसर बाबा के नाक में ताजा चिउड़ा के महक समाइल त बोलती बन्द हो गइल । दउरी के चिउड़ा अपना अँगवछी में बन्हनी आ जय शिव.....जय शिव. ..... कहत उठ के चल गइनी । भरोसा बुदबुदइलन– "बड़ा आइल रहलन हँ लेक्चर देवे । नीमन कइलू ह जे चिउड़ा से उनकर मुँह बान्ह देलू ह । अइसन लोग के इहे उपाय ह । बोखार बा ठीक हो जाई । पंडित सब के त सब बोखार अपना फायदे के बोखार बुझाला....." मनोरी के चेहरा पर जीत के खुशी आ तारीफ के दंभ झलमलाये लागल ।

आज बाबूजी के बोखार कम बा । बाकिर कमजोरी खूबे बुझात बा । उठत बाड़न त तलमला जात बाड़न । चलत बाड़न त गोड़ सीधा नइखे पड़त । एने मनोरी आ भरोसा के सारा दारोमदार बाबूजी के दू हजार रुपया पर टिकल बा । आज साँझ के चार बजे जीप खुल जाई बाबाधाम खातिर – पहिले सुलतानगंज फेरु देवघर । बाबूजी टस-से-मस नइखन होत रुपया के मामला में । भरोसा के हर हाल में रुपया चाहीं । अबहीं पाँच दिन पहिले ले धाम पर जाये के भरोसा-मनोरी के कवनो प्रोग्राम ना रहे । ई त अइसन सुतार पड़ल कि गाँव में एक कट्ठा के एगो कोला बिकाइल त गाँव से चाचा आ के बाबूजी के हिस्सा के दू हजार रुपया दे गइलन । भरोसा रुपया के बात सुनते धाम पर जाये के प्रोग्राम बना लिहलन । बाबूजी से ना कवनो राय विचार कइलन ना रुपया-पइसा पर कवनो चर्चा कइलन । बस, आपुस में दूनो बेकत बतिआवल लोग आ भरोसा उठलन मुखियाजी के इहाँ जा के धाम पर जायेवालन में अपनो दूनो बेकत के नाँव लिखवा लिहलन । भरोसा के अइसन बुझाइल जइसे भगवान उनहीं खातिर ई रुपया भेजलन हँ । लौट के अइलन तबे से ओ रुपया के पीछे पड़ गइलन । बाबूजी के कहनाम रहे कि धाम पर जाये के बा त आपन इंतजाम करऽ .....

www.bhojpurisahityangan.com

एह रुपया पर नजर मत राखऽ । भगवान बड़ा मौका से ई रुपया भेजले बाड़न । हमार कई गो काम अँटकल बा रुपया बिनु । एही से करब । पेंसिन के पइसा से त एक रुपया ना बचे कि कवनो उपरवार काम करीं । बाकिर भरोसा कुछ सुने के तइयार ना रहलन । कहस– "पइसा त तोहरा देवहीं के पड़ी ।" एही बात पर ठनल रहे बाप-बेटा में । मनोरी के हाव-भाव आ बोली आग में ऑक्सिजन के काम करत रहे । दूनो जना के अपना-अपना इरादा पर पूरा भरोसा रहे । बाबूजी तकिया के खोल में दू हजार के गठरी डाल के मुड़ी तर ध के निश्चिंत रहलन । एने बाबूजी के इन्कार के बादो जाये के तइयारी पर कवनो उल्टा असर ना पड़ल ।

चुहानी मनोरी जाये खातिर पूरी छानत रहली । दलान में बाप-बेटा अझुराइल रहलन । बाबूजी के आवेश आ कमजोरी के मिलल-जुलल असर से काँपत आवाज सुनात रहे– "रे पइसा माँगे के इहे कायदा ह? तें राते से कई बेर हमार गटई दबावे अइले ह .....अब हमार हाथ मरोड़ के पइसा छीनत बाड़े – ई माँगल कहाला?" भरोसा पूरा ताव में रहलन– "तोहरा अइसन आदमी से माँगे के इहे कायदा ह । सीधा अँगुरी से घीव ना निकली त टेढ़ करहीं के पड़ी ।"

बाबूजी के खीस आसमान छूअत रहे– "इहे त देखे के बानी कि तू कइसे माँग लेत बाड़े ..... आ ते मँगबे काहे ? .... आ हम देब काहें ? हम तोर कमाई के आज ले एगो पइसा जानीले का ? हम आपन पेंसिन के एक हजार तोरा के एक मुश्त दीले तब तोर मेहरारू हमरा के दू कलछुल भात दिन में आ चार गो रोटी रात में देले । हम एह उमिर में भर-भर दिन ब्लॉक में छिछिआइल कागज टाइप क के कवन-कवन धरिछन ध के दू चार रुपया कमाइले तब आपन पाकिट खरच चलाइले । तू कहिओ कहले बाड़े कि एक हजार में से हमरा के आठ सौ भा नव सौ द बकिया तू अपना पाकिट खरच खातिर राख ल ? हमरा अपना नास्ता चाय भा दवाई बीरो खातिर अलग से कमाये के पड़ेला । तब नू चार गो बिस्कुट खा के सवेरे पानी पी ले आ चार गो बिस्कुट उपरीबेरा खाइले । तोहनी के साँझिया सबेरे चाह पीअेले सन । कहियो भुलाइलो कहले बाड़े कि बाबूजी तू हूँ चाह पी ल ? हम मोड़ ले चल के जाइले आ अपना पइसा से कीन के चाह पी ले ..... ।"

भरोसा के आवाज आउर तेज होत जात रहे– "हमरा लगे गाछ बा का पइसा के ? बात साफ बा ..... इस्कूल में जेतना मिलेला ओतना तो तोहार खरचा हम ना उठा सकीं । आखिर सरकार तोहरा के पेंसिन खरचा खातिर नू देत बा ? तब खर्चा करे में जान पर काहे बीतत बा ? हम टाटा बिड़ला बानी का ? आज

www.bhojpurisahityangan.com

तोहरा पर सब लुटा दीं आ काल्ह कवनो जून लागे त हमरा के के दी ? देबऽ का तूँ ? देवता के नाँव पर त पइसा बहरते नइखे । दोसरा काम खातिर बहरी! बाकिर हमहुँ एक जिद्दी हईं– छोड़ब ना । पइसा त तोहरा देबहीं के पड़ी जब जाये के प्रोग्राम बन गइल बा त ।" बाबूजी अपना टेक पर अड़ल रहलन– "तू कान खोल के सुन ले हम देब ना एको पइसा । एह जाड़ में हमरा अपना खातिर ओढ़ना बिछवना बनवाये के बा । तोसक गल के तार-तार हो गइल बा । कम्बल एकदमे फाट गइल बा । एगो सुइटरो नइखे । पर साल जाड़ भर हम ठिठुरनी रात-रात भर जाग के कटनी । तोहरा से कहनी कि बड़ा जाड़ लागत बा त सुने के पड़ल– लागी ना, जाड़ बा त लगबे करी ..... केकरा नइखे लागत ?" एक दिन तोरा मेहरारू से डेराते डेराते कहले रहनी– एगो सुइटर रहित त तनी आराम होइत । सुनते मातर अपना बोली से भर बोरसी के आग हमरा पर डाल दिहली– "हमरा से सुइटर ना बिनाई । संयोग से हाथ में तब ऊन-काँटा ले ले रहली । लगली सफाई देबे– ई त भगवान जी खातिर बनावत बानी । ठाकुरबाड़ी में देबे के बा, जाड़ा शुरू हो गइल बा । भगवान के नाँव पर बीन देत बानी । मंदिर पर जवन पंडित जी हर साल रामायण के कथा बाँचे आइले उहाँ के त एही चढ़ावा के सुइटर मफलर से नू काम चलेला । ई त भगवान के काम बा त करहीं के बा । बाकिर दोसरा केहु खातिर हम आपन आँख ना रेतब । आँख ना रही त केहु कामे दी ?" तबे से हम दमी सधनी त आज ले मुँह ना खोलनी सुइटर खातिर । घूरा पर रात-रात भर बइठ के जाड़ काट लिहनी । बाकिर तोहनी के ई ना बुझाइल कि बाबूजी के एगो सुइटर कीन दीं । बिने में नू आँख फूटत रहे ..... आ कीने में ? बाजार में किसिम-किसिम के सउदा बिकाता । पइसा त चाहीं आ मन चाहीं । तोरा पाले हमरा खातिर ना पइसा बा ना मने बा । तब कवना हक से ..... कवना दिमाग से हमरा पइसा पर आँख गड़वले बाड़े ? धाम पर जाये के प्रोग्राम हमरा से पूछ के बनवले ? जेकरा कहला में पड़ के प्रोग्राम बनवले अब ओकरे से माँग । हम त ना देब चाहे जे हो जाव ।"

भरोसा आपे से बाहर हो गइलन– "ना देबऽ ? दी त तोहार भूत । देबऽ कइसे ना ? खेत पर खाली तोहरे हक बा कि पइसा पचा जइब ?"

जीप के हार्न सुनाइल । मनोरी हड़बड़ाइले बाहर निकल के दलान में आके कहली– "लात के देवता बात से ना नू माने । ई नीमन से बतिअवला से दीहन ? जीप दुआर पर आ गइल आ रउआ अबहीं इनका से पइसा खातिर गिड़गिड़ाते बानी ? ई त अइसन पापी बाड़न कि एह जनम में इनकर पाप ना धोआई । जे पूजा-पाठ के नाँव पर पइसा नइखे देत ओकरा से बड़हन पापी भला के होई ?"

www.bhojpurisahityangan.com

मनोरी के ललकार के असर भइल । भरोसा रुपया के गठरी खींचे खातिर तकिया के खोल में हाथ डललन । बाबूजी खटिया पर बइठले रहलन । पूरा दम लगा के तकिया पकड़ लिहलन । बाकिर जवानी के आगे खास करके जब ऊ विवेकहीन हो गइल होखे बुढ़ापा कहियो जीतल बा कि जीतित ? बचपन आ बुढ़ापा त जीतवला से जीतेला । प्यार के चलते भा आदर के चलते जवानी के शह पर जीतेला अपना देह के दम पर ना जीते । भरोसा जोर से झटका मरलन । एक हाथ से बाबूजी के ढकेललन दूसरका से तकिया खींच लिहलन रुपया के गठरी मुट्ठी में आ गइल । बाबूजी के मुँड़ी खटिया के पाटी से टकराइल - फूटल आ खून बहे लागल ।

जीप के हॉर्न बार-बार सुनात रहे । भरोसा रुपया के गठरी अपना गंजी के पाकिट में डललन । हाली-हाली दू गो झोरा मनोरी उठा लिहली । दूनो बेकत हड़बड़ाइले जीप में बइठ गइल । बोल बम के नारा लागत रहे । धाम खातिर जीप खुल गइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

काई

पूरा क्लास खूब धेयान से सुनत रहे । प्रोफेसर साहब वनस्पति विज्ञान के क्लास में 'एलगी' पढ़ावत रहलन– "एलगी को बोलचाल की हिन्दी में काई कहते हैं । तुमलोगों ने काई जरूर देखी होगी । कम-से-कम बरसात के दिनों में तो जरूर ही । खूब बिछलन होती है उसमें .....।" पता ना कब दीपा के मन क्लास से निकल के अपना नइहर के अँगना के काई के अगल-बगल चकरिआये लागल । बहुते काई रहे उहाँ । बरसात में त आउरी बढ़िया जाव । जे अँगना में उतरे जरूरे बिछलाव । काई पर सोचते-सोचते दीपा जइसे खुदे काई बन गइली– बिछलहर..... काई ।

तब दीपा दस-बारह बरिस के रहली । आठवाँ में पढ़त रहली । इस्कूल आवत-जात में गली के एगो लइका उनका के देखे, देखते रहे । उनका आउर कुछ त ना बाकिर एतना जरूर बुझाव कि एकर देखल दोसरा से अलग बा । मन उजबुजा जाव । जल्दी-जल्दी गोड़ भागे लागे । काहे ? कुछ पता ना चले । घरे भा इस्कूल पहुँचले पर साँस पड़े । पता ना काहे– इहो त आदमिये ह बाकिर भूत नीयर काहे लागेला ? कुछ समझे में ना आवे । एक दिन इस्कूल से घरे आवत रहली । अपना गली में मुड़ली त ऊ लइका नियरा आ गइल । दीपा के गोड़े ना साँसो जल्दी-जल्दी चले लागल । लइका आउर नियरा आ गइल । एगो कागज के टुकड़ा इनका ओर बढ़ा दिहलस । ई घवड़ाइले कहली– "ई का ह ?" "खुदे देख ल ।" पता ना कब, काहे, कइसे इनकर हाथ आगे बढ़ल । कागज के टुकड़ा इनका मुट्ठी में रहे । साँस रुकत रहे । मुँह सूखत रहे । जइसे-तइसे घरे पहुँचली । सीधे छत पर गइली । मुट्ठी खोल के देखली । एगो कविता रहे । आखिरी लाइन पर आँख ठहर गइल– "काल्ह भोर के पहिलकी किरनिया जगाई/तोहरा जरूरे हमार इयाद आई ।" पुर्जा ले के नीचे गइली । माई के दे दिहली । माई, बाबूजी से फुसफुसा के कुछ बतिअवली । बाबूजी पुर्जा ले के तमतमाइले बाहर निकल गइनी । दू दिन बाद पता चलल कि ऊ लइका अपना कोठरी के पंखा से फाँसी लगा के झूल के मर गइल । पुलिस के हाथे ओकरा हाथ के लिखल एगो पुर्जा मिलल । "हम जानबूझ के आत्महत्या करत बानी । सपना रहे कि डॉक्टर बनब । बाकिर मैट्रिक में दू बेर फेल भइला से बुझा गइल

www.bhojpurisahityangan.com

कि हमार सपना कबहूँ पूरा ना होई । सपना टूट गइल तब जी के का करब ? माई बाबूजी से निहोरा बा कि हो सके त हमरा के माफ करब सभे– किसुन ।" मामला शांत हो गइल । दीपा बहुत दिल ले अशांत रहली । पुलिस के भरोसा हो गइल चिट्ठी पर । दीपा के ना भइल । तब से दस साल में दस बारह गो किसुन के चेहरा गड्डमड्ड होत रह गइल इनका जेहन में । इनका तरफ से ना कवनो हाव-भाव रहे ना कवनो शह । जइसे-जइसे अपना बिछलहर भइला के चेत इनका होत गइल ओइसे ओइसे इनकर लिवास सादा आ चेहरा शांत गंभीर होत गइल । बाकिर काई त काई ह ..... बिछलहर .....

प्रोफेसर साहब के आवाज सुनात रहे "अधिकाशंत: काई जलीय होती है । जल में जन्म लेती है और उसी में तैरती रहती है । उसकी जड़ कहीं जमीन में नहीं होती । किन्तु, काई जहाँ रहती है पर्यावरण को शुद्ध करती रहती है । ऑक्सीजन देकर....." दीपा के मन नइहर के अँगना से ससुरा के अँगना में तइर गइल । नइहर में सभका से सुनले रहली– "बेटी पराया धन ह ..... बेटी ससुरे में शोभेली ..... उहे उनकर घर ह ..... धान के बीआ रोपाला कहीं, फरेला-फुलाला कहीं । बिचड़ा के दोसरा जगहा लगावे के पड़ेला फूले-फरे खातिर ।

दीपा माई-बाबूजी के दुलरी बेटी रहली । भाई के दुलरी बहिन । बाकिर केहू कबहूँ ना कहल कि ई घर दीपा के ह । भाई त अक्सरहाँ कउँचावे इनका के "तोहरा के अपना घर से निकालब तब आपन बिआह करब ।" माई पंडित-ब्राह्मण में तनी बेसिये विश्वास करस । जेकरा-सेकरा से टीपन देखावस । एके गो रट रहे– "पंडी जी तनी देखीं आपन पतरा बबुनी कब अपना घरे जइहन ।" बिआह भइल । विदाई के बेरा जब बाबूजी के गोड़ छान के रोये लगली त बाबूजी आपन रोआई रोकत कहले रहनी– "बेटी रोअ मत । तू आज अपना घरे जात बाड़ू । आज त खुशी के दिन बा । हर लइकी के बाप-महतारी एह दिन के इंतजार करेला ।" टोला-महल्ला के लोग समझवले रहे– "रोये के का बा ? इहे दस्तूर बा ।" माई हँ में हँ मिलवले रहली– "एकदम ठीक कहनी । ई त अमानत रहली ह । आज ले हम सहेज के रखले रहनी हँ । आज जेकर ह ओकरा के सँउप के उऋण हो गइनी । गंगा नहा लिहनी ।"

ससुरा में दउरा में डेग का पड़ल आपन घर भेंटा गइल । बहुत शांति बुझाइल मन में । एकइस बरिस से चलत राही के मंजिल मिलल होखे जइसे । घर में चलस त बुझाव एकर चप्पा-चप्पा हमार ह । घर आपन त घर के सब लोग आपन । बड़ा दुलार छूटे सभका खातिर । मन करे इहाँ सब कुछ अपना ढंग से

www.bhojpurisahityangan.com

करीं । घर के कोना-कोना में हमार छाप रहो– बइठका से लेके चुहानी ले । अबहीं पाँचे दिन बीतल रहे कि ननद दुअरा से दउरत आ के कहली– "भाभी-भाभी रउरा घरे से कलेवा आइल बा । राउर भइयो आइल बाड़न ।" सोफा पर आपन हाथ के बनावल नया सोफा कॉभर बिछावत रहली । हाथ थथमाइल । एकदम भकुआ के ताकते रह गइली । ननद झकझोरली– "भाभी कहाँ गुम हो गइनी ? का भइल ?" अपना के बटोर के कहली– "ना कहीं .. .... कहीं ना ।" भाई से भेंटली । बहुत देर ले रोअते रह गइली । लोर थमते ना रहे । ढरकत चल गइल देर ले ।

चउका छूये के दिने टोला भर के नेवता रहे । दीपा के पूरी रसिआव बनावे के रहे । लोइया काटत रहली । सास अइली चउका में । इनकर काटल लोइया के देख के झनकली– अपना घर के चाल इहाँ मत चलावऽ । इहाँ एतना बड़हन लोइया के पूरी ना बने । सास इनकर काटल लोइया के काट-काट के छोट कइली । दीपा लोइया के साथे-साथे कटत चल गइली ..... ससुरा के आँगन के जमीन पराया होत गइल । आकाश दूर भागत गइल ।

ओह दिन त हदे हो गइल । बचल खुचल सब भरम टूट गइल । दुलहा ऑफिस से बहुत खुश अइलन । पूछिये दिहली– "का बात ह ? बहुत खुश बानी ?

"सुनबू त तू हूँ खुश हो जइबू ।"

'त सुनाइये दीं ।'

"अइसे ना । पहिले कुछ खुशामद करऽ– चाय पिआवऽ ।"

चाय बना के ले अइली– "चलीं हो गइल खुशामद । अब कहीं ।"

दुलहा एह अन्दाज से कहलन जइसे कवनो तोहफा देत होखस– "अपना घरे चले के मन बा त चलऽ ।" इनका पर जइसे गाज गिरल– अपना घरे ? कहाँ ?

"जमशेदपुर । आउर कहाँ ।"

दुलहा त चाय पीये के सुर में कहत जात रहलन– "हमरा ऑफिस के एगो टूर प्रोग्राम रहल ह जमशेदपुर में । जाये खातिर त बहुत लोग ललचाइल रहल ह । बाकिर हम तोहरा के निहाल करे खातिर ई प्रोग्राम झटक लेहनी हँ । एक पंथ दू काज हो जाई । हमार टूर बिल बनी आ तू अपना घरे घूम लेबू ।"

"आ रउरा?"

हम त एक दिन बादे अपना घरे लौट आयब । तोहार मन करी त साथे लौट अइह आ ना त कुछ दिन रह लीहऽ उहाँ । बाकिर ढेर दिन ना ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"काहे?"

"तोहरा बिना ई घर चली? तू हीं त ऑक्सिजन बाड़ू ।"

दीपा ई कहत उहाँ से भगली– "अरे....रे.....रे.....चूल्हा पर दूध उफनात होई ।"

चउका में जा के एक गिलास पानी पिअली । दूध उफनत त ना रहे बाकिर ओहू में एक गिलास पानी डाल दिहली । नल खोल के चिरुये-चिरुये पानी ले ले के खूबे मुँह धोअली । एतना भींज गइली जइसे बरसात में बिना खोंता के चिरई ।

प्रोफेसर साहब कहत रहलन– "आधुनिक विज्ञान 'एलजी' को खाद्य पदार्थ बनाने की दिशा में शोधरत है । ब्लू-ग्रीन एलजी तो पहले से ही खाद्य के रूप में इस्तेमाल होती रही है .....।"

दीपा के आँख के सोझा खाद्य पदार्थ के रूप में इस्तेमाल होत कई गो तसवीर उभरल-बरल-बुताइल । इस्तेमाल त पहिलहुँ रहे । बाकिर कम । अब विज्ञान के ताकत से इस्तेमाल आउर बढ़िया जाई । विज्ञान एकरा के उपलब्धि मानी । बाकिर काई ? दीपा आँख बन्द कर लिहली । अब कुछ आउर देखे के हिम्मत ना रहे । प्रोफेसर साहब के कड़क आवाज कान में पड़ल– "दीपा मैं तुम्हीं से कह रहा हूँ । यहाँ पढ़ने आती हो कि सोने?"

दीपा हड़बड़ा के खड़ा हो गइली ।

प्रोफेसर साहब गरजलन– "मैं अभी क्या पढ़ा रहा था?"

"जी-जी" दीपा हकलात रहली ।

"जी-जी नहीं । बताओ क्या पढ़ा रहा था ?"

"जी.....काई.....बिछलहर.....बिना जमीन के .....खाद्य पदार्थ .....।"

पूरा क्लास ठहाका मार के हँसत रहे । घंटी बाज गइल । प्रोफेसर साहब रजिस्टर उठा के जात-जात बुदबुदात रहलन– "अइसन दिमाग होखे त साइंस ना पढ़े के चाहीं ।"

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्थान

इन्द्रपुरी, पटना - 800 024

के प्रकाशन

1. भोर हो गइल/कविता संग्रह/पाण्डेय कपिल/1971; 1977
2. पुरइन/कविता संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/1971
3. जवानी के जगाइले/ कविता संग्रह/सिपाही सिंह श्रीमन्त/1973; 1978
4. ई हरनाकुस मन/कविता संग्रह/पाण्डेय सुरेन्द्र/1975; 1985
5. एह देस में/कहानी संग्रह/कृष्णानन्द कृष्ण/1975
6. भोजपुरी कहानी : विकास आ परम्परा/आलोचना/कृष्णानन्द कृष्ण/1976
7. मीत मिलन/गीत रूपक/रामवचन शास्त्री 'अँजोर'/1976
8. हम कुन्ती ना हँई/कहानी संग्रह/पी॰ चन्द्रविनोद/1977
9. फुलसुंघी/उपन्यास/पाण्डेय कपिल/1977; 1985; 2001
10. कलमिया नाहीं बस में/व्यक्तिगत निबन्ध संग्रह/सत्यवादी छपरहिया/1977
11. मन के मौज/ललित निबन्ध संग्रह/विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव/1977
12. रेखा पर रेखा/रेखाचित्र संग्रह/डॉ॰ लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी/1977
13. परशुराम/उपन्यास/अरुण मोहन भारवि/1977
14. माटी के दीया/कविता संग्रह/अनिल ओझा 'नीरद'/1977
15. सनेहिया/कविता संग्रह/रघुनाथ चौबे/1977
16. दरवा/कहानी संग्रह/डॉ॰ वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय/1977
17. सतवन्ती/कहानी संग्रह/रामनाथ पाण्डेय/1977
18. प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के/कहानी संकलन/स॰ सिपाही सिंह श्रीमन्त : कृष्णानन्द कृष्ण/1977
19. बाकिर/कविता संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/1978
20. भइँसि के दूध/कहानी संग्रह/डॉ॰ मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा)/1978
21. बतकूचन/व्यक्तिगत निबन्ध संग्रह/महेश्वराचार्य/1978
22. सीता स्वयंवर/खण्ड काव्य/रामवृक्ष राय 'विधुर'/1978
23. एगो राजा रहले/लोककथा संकलन/रामदुलारी/1980
24. त्रिपुटी/आलोचना/महेश्वराचार्य/1978

www.bhojpurisahityangan.com

25. घर टोला गाँव/उपन्यास/पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह/1979; 2002
26. टटात परछाई/कविता संग्रह/डॉ॰ विश्वरंजन/1982
27. बेलवन्ती रानी/लोककथा संकलन/सुशीला पाण्डेय/1982
28. कुछ खास किसिम के आवाज/कविता संग्रह/शशिभूषण लाल/1983
29. खरोंच/कहानी संग्रह/पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह/1984
30. सत्यवादी के पाती/पत्र संग्रह/सत्यवादी छपरहिया/1984
31. लहलह पात/कविता संग्रह/डॉ॰ लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी/1985
32. आखिरी गीत/ निबंध संग्रह/हरिशंकर वर्मा/1986
33. अछूत/उपन्यास/सूर्यदेव पाठक 'पराग'/1986
34. चिन्तन कुसुम/निबंध संग्रह/शैलजा कुमारी श्रीवास्तव/1989
35. रावन अबहीं मरल नइखे/कहानी संग्रह/कृष्णानन्द कृष्ण/1988
36. केरा के टुकी टुकी पतई/कहानी संग्रह/पी॰ चन्द्रविनोद/1990
37. एक कड़ी गीत के/कविता संग्रह/आनन्द सन्धिदूत/1992
38. गंगा यमुना सरस्वती/कहानी-निबंध-संस्मरण/डॉ॰ विवेकी राय/1992
39. अनहोनी/नाटक/जगदीश सहाय 'असीम'/1993
40. सगुनी बाछा/लघु नाटिका संग्रह/शारदा त्रिपाठी/1993
41. इहे कहानी बा/कविता संग्रह/सत्यनारायण सिंह/1993
42. नदी के किनारा/कविता संग्रह/सत्यनारायण सिंह/1993
43. नेवान/हाइकु संग्रह/सुनील कुमार पाठक/1993
44. वसीयतनामा/कहानी संग्रह/भोला प्रसाद 'आग्नेय'/1994
45. जंजीर/नाटक/सूर्यदेव पाठक 'पराग'/1994
46. कह ना सकली/गजल संग्रह/पाण्डेय कपिल/1995
47. सुबहिता/कहानी संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/1995
48. राम झरोखा बइठि के/निबंध फीचर संग्रह/डॉ॰ विवेकी राय/1994
49. गीत जे गूँजत रहल/कविता संग्रह/प्रो॰ उमाकान्त वर्मा/1994
50. मास्टर गनेसी राम/नाटक/नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक'/1995
51. सुपर्णा कथा/कविता संग्रह/डॉ॰ शारदा पाण्डेय/1996
52. हाथी के दाँत/नाटक/सुरेश कांटक/1996

www.bhojpurisahityangan.com

53. हम दहेज ना लेब/कहानी संग्रह/डॉ॰ शालिग्राम शुक्ल 'नीर'/1996
54. के कही साँच/कहानी संग्रह/अमिय नाथ चटर्जी/1997
55. नइया बीच भँवर में/निबंध संग्रह/करुणा निधान केशव/1997
56. केतना बेर/गीत संग्रह/पी॰ चन्द्रविनोद/1997
57. का कही/कविता संग्रह/शारदानन्द प्रसाद/1997
58. जीये मरे के बेवसी/कहानी संग्रह/पाण्डेय सुरेन्द्र/1998
59. केकरा खातिर/कहानी संग्रह/अमिय नाथ चटर्जी/1998
60. सोनहुला सफर/यात्रावृत/भागवान सिंह 'भास्कर'/1998
61. अमंगलहारी/उपन्यास/डॉ॰ विवेकी राय/1998
62. कमली/उपन्यास/नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक'/1998
63. गाँव के भीतर गाँव/कहानी संग्रह/डॉ॰ अशोक द्विवेदी/1998
64. बसन्ती बयार/कहानी संग्रह/डॉ॰ कपिलदेव सिंह/1998
65. भाई के धन/नाटक/सुरेश कांटक/1999
66. अहं बहुरुपिया/निबंध संग्रह/हरिशंकर वर्मा/1999
67. लोक संस्कृति : एगो झाँकी/डॉ॰ राजेश्वरी शांडिल्य/1999
68. कुरल कवितावली/तिरुवल्लुवर/अनु॰ आनन्द सन्धिदूत/2000
69. गंगा जस पावन/कविता-कहानी-लघुकथा/डॉ॰ विजयानन्द/2000
70. आवऽ लवटि चलीं जा/उपन्यास-कहानी/डॉ॰ अशोक द्विवेदी/2000
71. भोजपुरी लोकगीतन में गीतितत्त्व/डॉ॰ राजेश्वरी शांडिल्य/2001
72. सुरता के पथार/आत्म-संस्मरण/शारदानन्द प्रसाद/2002
73. लाइची/कहानी-संग्रह/डॉ॰ उषा वर्मा/2002

www.bhojpurisahityangan.com